

इच्छा पूरक सिद्धिपां



DESIGNER



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

अनुशासनिका

(प्रस्ताव अध्ययन)

1. प्रारंभिकावस्था 7
2. साधक और दृष्टि 6
3. गमोऽस तत्त्वाणि 11
4. लघुसंक्षेपमंत्र सिद्धि 22
5. अवाक्यमंत्र सिद्धि 23
6. यात्रापूर्वकामण मंत्र सिद्धि 24
7. अवाक्य मंत्र सिद्धि 25
8. त्वरितहठमंत्र सिद्धि 26
9. उद्दशाशराज्यम् मंत्र सिद्धि 27
10. उद्दशाश्रीलक्ष्मी लक्ष्मी 28
11. श्रीपूर्णमंत्र साधना 29
12. दत्तानेयमंत्र सिद्धि 31
13. श्रीलक्ष्मीमंत्र सिद्धि
(महालक्ष्मी, एकाशरात्रलक्ष्मीमंत्र साधना, चतुरपाखरतालक्ष्मीमंत्र साधना,
द्वादशाश्रात्रलक्ष्मीमंत्र साधना, सिद्धलक्ष्मी, ज्येष्ठलक्ष्मी, चतुर्पालक्ष्मी)
14. श्रीकालीमंत्र सिद्धि 36

15. श्रीसरस्वतीमंत्र सिद्धि

(सरस्वतीएकाशमन्त्र साधना, वाणीदेवीमन्त्र साधना, विष्णुदेवीमन्त्र साधना, नीलसरस्वतीमन्त्र साधना)

34

16. दुर्गाक्षवार्णमंत्र सिद्धि

(सर्वोदयसिद्धि का मंत्र, स्तंभनमंत्र सिद्धि, उच्चाटनमंत्र सिद्धि, विदेष्यमन्त्र सिद्धि, भाण्यमन्त्र सिद्धि, वशीकरणमंत्र सिद्धि, मोहनमंत्र सिद्धि)

41

17. देवसरलों की पंच सिद्धियाँ

(पञ्चाक्षरीश्वरमंत्र साधना, अष्टाक्षरीश्वरमंत्र साधना, लक्ष्मीनारायणमंत्र साधना, यथापतिमंत्र साधना, नृसिंहमंत्र साधना, बहुगंगमंत्र साधना, बुद्धमंत्र साधना, वाराहमंत्र साधना)

46

(द्वसरा अध्याय)

52

1. देवी पैरवी की सिद्धियाँ

(भैरवी-सिद्धि के मन्त्र से पहले की प्रथिया, मानसोब्बरपूजा मंत्र, नित्या भैरवी, सकलसिद्धा भैरवी, कामेश्वरी भैरवी, नवकृता भैरवी, कोलेश भैरवी, भयचित्तसिद्धी भैरवी)

63

2. सिद्धि मंत्र विष्णुवाला भैरवी के

64

3. रुद्र भैरवी सिद्धि

65

4. चिष्ठुर भैरवी सिद्धि

66

5. सप्तप्रदा भैरवी सिद्धि

69

6. षट्कृता भैरवी सिद्धि

70

7. षुक्रेश्वरी भैरवी सिद्धि

71

8. षष्ठ्यकृता भैरवी सिद्धि

72

9. कैलन्य भैरवी सिद्धि

73

अचुक्रमाणिका

(पहला अध्याय)

1. ग्रन्थिकावस्था	7
2. सापक की शृणा	9
3. गणेश साधना (याकारायकरुदं मंत्र, चक्रतुंडाय मंत्र, नवार्ण मंत्र, शक्रिका-विनायक मंत्र, दत्त-शूल्य प्रदाता गणेश मंत्र, तडमी-विनायक मंत्र, लिदि विनायक मंत्र, बैतोक्यमोहनकर गणेश मंत्र, हाइदा गणेश मंत्र)	14
4. लम्पूल्युनयमंत्र लिदि	22
5. अंषषकमंत्र लिदि	23
6. पहामृत्युनयमंत्र लिदि	24
7. रुद्रमंत्र लिदि	25
8. लौरिकलदमंत्र लिदि	26
9. उत्तरायाकरित्यु पंच साधना	27
10. दशाहरामपंत्र साधना	28
11. शीकृष्णमंत्र साधना	29
12. दत्तावेष्यमंत्र लिदि	31
13. श्रीकर्त्तमीमंत्र लिदि (पहलझी, एकादशरत्तमीमंत्र साधना, चतुरादशरत्तमीमंत्र साधना, द्वादशाक्षरत्तमीमंत्र साधना, सिद्धलझी, ज्येष्ठालझी, बद्धालझी)	31
14. श्रीकलीमंत्र लिदि	36

15. धौपरात्मकीमन्त्र सिद्धि

(सरलतीपकाकाशमन्त्र साधना, वाणीदेवीमन्त्र साधना, विद्यादेवीमन्त्र साधना, नीलसरसवतीमन्त्र साधना)

38

16. दुर्गानवार्णमन्त्र सिद्धि

(सर्वार्थसिद्धि का मंत्र, स्तंषणमन्त्र सिद्धि, उच्चाटनमन्त्र सिद्धि, विद्वेषणमन्त्र सिद्धि, पारणमन्त्र सिद्धि, वशीकरणमन्त्र सिद्धि, पोहनमन्त्र सिद्धि)

41

17. देवत्वरूपों की मंत्र सिद्धियाँ

(पंचाक्षरीधिवर्मन साधना, अष्टाखारीश्वरमन्त्र साधना, लक्ष्मीनारायणमन्त्र साधना, यशस्विमन्त्र साधना, त्रिसंहस्रमन्त्र साधना, द्वारणमन्त्र साधना, बद्रकमन्त्र साधना, वाराहमन्त्र साधना)

46

(दूसरा अध्याय)

1. देवी भैरवी की सिद्धियाँ

(भैरवो-सिद्धि के मंत्र से पहले की ग्रन्थिया, पानसोवरपूजा मंत्र, नित्या भैरवी, सकलसिद्धा भैरवी, कामेवरी भैरवी, नववृत्ता भैरवी, कोलेश भैरवी, भवयेव्यसिनी भैरवी)

52

2. सिद्धि मन्त्र निपुत्रणाला भैरवी के

63

3. सद भैरवी सिद्धि

64

4. निष्पुर भैरवी सिद्धि

66

5. संपत्क्रदा भैरवी सिद्धि

69

6. घटकृता भैरवी सिद्धि

70

7. घुणवत्ती भैरवी सिद्धि

71

8. घण्टकृता भैरवी सिद्धि

72

9. वैतन्य भैरवी सिद्धि

73

10. अन्नपूरा भैरवी सिद्धि

74

11. विभिन्न देवी अवतारों की सिद्धियाँ

79

(मातृगी देवी की सिद्धि, घोड़धी देवी की सिद्धि, पृथ्वी देवी की सिद्धि, स्वप्नेश्वरी देवी की सिद्धि, रेणुकाशबरी देवी की सिद्धि, मणिकर्णिका देवी की सिद्धि, बाताली छिन्नमस्ता देवी की सिद्धि, गणपितामही देवी की सिद्धि, गूमावती देवी की सिद्धि, कण्णपिशाचनी देवी की सिद्धि, बगलामुखी देवी की सिद्धि)

* (तीसरा अध्याय)

1. सिद्धियों का मायाजाल	96
2. प्रेत सिद्धि	96
3. पिशाच सिद्धि	98
4. शशान सिद्धि	98
5. बेताल सिद्धि	99
6. विरहना पीर की सिद्धि	99
7. मुहम्मदा पीर की सिद्धि	100
8. वशीकरण मंत्र सिद्धि	101
9. प्रेत-निवारण मंत्र सिद्धि	102
10. मंत्र संग्रह (कार्य-सिद्धि मंत्र, सर्व-संकट निवारक मंत्र)	104
11. तापसिक शशान सिद्धि	106
12. नेत्र ज्योति की पाठ सिद्धि	108
13. निधिदर्भन सिद्धि	110

प्रारंभिकावस्था

प्रत्येक देवी-देवता ही सिद्धि, साधना अथवा उपासना में, प्रत्येक कामना की पूर्ति हेतु की जाने वाली प्रक्रियाओं में तथा अन्य आध्यात्मिक कृतयों में वस्तुगत चेद का बहुत अधिक महत्व है। किस देवी या देवता को कौन-सी वस्तु अनुकूल पड़ती है, तथा किस साधना में कौन-सा पदार्थ लाभकारी है; प्रत्येक साधक को यह बातें अच्छी तरह जान और समझ लेनी चाहिए। प्रायः सभी प्रकार की साधनाओं में अक्षत, चंदन, धूप, दीपक, माला, आसन और नैवेद्य का प्रयोग होता है। साधनाकाल वे ये सभी वस्तुएं पास में होनी चाहिए। इनका क्रम, प्रभाव और प्रयोग निम्न रूप-से समझ लेना चाहिए—

1. जल
2. अक्षत
3. चंदन
4. पुष्प (फूल)
5. धूप
6. दीप (दीपक)
7. हवन
8. आसन
9. माला
10. स्थान
11. दिशा
12. समय

जल— प्रत्येक साधना अथवा पूजा आदि में गंगाजल को ही सर्वाधिक महत्व दिया जाता है, अतः सदैव गंगाजल का ही प्रयोग करना चाहिए। गंगाजल शुद्ध और पवित्र होता है। किसी भी पात्र में भर कर रखा गया गंगाजल सहस्रों वर्ष भी खुराक नहीं होता।

अक्षत— धान के चावल को ही अक्षत कहती हैं। पूजा आदि में सदैव धान के चावल ही प्रयुक्त होते हैं। ये पवित्रता के प्रतीक हैं। प्रयोग्य चावल साफ और सातुरत होने चाहिए।

चंदन— ये दो प्रकार के होते हैं, ताल और सफेद। साधनाकाल में जहाँ जिस

प्रकार के चंदन का निर्देश हो, वो ही प्रयुक्त किया जाना चाहिए। मुख्यतः चंदन का प्रयोग तिलक के रूप में किया जाता है।

पुष्प (फूल)— साधना में जिस पुष्प का प्रयोग करना बताया जाए, केवल उसी पुष्प का प्रयोग करना चाहिए। सभी प्रकार के पुष्प सुगंध के साथ-साथ वानस्पतिक पुष्पाव की सूचि भी करते हैं। पुष्प सदैव ताजे ही प्रयुक्त किये जाने चाहिए।

पूष्प— इसका धुआं आसपास के बतावरण को प्रदूषण-मुक्त कर, सुगंध से घर देता है। देवी-देवताओं को इसकी सुगंध प्रिय होती है।

दीप (दीपक)— साधना-स्थल को प्रकाशित करने के लिए इसका प्रयोग किया जाता है।

भेवेय— इसका अर्थ है, भोग लगाना; अर्थात् अपने इष्ट देवी या देवता को भोग लगाना या भोजन कराना! इसके लिए बताओ, मिश्री और सूखे भेवे प्रयुक्त होते हैं।

हवन— आम की लकड़ी और सामग्री इसमें प्रयुक्त होती है। सामग्री में पहले थोड़ा देसी धी भी मिलाना चाहिए।

आसन— आसन उसे कहते हैं, जिस पर बैठ कर साधना की जाती है। साधनाकाल में जिस प्रकार के आसन का निर्देश हो, उसी आसन का प्रयोग करना चाहिए।

माला— 108 दानों की माला को ही श्वेष बाना गया है। देवी-देवताओं की साधना में चंदन, रुद्राक्ष, कमलगटा, कुशमूल (कुश नामक घास की जड़ की गाठ) अथवा तुलसी की माला का प्रयोग किया जाता है। यह साधना-भेद पर निर्भर कि किस उद्देश्य की पूर्ति के लिए किस वस्तु की माला का प्रयोग किया जाए।

स्थान— जहाँ स्वच्छता और शुद्धता पूर्वक साधना की जा सके।

दिशा— साधक साधनाकाल में किस ओर मुङ्ह करके बैठें? इसे निम्न रूप-से समझना चाहिए—

धनागम के लिए

पश्चिम दिशा

स्वास्थ्य-लाभ,

उत्तर दिशा

शाति और पुष्टि के लिए

पूरब दिशा

वशीकरण के लिए

दक्षिण दिशा

मारण-विद्वेषण व

उच्चाटन के लिए

विशेष- सामान्य रूप-से सात्त्विक साधना के लिए पूरब दिशा को ही बोल माना गया है, तथा ईनिक-जप के लिए पूरब या उत्तर की ओर पुष्ट करके बैठना ही श्रेष्ठतम् रहता है।

समय- प्रधोन्य हेतु समय का कोई बधन नहीं है। किन्तु यदि साधक किसी विशेष उद्देश्य से साधना प्राप्त करने जा रहा हो, तो उसे शुभ-मुहूर्त का विचार अवश्य कर लेना चाहिए। ज्योतिष के अनुसार साधना प्राप्त करते समय तिथि, वार, नक्षत्र और योग की अनुकूलता का विचार कर लेने से साधना में व्यवधान की आशंका नहीं रहती। इसके लिए किसी प्रकांड पंडित की सेवाएं ले लेनी चाहिए। विस दिन गुरुवार और पुष्य नक्षत्र हो, साधना करना सबसे उपयुक्त समय है। इस समय का इतना अधिक प्रभाव रहता है कि उस दिन तिथि, लग्न और योग चाहे जैसे हों, वो सब नगण्य हो जाते हैं।

साधक की सुरक्षा

साधनाकाल में आसुरी प्रवृत्तियाँ बहुधा उत्पात करने लगती हैं। प्रत्येक साधक को उनके प्रभाव से अधूरा ही रहना चाहिए और इस समय में अपने चित को बहुत ज्ञात, स्थिर, इष्ट देवी/देवता की ओर ही लगाए रखना चाहिए।

साधक के आसपास कुता, बिल्ली, कोढ़ी, पापी, नासिक, हिंसक, शत्रु, शूद, गिर्ध, चील, सियार, गद्दा, उल्लू, विद्वा, विकलांग आदि भी नहीं होना चाहिए, यरना अनर्थ हो जाता है। साथ ही साधनाकाल में हुई किसी भी अनुषृति का वर्णन किसी के भी समक्ष नहीं करना चाहिए।

अलौकिक प्रकाश, आकर्षिक सुगंध, शीत, सिरहन, ऊज्ज्वल, स्पश-बोध, स्वर, नाद, सदिश, प्रेरणा, रोमांच, प्रय, श्रीधित्य आदि से मन को विचलित नहीं होने देना चाहिए।

चूकि प्रत्येक साधना में मंत्र-जप ही सर्वोपरि होता है, अतः मंत्र का उच्चारण पूर्णतया शुद्ध होना चाहिए। अविचल शृद्धा, अदूर निष्ठा, दृढ़ निश्चय, पूर्ण तंत्रयता और इष्ट देवी/देवता की प्रतिक्षण प्रत्यक्षानुभूति का विश्यास रखते हुए, अविचलित निश्चिक मन से मंत्र-जप करना चाहिए।

साधना अश्वा सिद्धि के लिए मंत्र-जप से पूर्व जप-स्थान को मंत्र द्वारा सुरक्षित यानी बंधित कर लिया जाए, तो बाहरी आसुरी-शक्तियाँ बाधक नहीं बनने पाती हैं। नीचे हम कुछ देखताओं के मंत्र हैं रहे हैं, जो बंधन-मंत्र कहलाते हैं। इन मंत्र हैं।

को पढ़ते हुए, अपने चारों ओर जल या भस्म द्वारा रेखा खींच लेनी चाहिए। इसमें
जो भी बाधा डालने वाली अदृश्य शक्तियाँ हैं, वो रेखा से बाहर-ही-बाहर गेंगी।

उपास्य देवता

1. श्री गणेशजी

बंधन-मंत्र

ओम् गं गं गं ओम्।

2. विष्णुजी

ओम् श्री।

3. दुर्गा

की ओम् ज्ञी।

4. लक्ष्मी

ओम् श्री श्री श्री ओम्।

5. श्रिपुरुसुदर्शी

श्री ओम् ओम् श्री।

6. बगलमुखी

ऐं हीं हीं ऐं।

7. घनदा

ओम् श्री घं श्री ओम्।

8. तारा

ओम् श्री ओम्।

9. मातंगी

ओम् ऐं ओम्।

10. सब देवताओं के लिए

ओम् श्री।

आगे भी हम कुछ मंत्र दे रहे हैं, जिन सभी को याद कर बोल देने से ही कम
नहीं चलता, उन्हें सिद्ध भी करना पड़ता है, तभी उनका प्रभाव देखने को मिलता
है। यदि समय रहते शरीर की सुरक्षा का मंत्र पढ़कर पहले से ही अपने शरीर को
सुरक्षित कर लिया जाए, तो फिर किसी भी बाहरी (अशरीरी) शक्ति का मय नहीं
रहता। हम शरीर की सुरक्षा के मंत्र और उनको सिद्ध करने के उपाय निम्न रूप
से बतला रहे हैं। इन मंत्रों की सिद्धि प्राप्त करने के बाद ही आगे किसी साधन
को शुरू करने का प्रयास करना चाहिए।

उत्तर बांधों, दक्षिण बांधों,
बांधों मरी मसानो
डायन, भूत के गुण बांधों,
बांधों कुल परिवास
नाटक बांधों, घाटक बांधों,
बांधों भुइयां बैताल
नजर गुजर देह बांधों,
राम दुहाई फेरों।

किसी पुष्य नवम या पर्वताल में इस मंत्र को ग्यारह हजार की संख्या में जरूर
लेने से ही यह सिद्ध हो जाता है।

मंत्र सिद्ध से जाने के पश्चात् जब शरीर की सुरक्षा की आवश्यकता पड़े, तो तिन बार वह नींया म्यारह बार उच्चारण करके अपनी शिखा में गोठ लगा लेनी चाहिए। तथा वह हाथ का हयेली पर मंत्रोच्चारण के साथ नींया म्यारह बार (जिसनी बार मंत्र-जप किया जाए) फूँक भारकर उस हयेली को पूरे शरीर पर फिरा देनी चाहिए। यह मंत्र शरीर के सुरक्षा क्षेत्र का कार्य करता है।

जल बांधों, वह बांधों,
बांधों अपनी काया,
सात सो योगिनी बांधों,
बांधों जगत् की माया
दुहाई कामरु कमला योगिनी की
दुहाई गौरा पार्वती की
दुहाई वीर मसान की।

उपरोक्त मंत्र को सिद्ध करने की विधि भी पहले मंत्र की विधि के अनुसार ही होगी।

ओम् काली महाकाली,
इङ् द की बेटी ब्रह्मा की साली
उङ् द बेटी पीपल की डाली,
दोनों हाथ बजावे ताली
बहां जाय बज की ताली,
बहां ना आवे दुष्मन हाली
दुहाई कामरु कमला नैना योगिनी की
दुहाई इश्वर महादेव गौरा पार्वती की
दुहाई वीर मसान की।

इस मंत्र को आश्विन के दशहोरे के दिन दस हजार जप करके सिद्ध करा जाए।

जप करते समय अग्नि में गुणल की धूप देते रहें।

जिस दिन मंत्र सिद्ध करना हो, उस दिन वह रखना चाहिए। तथा साधक आसन के गम्भूर (आसन पूर्वी अध्यवा उत्तराधिमूख होना चाहिए) आटे से एक चीतोर साला लीच दें और उसके बीच में एक लाइन सिंदूर की छींच दें। बीच में कलजा स्थापित करके उसके दक्षिण ओर जी से भर दें तथा उस पर दीपक की स्थापना करें। इस प्रकार मंत्र-जप करते रहें तथा पी, गुणल और कम्भूर की धूपी देते जाएं। इस प्रकार

दोष की तरफ हो, तो इससे पुकार पाने के लिए पत्र-कथ के पूर्व ही, निम्न चंचल के द्वारा पुल-शोधन कर लेना चाहिए। पुल-शोधन याने पत्र को, पुल-भेज कर जब करने से पहर के बार जपने पात्र से उच्चारणदोष नहीं होता। मुख-शोधन के

मुख यह है—

1. गोमेश
 2. विष्णु
 3. दुर्गा
 4. लक्ष्मी
 5. शिष्मासुदर्शी
 6. कामलामुखी
 7. धनदा
 8. तारा
 9. मातृगी
- इस प्रकार पुल-शोधन कर लेने से साधना का पूर्ण काल साधन नहीं सहज की प्राप्त हो जाता है।

ओम् गं।

ओम् हं।

हं हं हं।

बी।

ओम्।

हं हं हं।

बी।

ओम्।

हं हं हं।

बी।

ओम्।

हं हं हं।

बी।

ऐ ओम् ऐ !

ऐ ओम् ऐ !

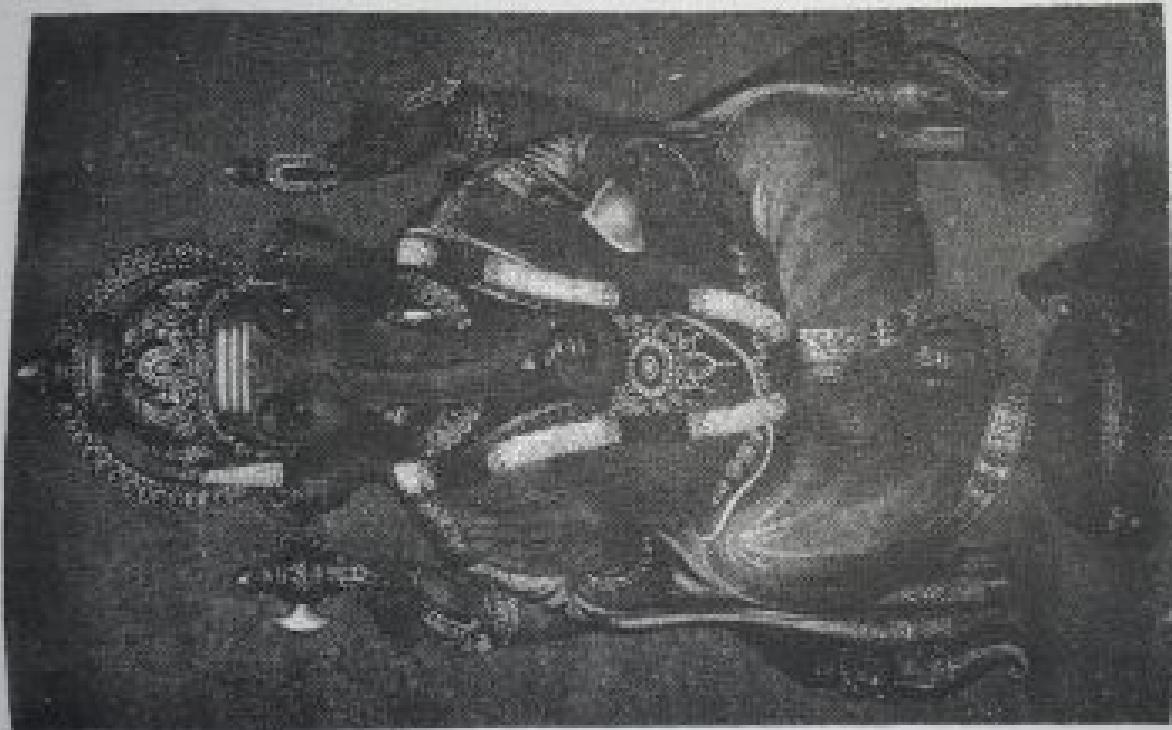
बी।

ऐ ओम् ऐ !

गणेश साधना

भारतीय-संस्कृति में गणेशजी एकमात्र ऐसे देवता है, जो सर्वाश्रम पूजे जाते हैं। उनके 'गणपति' और 'गणनाथ' की पदवी भी प्राप्त हैं। गणेशजी को आव्याहिक्त जाति के प्रत्येक दोषमें भी आस्था प्राप्त है। ताँचक-संप्रदाय में भी गणेशजी ही सर्वोपरि है। तंत्र, भेद या धर्म, इन तीनों में से किसी दो एक की लिखित प्राप्त कर लेने से गणेशजी की कृपा प्राप्त हो जाती है।

गणेशजी की कृपा-दृष्टि प्राप्त कर लेने के बाद साधक समस्त आपदाओं के पुका होकर, सुखमय जीवन का अधिकारी हो जाता है। विद्या की प्रशिक्षा, ज्ञान-काम, विजन-नाश, संकट-निवारण, व्यवसाय में उन्नति, आर्थिक सुरक्षा, पूल-भेजतारि (अशरीरी हवाओं) के उपदेशों से पुकित तथा आर्यात्मिक शोन्ति के लिए गणेशजी की साधना बहुत ही लाभप्रद और लवीत प्रभावी लिख लेनी है। विद्यार्थी, शिल्पकार, व्यवसायी, गृहस्थ, पुकारी, ताँचिक और योगी व साधु-संत वर्गों में गणेशजी की समाझदार हैं। सब अपने-अपने कार्य-साधना के प्रारंभ में उनकी साधना करते हैं।



कोई यो सधारक अद्या भव से और सच्चे मन से, पूरा समर्पित होकर गणेशजी को समर्पित न हो। कोई कारण नहीं कि हमें हमारी कृपा-मृपाव की अनुभूति न हो। गणेशजी की पूजा में साल बरत (बिना किले हुए), साल बंदन, पुष्प, शुभ, दीप हों। अनेकों (विषन के लहड़) को अनिवार्य माना जाये है, तथा संव-अप के लिए सूरा, और केवल (विषन के लहड़) को अनिवार्य माना जाया है, तथा साल बंदन या रटाहा की माला को क्षेत्र कहा जाया है। किन्तु की असमर्थनात्मक हारि साल बंदन या रटाहा की माला को क्षेत्र कहा जाया है। किन्तु की असमर्थनात्मक हारि कोई साधक ये उपादान न जुटा पाए, तो यो गणेश-ग्रन्थम् अद्या निर को स्वाप्त

का और केवल सिद्धू व धूप-दीप लेकर ही साधना-कार्य में लिप्त हो सकता है।

किन्तु प्रतिबंध यह है कि वो परम तंत्र-भाव से, असुंठ शब्दों के साथ साधना करे। साधक को भिलने वाली सिद्धि सफलता का एकमात्र आधार उसकी आत्मा और भक्ति-भावना है। किसी भी माला की गणेश-चतुर्थी के दिन से उनकी साधना प्रारंभ की जा सकती है।

किसी एकात्, शांत और सामान्य रूप-से वायु-प्रवर्गज्ञ युक्त स्थान की तीप-योजकर स्वच्छ और पवित्र कर लेना चाहिए। चढ़न (लाल), अक्षत, पुष्प, धूप, दीप, आसन, माला और नैवेद्य आदि सभी वस्तुएं यहाँ से संजोकर रख लेनी चाहिए, वयोंकि साधनाकाल में उठने से मनोनियह पर आधात पड़ता है तथा भूल-झूम की आशंका रहती है; साथ ही आसुरी-झक्कियों द्वारा किसी बटना को भी जन्म दिया जा सकता है। साधक को पूरब की ओर मुख करके कुश अथवा ऊनी आसन पर बैठना चाहिए।

साधनारंभ में तर्वप्रथम पूजा के पश्चात् विनियोग करने का विधान है। तर्वपश्चात् सशंदा ध्यान-स्तुति और फिर मंत्र-जप करना चाहिए। इससे इष्ट देवता की सिद्धि शीघ्र ही प्राप्त हो जाती है।

विनियोग—

ओम् अत्य श्री गणपति महामन्त्रस्य,
गणकश्चिः, निष्ठृ गणत्री उंदः,
महागणपतिः देवता, सिद्ध लक्ष्मी
गणपति मंत्र जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति—

गजाननं भूतगणादि सेवितं,
कपिस्थजम्बूलफलं चारु भक्षणम् ।
उमासुतं शोक विनाशकारकं,
नपायि विज्ञेश्वर पादपंकजम् ॥

मंत्र—

श्री गणेशाय नमः ।

विनियोग और ध्यान-स्तुति के पश्चात् माला को मस्तक से लगाकर मंत्र-जप प्रारंभ करना चाहिए। मंत्र अनेक हैं, जिनमें से किसी भी एक मंत्र का जप किया जा सकता है। साधक को इस बात का संकल्प भी लेना चाहिए कि सिद्धि प्राप्त होने तक वो किलनी माला मंत्र का जप प्रतिदिन करता रहेगा।

श्री गणेशाय नमः ।	1
ओम् गं गणपतये नमः ।	2
ओम् गं ।	3
गल्मी ।	4
ओम् गं गणपतये विष्णविनाशने स्त्राहा ।	5
ओम् श्री हीं बल्ली गल्मी गं गणपतये वर वरदये नमः ।	6
ओम् एकदत्ताय नमः ।	7
ओम् वक्तुंडाय नमः ।	8
ओम् विनाशकाय नमः ।	9
ओम् भालधन्दाय नमः ।	10
ओम् लंबोदराय नमः ।	11
ओम् विकटाय नमः ।	12

जिस प्रकार गणेशजी के अनेक नाम हैं, उसी प्रकार उनके स्तवन हेतु भी अनेक मंत्र हैं। प्रत्येक नाम से संबंध एक पृथक मंत्र है। आस्था, भावना, सुविधा और सामर्थ्य के अनुसार किसी भी एक मंत्र का जप करने से साधक की शपी समस्याओं का निवारण हो जाता है।

षड्क्षरवक्रतुंड मंत्र

विनियोग—

ओम् आस्य श्रीगणेश गंप्रस्य भार्गव ऋषिः,
अनुष्टुप छंदः, विजेशोविकला, च शीघ्रम्,
च अविक्षम्, ममार्पीष्टं सिद्धये जपे विनियोगः ।

आन-स्तुति—

उथतु दिनेश्वर रुद्रिं निजहस्त गदौषैः,
पाणांकुशाभय वरान् दयते गगात्यम् ।
रथतांयां सकल दुःखहरं गणेशम्,
प्राप्येत्प्रसंनमखिला भरणाभिरामम् ॥

मंत्र—

वक्तुंडाय हुम् ।

वक्रतुंडाय मंत्र

पहला मंत्र भाव उह वक्तों का था और यह इवक्तों अवतो वाला मंत्र है,

जो परम गुण है। इस पत्र का विनियोग और ध्यान-स्थिति यहाँ भी प्रयोगीनीय है।
मंत्र निम्न है—

पत्र—
तथ्यस्येष्वस्य ददिता लिपेय एव वासना ।
स्वेष्योवलग्नानो बक्तुंडाय ह्य् ॥

नवाणि मंत्र

तंत्र-नामग्रन्थ में सफलता के लिए यह वडा ही प्रचावशाली मंत्र है।

विनियोग—

ओम् अस्य की उच्छिट गणेश नवाणि मंत्रस्य,
कंकोल ऋषि, विद्यर चंद्रः,
उच्छिट गणपतिः देवता,
अखिताप्तये जगे विनियोगः ।

प्यान-स्थुति—

चतुर्मुन रक्तनु विनेन,
पाशाङ्कुणो दन्ती ।
कोरेशनं साक्षी कहस्य
उच्चवत्सुचिट गणेश गोदे ॥

पत्र—

होल्ल पिण्डायि लिखे त्वाहा ।

शावित-विनायक मंत्र

यह मंत्र सम्पर्क प्रकार की धौतिक-समृद्धि प्रदान करता है। धन-धान्य, शूष्मा-
भवन, वश-मान, दास-वासी और वाहन आदि का मुख साधक को प्राप्त करता है।

विनियोग—

ओम् अस्य शावितपाणीष्य मंत्रस्य,
पाणव ऋषि, विद्यट चंद्रः,
शवितपाणीष्यो देवता, हं वीजम् ।
हं गणेश, पाणार्थ लिन्दये
जगे विनियोगः ।

प्यान-स्थुति—

विद्यानि कुरुकामस्त य पाणि,
दातं कोरेपौष्ट गुव्हांश ।

स्वपत्न्या
गांधीं
मन्

ओम् गैरुपूर्णमातृष्य,
सपुत्रादिनेतापविते ॥

ओम् हस्ति वृक्ष

सन्-धान्य प्रदाता गणेश मंत्र

इस मंत्र का इतना अधिक प्रभाव पड़ता है कि यहि साधक ऋण के भार से दबा हुआ हो, तो वो कृत ही हिंों में ऋण से पुकित पा जाता है, तथा उसे हर और से घन का अल्पाधिक लाभ होता है।

शिनियोग-

ओम् अस्य श्री कण्ठहरण कर्तुं गणपति स्तोत्रं पञ्चम
सदाशिवं श्राविष्य, अनुष्टुपः, उद्दृदः, श्री कण्ठहरण
पापपतिः देवता, गर्भं बीजम्, गः शीवितः गो
कीलकम्, यथ तत्कलं कण नामाने जये शिनियोगः ।

व्याच-स्तुति-

ओम् लिंगूष्यम् दिग्मन्तं गांधीं, लंकोहरं पदमदले निविद्यम्
ब्रह्मादिदेवैः परितत्त्वमानं, शिद्देव्युतं प्रणपापि देवम्
सुष्टुपातीं ब्रह्मणा सप्त्यक्षं पूर्वितः कला तिर्त्ये
सदैव पार्वती पुञ्चः कणनामां करोतु ये
चिपुरत्य वयातपूर्वं लंगुना सप्त्यगमितः
सदैव पार्वती पुञ्चः कणनामां करोतु ये
हिरण्यकश्चपुवाहीना, वयात्वं विष्णुतासितः
सदैव पार्वती पुञ्चः कणनामां करोतु ये
क्षदित्यस्य कर्ते देवा, पणनामः पूर्णितः
सदैव पार्वती पुञ्चः कणनामां करोतु ये ।

पंच-

ओम् गांधा छां शिषि कर्म्म हुं नमः फट् ।

लक्ष्मी-पितामहक मंत्र

यहि यम पव तो चौर्बीस हिंों में पांच सात वर्षा ताप तो स्वतन आरि के ऊपरक
यह तिर्त हो जाता है।

विनियोग—

ओम अस्य लक्ष्मी विनायक पंचस्य अत्यर्थी जपिः,
गायत्री छंदः लक्ष्मी विनाय जो देवता, श्री वीरभूम् ।
स्वाहा अवित्तः समाधीष्ट सिद्धयर्थं जपे विनियोगः ।

च्यान-सुन्ति—

दत्ता	शक्तवरी	दधानं,
कराणुणं	ह्यर्णषट्	क्रिनेत्रम् ।
पृताच्चया	लिंगितष्वक्षिप्ति	पुञ्च्याः
लक्ष्मी	गणेशं	कनकाभर्मीडे ॥

सिद्धि विनायक मंत्र

कार्य, व्यापार, अनुप्रयान अथवा यात्रा के पूर्व इस मंत्र की एक माला (108 दानों की) जपने से निश्चित स्फूर्ति से सफलता अंजित करी जा सकती है। प्रत्येक कार्य को सिद्धि के लिए यह एक अद्भुत मंत्र-साधन है।

विनियोग—

ओम् गं लौ चली वीरबर गणपतये
वः वः इदं विश्वं मम वशमानय
ओम् हौ फट् ॥

पान-सुन्ति—

ओम् गं गणपतये सर्वं विष्णु हरय सर्वाय ।
सर्वं गुरुवे लंबोदराय हौं गं नमः ॥

मंत्र—

ओम्	नमो	सिद्धि	विनायकाय
सर्वकारकर्त्ते	सर्वविष्णु	प्रशापनाय	
सर्वराज्य	वशपकरणाय	सर्वज्ञन	
सर्वस्त्री-युस्त्राकरणाय श्री ओम् स्वाहा ।			

त्रैलोक्यमोहनकर गणेश मंत्र

इस मंत्र का पांच लाख जप करने से साधक में दक्षीकरण की अद्भुत शक्ति आ जाती है।

विनियोग—

ओम् अस्य वैलोक्यपोहनकार
गणेशमंत्रस्य गणक ऋषिः,
गायत्री छंदः, वैलोक्य
पोहनकरो गणेश देवता,
ममाधीष्ट सिद्धयर्थे
जपे विनियोगः ।

व्याख्या-स्तुति—

गदा वीज पूरे घनः घूल चक्रे,
सरोजोत्पले पाशाण्याशादेतान् ।
करैः सं दधानं स्व शुंहाश्र राजतु,
मणीकुंभ मंगाधिरुदं स्वपत्न्या ॥
सरोजन्मता भूषणानां भरेणो—
ज्ञवलद्वस्ततंव्या समालिङ्गितांगम् ।
कर्णदाननं चंद्रघूडं विनेशं
जगंभोहनं रथतकान्ति भजेन्तम् ॥

मंत्र—

ओम् यक्षनुग्नेक दंष्ट्राय कली ही थी
गं गणपतये वर वरदे सर्वजनं
वश मान्य स्वाहा ।

हरिद्वा गणेश मंत्र

भौतिक अभावों को दूर करके पारिवारिक सुख-समृद्धि और धन-धान्य की प्राप्ति कराने में यह मंत्र अत्यधिक शक्तिशाली माना जाता है। इसमें मंत्र-जप के लिए हल्दी की गांठों की मात्रा प्रयुक्त की जाती है।

विनियोग—

ओम् अस्य हरिद्वा गणनायक मंत्रस्य,
मदन ऋषिः अनुष्ठुप छंदः,
हरिद्वा गणनाय को देवता,
ममाधीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ध्यान-स्तुति-

पाशां कुशी भोदक मेकदंतं,
कर्मदेवयनं कनकासनस्यम् ।
हारिद लण्ड प्रतिमं विनेत्रं ।
वीतांशुकं रात्रि गणेशा दीड़ ॥

मंत्र-

ओम हं गं गलौवर वरदे
सर्वजन हृदयं सत्तमय सत्तमय स्वाहा ।

विनियोग, ध्यान-स्तुति और मंत्र-जप के पश्चात् प्रतिदिन गणेश-स्तुति का पाठ करने का भी विधान है। इससे साधक को बहुत ताप होता है।

विद्याकामी को विद्या, धनकामी को धन, संतानकामी को संतान, पुत्रकामी को पुत्र, मौकामी को मौक तथा जयकामी को विजय मिलती है। यदि साधक प्रतिदिन छह बाह तक इस स्तुति की साधना करे, तो उसे गणेश-सिद्धि की भी प्राप्ति सुख ही हो जाती है। स्तुति इस प्रकार है—

द्रष्टव्य लिरसा देवं, गौरी पुत्र विनायकम्
भक्तावासं स्पर्शेभित्यमायुः कामार्थसिद्धिये
प्रथमं चक्रस्तुंड च एकदंतं द्वितीयकम्
तृतीयं कृष्णपिंगलं, गजवक्षं चतुर्थकम्
लंबोदरं पंचमं च, षष्ठं विकट मेव च
सप्तमं विज्ञाराजेऽ, शूष्मदण्डं लवाहकम्
नवमं भास्त्रवंडं च, दशमं तु विनायकम्
एकादशं गणपति च, द्वादशं तु गणाननम् ।

उपर्युक्त स्तुति से साधक को बहुविध हान की प्राप्ति होती है। मार्ग की समस्त भीतिक वाघाएं दूर हो जाती हैं, तथा अध्यात्म के सेत्र में भी सिद्धि की प्राप्ति होती है।

लघुमृत्युंजयमंत्र सिद्धि

इस मंत्र को जया और मृत्यु का नियारक माना गया है। एक लाख मंत्र-जप के पश्चात् भी और मधु से हृत करने से, इसका दिव्य प्रभाव तत्काल देखने को मिल जाता है। यह मंत्र शारीरिक रोग, जाग्रति, मृत्यु, दुर्घटना आदि का जमन करके साधक को सौभाग्य, संपदा, मौक और अनेक प्रकार की भीतिक उपलब्धियों को प्रदान करता

है। द्वितीय पूजा में इस मंत्र की एक माला फेरने से ही यह सिद्ध हो जाता है। उस हमय साधक स्वर्य का तो भला करता ही है, दूसरों को भी साध पहुंचाता है।

विनियोग—

ओम् अस्य अवशास्त्रम् भृत्युंजयं पंत्रस्य,
कहोत् ऋषिः गायत्री षष्ठि, भृत्युंजयी
महादेवो देवता नूँ वीजम्, लः शक्तिः,
सर्वेष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

प्रान-स्तुति—

चंद्रकांगिन विहोणनं रिपतमुद्धं पद्ममध्यांतः रिपतम्
मुद्रापाश भृगाश सूज विहासत्पाणिं हिमांशु प्रभम्
कोटीर्णेतु गलत्युथा भृत्यतनुं हासादि भृषीश्वरम्
कांया विश्वविमोहनं पशुपतिं भृत्युंजय भावयेत्।

प्रान—

ओम् ही नूँ सः।

ऋंबकमंत्र सिद्धि

अल्पायु, अकाल-भृत्यु, शत्रु-भय, रोग-भय, दुर्घटना, आळमण और बुद्ध-भव आदि संकटों के निवारण हेतु इस मंत्र का जप कल्याणकारी सिद्ध होता है। इसका एक लाख जप करना चाहिए। हवन का भी विधान है। जिवलिंग पर बेतपत्र बढ़ाकर, उसकी पूजा भी करनी चाहिए। तभी यह मंत्र सिद्ध होता है।

विनियोग—

ओम् अस्य ऋंबक मंत्रस्य ऋषिष्ठ ऋषिः,
अनुष्टुप् षष्ठि: ऋंबक पार्वती पलिर्देवता,
ऋंवीजम्, वं शक्तिः कं कीरकम्,
सर्वेष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

प्रान-स्तुति—

हस्ताभ्यां कलम द्वामृत
रसोराम्लावयंतं लिरी,
द्वाम्ब्यां तौ द्वयतं मृगाश
वलये द्वाम्ब्यां वहंतं परम।
अंकलास्त काद्वामृतपटं नर्वेतु
कैलाशकांतं शिवम्,

स्वच्छाम्पोजगतं नर्वेदु
मुकुटं देवं त्रिमेत्रं भजे ॥

मंत्र-

ओम् अंबकं पजामहे सुगंघ पुष्टि वर्दनम्
उर्वारुकमिव बंधनांमृत्योमृतीय भाष्टात् ।

महामृत्युंजयमंत्र सिद्धि

जो साधक धैर्य और निष्ठापूर्वक इसका विधिवत् जप करते हैं, वो इसके अमल्कारी प्रभाव से अधिभूत हो जाते हैं।

विनियोग-

ओम् अस्य श्रीमहामृत्युंजय मंत्रस्य बापदेव कहोत,
वशिष्ठ ऋषिः पंकित गायत्री अनुष्टुप् उंदांसि,
सदाशिव महामृत्युंजय लद्वादेवताः, श्री बीजम्,
ही शक्तिम्, महामृत्युंजय ग्रीष्मते जपे विनियोगः ।

वान-स्तुति-

हस्तांभोज गुणस्थ कुंभ तुवला दुदत्पत्तोर्प शिरः
सिंघंतम् कार्योद्युगेन दधतं त्वांके तत्कुप्ती करो
अक्षस्त्रक् मृगहस्ततंतु जगतं मूर्दस्थ चंद्रस्त्रवत्
पीमूषोन्नतनुं भजे सगिरिजं मृत्युंजय ज्यंबकम् ।

मंत्र-

ओम् हीं ओम् जूं सः भूमवः स्वः अंबकं
पजामहे सुगंघि पुष्टि वर्दनम्
उर्वारुकमिव बंधनात् मृत्योमृतीय भाष्टात्
भूमवः स्वः जूं सः हीं ओम् ।

रुद्रमंत्र सिद्धि

विनियोग-

ओम् अस्य श्रीरुद्रमंत्रस्य बोधायन ऋषिः,
पंकितउंदाः, लद्वादेवता, परमाभीष्ट—
सिद्धवर्ये जपे विनियोगः ।

प्रान्त-सुन्ति-

कैतोशा घल सन्निपं त्रिनयम्
पन्चास्य वन्ता युतम्
नीतयीव भौतिश मूषणधरं
व्याघ्र त्वया प्रावृतम्
अदास्त्रवर कुण्डिका धयंकरं
चान्दी कलां विभ्रतम्
गंगाम्बो विलसम्भं
दशभुजं वन्दे घोशं परम् ।

पंत-

ओम् नमो भगवते रुद्रायं ।

त्वरितरुद्रमंत्र सिद्धि

कामनापूर्ति और शिवजी के दर्शनाभिलाषी साधकों के लिए यह एक अत्यंत विछ्यात पंत-साधना है ।

विनियोग-

ओम् अस्य त्वरित रुद्र पंत्रस्य,
अथर्वण ऋषिः अनुष्टुप् छंदः,
त्वरित रुद्रसङ्गका देवता, नमः
इति बीजम् अस्तु इति शक्तिः,
त्वरितरुद्र द्वीत्यर्थं जपे विनियोगः ।

प्रान्त-सुन्ति-

रुद्रम् चतुर्भुजम् देवम् त्रिनेत्रं वरदाभयम्
दधानमूर्धं हस्ताभूयां शूलं इयरुपेव च
अंकं संस्यामुआं पद्मेदधानं च करद्वये
आणेकर दद्यं कुञ्चं पातुलिंगं च विभ्रतम् ।

पंत-

ओम् रुद्रोऽन्नी योम्बुय
ओमधीर्युयो रुद्रोविश्वामुवना
विवेश तस्मै रुद्राय नमोऽस्तुते ।

विशेष- ईनिक-सूत्रा अथवा किसी भी अध्यात्म पर माननीय जप के लिए यह विशेषी के कुछ गंत्र और दिए जा रहे हैं, जिनका शुद्धापूर्वक पाठ करके कोई भी साधक साधारणता हो सकता है।

नमः शिवाय ।	1
ओम् नमः शिवाय ।	2
उर्ध्वं फट् ।	3
ओम् ही ही नमः शिवाय ।	4
ओम् नमो भवते दक्षिणामूर्त्ये भद्रं भेदा प्रयत्ना स्वाहा ।	5
इं सं यं ओं अं ।	6
ओं ही ह ।	7
ओम् पार्वतीषतये नमः ।	8
नमो वीतकण्डाय ।	9
हीं ओम् नमः शिवायः हीं ।	10

द्वादशाक्षरविष्णुमंत्र साधना

लोक-परलोक, ज्ञान-विज्ञान, विद्या-चुदि, त्याग-तपस्या, सुख-समुद्दिदि, शशा-पवित्र, जो कुछ भी कामना साधक रखता है, वो सब इस साधना-संस्कृति से पूर्ण हो जाती है तथा साधक विष्णुजी की कृपा का पात्र बन जाता है। उसकी सभी समस्याएं और संकट दूर हो जाते हैं।

विनियोग—

ओम् अस्य विष्णु मंत्रस्य प्रज्ञापति चाहि:
गायत्री छांदः, वासुदेव परमात्मा देवता,
सर्वेष लिङ्गये जपे विनियोगः।

प्यान-स्तुति—

विष्णु गारद चंद कोटि लटुकं शङ्खं रथांगं गदाम्
अंधोजं दधतं सिताम्ब निलयं, काल्या ग्रग्न्मोहनम्
आपदांगंद्यार कुंडल महामौलि ल्पुरलकंकणम्
श्रीकलांकमुद्यार कीसुभवरं वहे मुनीन्द्रे सुलभम्।

मंत्र-

ओम् विष्णवे नमः ।	1
ओम् हहीपतये नमः ।	2
ओम् पुण्डरीकासाय नमः ।	3
ओम् चक्रपात्ये नमः ।	4
ओम् नमो नारायणाय ।	5
ओम् नमो भगवते वासुदेवाय ।	6

उपरोक्त मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप करने से साधक को विष्णु-चरणों पर स्थान मिलता है। सभी मंत्र अत्यंत प्रभावशाली हैं।

किंशुजी ने समय-समय पर विभिन्न रूपों में अवतरित होकर लोक-रक्षा की है। जो तो उनके एक हजार नामों का उल्लेख ज्ञास्त्रों में मिलता है, किन्तु उनके मुख्यतः चौबीस अवतार ही अधिक प्रचलित हैं। उन चौबीस में भी मुख्य नाम राम और कृष्ण का है। यहां हम उन्हों के मंत्र दे रहे हैं, जिनकी जप-साधना से साधक को अलौकिक-शक्तियों की सिद्धि प्राप्त होती है।

दशाक्षरराममंत्र साधना

विनियोग-

ओम् अस्य श्रीराम मंत्रस्य वशिष्ठ ऋषिः
विराट् छंदः, सीतापाणि परिग्रहे
श्रीरामपुण्डेवता, हुं वीजम्, स्वाहा शक्तिः
चतुर्विंश पुरुषावृत्तिद्वये जपे विनियोगः ।

व्याप-स्तुति-

अयोध्यानगरे रम्ये रत्नसौदर्यं मंडपे,
मंदारं पुष्पेराबद्धवितानं तोरणांकिते ।
सिंहसनसमारूढां पुष्पकोवरि राघवम्,
रक्षोभिर्हरिभिर्देवे: द्विव्यानं गतैः शुभैः ।

मंत्र-

रं रामया नमः ।	1
रामय नमः ।	2
कर्त्ती राम वर्ती ।	3

कहु राम फटू ।	5
भी राम भी ।	6
ही राम ही ।	7
ओम् राम ओम् ।	8
ओम् रामाय नमः ।	9
हे रामाय नमः ।	9
श्री रामाय नमः ।	10
ई रामाय नमः ।	11
कही रामाय नमः ।	12
हो राम हो ।	13
ओम् ननो भगवतो रामाय महामुखाय नमः ।	14
ओम् आय पुराण मुहोत्तमाय लाङ्गो नमः ।	15
ओम् रामाय हुं कहु स्वाहा ।	16
ओम् ही भी श्री दाहात्माय नमः ।	17
ओम् रामाय दनुआण्डे नमः ।	18
भी राम जय राम जय राम ।	19
हुं जानकी बलामाय स्वाहा ।	20
उपरोक्त ननों ने से किसी भी एक घंटे का जप हिता जा सकता है। सभी ननों का फल एक गमान है।	

श्रीकृष्णमंत्र साधना

विनयोग-

ओम् अल्य श्रीकृष्ण मंत्रस्य नामद ज्ञायः,
वायनी उद्द, श्रीकृष्णो देखता, कही शीजम्,
स्वाहा शक्तिः चतुर्विंश्च पुक्षपाठ्य—
लिङ्गवर्णं जपे विनियोगः ।

प्राप्त-सुन्ति-

स्वेत रुप रवे रथे षोडशंतमनामतम्
गोविंद पुण्डरीकालं गोपकंशा सहस्रशः

आत्मनो वदनाभीज प्रेणिताति भवता
पीडिता कामवाचेना विगम उलेषणोन्मुक्ता ।

मंत्र-

ओम् कृष्णाय नमः ।	1
ओम् कृष्ण ।	2
ओम् कर्त्ता कृष्ण ।	3
ओम् कर्त्ता कृष्णाय ।	4
ओम् कर्त्ता कृष्णाय कर्त्ता ।	5
ओम् कर्त्ता कृष्णाय स्वाहा ।	6
ओम् श्री ही कर्त्ता कृष्णाय ।	7
ओम् कर्त्ता कृष्णाय गोविंदाय ।	8
ओम् कर्त्ता एतो श्यामसंगाय नमः ।	9
श्रीकृष्णः शरणं मम ।	10
ओम् गोपालाय स्वाहा ।	11
ओम् कृष्णाय गोविंदाय ।	12
ओम् बाल बपुषे कर्त्ता कृष्णाय स्वाहा ।	13
ओम् श्रीकृष्णाय परब्रह्माणे नमः ।	14
ओम् बाल बपुषे कृष्णाय स्वाहा ।	15
कर्त्ता कृष्णाय गोविंदाय गोपीजनवलभाय स्वाहा ।	16
साधकों को उपरोक्त मंत्रों में से जिस मंत्र के उच्चारण में श्री सहजता प्रतीत हो, वो ही मंत्र-जप करें ।	

दत्तात्रेयमंत्र सिद्धि

सामाजिक समस्या, गोप, शोक, शत्रु, दरिद्रता, संवानाभाव, भौतिक-बाधा, वायरा प्रतिवात अवश्या किसी भी प्रकार का कोई भी संकट हो, दत्तात्रेय की मंत्र-साधना साजने से अल्प समय में ही सर्व-बाधाओं और समस्याओं से मुक्ति मिल जाती है। पिथा और ज्ञान की प्राप्ति, धनालाभ, वायरा दोषों से मुक्ति, शत्रु-घराघर, विद्या और ज्ञान की प्राप्ति, विश्वास, वायरा दोषों से मुक्ति, शत्रु-घराघर,

पारिवारिक सीख्य, धन-धान्य की समृद्धि और सामाजिक मान-प्रतिष्ठा के लिए यह साधना बहुत प्रभावशाली रहती है।

विनियोग—

ओम् अस्य श्रीदत्तात्रेय स्तोत्रमन्तर्गत,
भगवान् वारद चक्षिः अनुष्टुप् उंडः,
श्री दत्त परमात्मा देवता,
श्री दत्त प्रीत्यर्थं जये विनियोगः
उपर्युक्त विनियोग को जय कर अंजुलि में लिया हुआ गीताजल अपने चारों ओर
छिड़क लें और फिर दत्तात्रेय भगवान् का ध्यान करें—

प्राप्त-स्तुति—

ओम् जटाघरं पाण्डु रंगम्
शूल हस्तम् कुचा निधिम्
तर्व सोग हाँ देहम्
दत्तात्रेय महं भवे।

मंत्र—

हाँ !	1
ओम् हाँ !	2
हाँ ओम् दत्तात्रेयाय नमः ।	3
ओम् हाँ दत्तात्रेयाय नमः ।	4
हाँ दत्तात्रेयाय नमः ।	5
दिगंबरा दिगंबरा, शीघ्रान् वस्त्रम् दिगंबरा ।	6
ओम् आं हीं कीं एहि दत्तात्रेय स्वाहा ।	7
श्री हीं कार्ति दत्तात्रेय स्वाहा ।	8

उपरोक्त मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का उच्चारण करें। यदि कोई ताधक दी वर्ष, नौ महीने और दस दिनों तक नित्य, नियमित रूप-से सोलह बार एक माला मंत्र-जप करें, तो यो उनका प्रत्यक्ष दर्शन पा जाता है। भगवान् दत्तात्रेय की एक विशेषता यह भी है कि निष्ठावान् साधकों को साधनाकाल में अनेक प्रकार की अनौकिक अनुभूतियाँ होने लगती हैं, जो सिद्धि-प्राप्ति की परिवायक हैं।

श्रीलक्ष्मीमंत्र सिद्धि

आज संसार भर के मानवों के लिए धन ही सर्वोपरि है और धन-संपत्ति की स्वापिनी तड़पी है, जो विष्णुजी की अधर्मियाँ हैं। लक्ष्मीजी अपने अनेक नामों और रूपों में विख्यात हैं। हम यहाँ पर उनके कई रूपों, नामों के मंत्रों की साधनाओं का वर्णन करने जा रहे हैं। नियमित मंत्र-जप से उनको अनुकूल अवश्य प्राप्त होती है। साधक के आर्थिक संकट कुछ ही दिनों में दूर हो जाते हैं। ऋण-भार तक से मुक्ति मिल जाती है।

इसमें शर्त यही है कि साधक को प्रत्येक साधना परम श्रद्धा, विनय और शुचिता के साथ करनी चाहिए। विना कुछ छाँगे ही साधक को सब-कुछ मिल जाता है। संस्कारण में या मध्य रात्रि में स्नान करके, पवित्र और एकांत स्थान में थी का दीप जलाकर, देवी की पूजा करें और जात आसन पर, जात बस्त्र पहनकर, जात बृंदन या भूगो की अद्वा रुद्राक्ष की माला से इकीस बार नित्यप्रति मंत्र-जप के साथ, इकीस दिनों तक देवी के प्रत्येक रूप को (जिसकी आप चाहें) साधना करें। इससे अलीकिक-शक्तियों की प्राप्ति तो होगी ही, साधक के समस्त कष्ट भी दूर हो जाएगी। साधना की इकीस दिनों की अवधि में द्वाष्टवर्य और सात्त्विक दिनवर्या नितांत आवश्यक है।

देवी लक्ष्मी के सर्वाधिक प्रचलित प्रमुख रूपों की मंत्र-साधनाओं का परिचय निम्न है—

महालक्ष्मी

विनियोग—

ओम् अस्य श्रीमहालक्ष्मी मंत्रस्य,
चात्या ऋषिः, गायत्री उंदः,
श्रीमहालक्ष्मी देवता, श्री वीजम्,
नमः शक्तिः, सर्वेषांसिद्धये जपे विनियोगः

व्याप-स्तुति—

ओम् लिंदूरुहण कांतिमञ्जवसतिं सौंदर्यवरानिषिष्ठ
कोटीरांगद हारकुंडल कर्ति गृजादिभिर्भूषिताम्
छस्तार्जैर्वसुपत्रमण सुगलत दशो वर्णतीं वरा
मार्चीतां परिचारिकाभिरनिशं व्याघेत्रियां शारिणः।

मंत्र-

ओम् श्री हीं श्री कमले कमलालये प्रसीद प्रसीद
श्री हीं श्री महातद्य नमः । 1
ओम् श्री हीं वर्तीं श्री तदभीरागच्छागच्छ
मम चरिरे लिङ्ग लिङ्ग स्वाहा । 2
उपर्युक्त दोनों मंत्रों में ही किती भी एक मंत्र का जप किया जा सकता है।



32

एकाक्षरलक्ष्मीमंत्र साधना

विनियोग—

ओम् अस्य श्रीलक्ष्मी चीजयंप्राप्य,
भूग्र ऋषिः, निवृच्छुदः, श्रीलक्ष्मीः देवता
यम् धनाप्तये जपे विनियोगः ।

प्रान-स्तुति—

ओम् कान्त्या कांचन सन्निधान
हिमगिरि प्रख्यैश्चतुर्भिर्गंजैः
हस्तोलिखाप्त हिरण्यवापृत—
घटैरासिद्ध्य मानाधिवप्तु
विघ्राणां वरमन्ज युग्ममध्य
हस्ते किरीटोऽवलाम्
सोमावद्ध नितंबविष्वलसितां
बन्देहरविन्द सिताम् ।

मंत्र—

श्री ।

चतुराक्षरलक्ष्मीमंत्र साधना

विनियोग—

एकाक्षरलक्ष्मीमंत्र साधना में वर्णित ।

प्रान-स्तुति—

माणिक्य प्रतिमध्यभां
हिमनिमेस्तुं गैश्चतुर्भिर्गंजैः
हस्ताश्चाहित रत्नकुम्भ
सलिलेशसिद्ध्यमानां मुदा
हस्ताश्चार्वदान मञ्जुज
युग्म भीतिर्द्यानां होः
कांतां कांक्षित पारिगत-
लतिकां बन्दे सरोजासनाम् ।

四

ਗੁਰੂ ਨਾਨਕ ਦੇਵ

दशादारलक्ष्मीमंत्र साधना

३८५

पाठ्यालंकार विषयों में वर्णित ।

ଆମ-ବୁଦ୍ଧି-

आसीना सरसीकहे स्मितासुखी हस्तांतुजै विप्रती,
दानं पद्म चुगामये य वसुथा सोवायिनी सनिमा।
मुक्ताशर विशज्जमान पृथुततुंग स्तनोद्भासिनी;
पाषाढः कमला कटाळ विधैरानंदयंती हरिम्॥

三

ओम नमः कमलवासिन्ये स्वाहा ।

द्वादशाक्षरलक्ष्मीमंत्र साधना

१८५

ओम् अस्य श्री महालक्ष्मी मंत्र,
दद्या त्रयिः, गायत्री छन्दः,
श्री महालक्ष्मी देवता, श्री लीलाम्
नमः शक्तिः सर्वेष्ट सिद्धयाचे
जपे विनियोगः।

प्रान्त-सूत्री-

ओम् सिंहराम् कांतेमवजवसति सौदर्यवारानेषिम्
कोटीराम् द हार कुंडल कर्ति सूचादिभिर्भूषिताम्
हस्तावैर्वसुपत्रमय युगला दशी वहंती परा
पावीतां परिचारिकाभिरुचिं व्यावेशियां शार्णिषः।

三

ओम् श्री ही श्री कृष्ण का प्रसाद वाचे प्रसीद—
प्रसीद श्री ही श्री महावाच्ये नमः।

सिद्धलक्ष्मी

विनियोग—

ओम् अस्य श्री सिद्ध लक्ष्मी मंत्रस्य हिरण्यगर्भ ऋषिः,
 अनुष्टुप् छंदः, श्री महालक्ष्मी, महाकाली, सरस्वत्यो देवता:
 श्री बीजम्, ही शक्तिः, कली कीलकम् मम सर्व-
 कलेश पीड़ा परिहारार्थ सर्व दुःख दारिद्र्य नाशार्थ
 सर्वकार्य सिद्धयर्थे च श्री सिद्ध लक्ष्मी मंत्र जपे विनियोगः।

प्रान-स्तुति—

ब्राह्मीं च वैष्णवीं भद्रां
 षड्भुजां च चतुर्पुरुषीम्,
 त्रिनेत्रां खड्गशूलामी,
 पद्मम् चक्रे गदाधराम्।
 वीताम्बर यरां देवीं
 नानासंकार भूषिताम्,
 तेजः पुञ्जयरां श्रेष्ठां
 ध्यायेत् बाल कुमारिकाम् ॥

मंत्र—

ओम् श्रीं हीं कलीं श्रीं सिद्धलक्ष्मै नमः।

विवेच— किसी भी शुभ मुहूर्त में यह साधना प्रारंभ करके, इस मंत्र को स्फटिक की माला पर इक्कीस दिनों में एक लाख जप करने से ही यह सिद्ध हो जाता है। अपकाल में शुद्ध गाय के धी का दीपक जलाता रहना चाहिए, तथा साधक को कुशासन पर पूरब की ओर मुख करके बैठना चाहिए।

ज्येष्ठालक्ष्मी

विनियोग—

ओम् अस्य श्री ज्येष्ठा लक्ष्मी मंत्रस्य,
 ब्रह्मा ऋषि, उपर्युष छंदः ज्येष्ठा—
 लक्ष्मी देवता, ही बीजम्, श्री शक्तिः,
 ममाभीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

व्यान-स्तुति—

उपद्रु भास्कर संनिभारिष्यतमुखी रक्ताम्बरालेपना
सतकुंभं घन भाजनं सृष्टिशब्दोपाशं करैविंधती
पदुमेस्था कमलेदणा, हृष्कुचा सींदर्यं वारांनिधि:
व्यातच्या सकलाभिलाष्य फलदा श्रीन्देष्टासामीरियम् ।

मंत्र—

ऐं हीं श्री ज्येष्ठालक्ष्मी स्वयंभुवे हीं ज्येष्ठार्यं नमः ।

वसुधालक्ष्मी

विनियोग—

ओम् अस्य श्री वसुधालक्ष्मी मंत्रस्य
ब्रह्मा ऋषिः, निवृद्ध गायत्री छंदः,
वसुधा श्री देवता, गँगा वीजम्, श्री:
शक्तिः, ममाभीष्ट प्राप्त्ये जये विनियोगः ।

व्यान-स्तुति—

कल्पद्रुमादो भग्नि वेदिकायां
समास्थिते वस्त्रं विभूषादृये
भूषिक्षियी वाँहित वापदक्षी
सीधिंतयेत् देव मुनीद्र वन्ये ।

मंत्र—

ओम् गँगा श्री अन्नं ब्रह्मन्नं मे
देव्यन्नाधिष्ठये ममान्नम्
प्रदाप्य स्वाहा श्री गँगा ओम् ।

श्रीकालीमंत्र सिद्धि

काली या महाकाली ओज, तेज, पराक्रम और विजय-धैर्यव की अधिष्ठात्री देवी हैं। समय-समय पर उन्होंने अनेक अवतार धारण किए हैं और प्रत्येक में उन्हें शक्ति की देवी ही कहा गया है। वही देवी जादि-शक्ति, महामाया, जगत्-जन्मी की संज्ञा से अभिहित हुई हैं। यिभिन्न घटनाओं के संदर्भ में देवी कालीजी ने लक्ष्मलीन समस्या के समाधान हेतु जो विशेष चरित्र किए हैं, उन सीला-प्रसंगों के अंतर्गत उनके कुछ विशिष्ट

स्वरूपा (अवतारी) को अत्यधिक मान्यता प्राप्त हुई। ऐसे अवतारों वे दुर्गा, सरस्वती, लक्ष्मी, तारा, भूवनेश्वरी, गौरी, चांदिका, चामुंडा, अन्नपूर्णा, शाकुम्परी आदि विलम्बात् और पूज्यीय हैं। वैसे तो देवी के किसी भी रूप-स्वरूप की उपासना करके, किसी भी कामना की पूर्ति हेतु निवेदन किया जा सकता है, किन्तु उद्देश्य विशेष (सिद्धि) के लिए उत्तम मुण्डत्व की, विशिष्ट देवी की साधना अधिक प्रभावी होती है।



यहाँ कलाई से संबंधित मुख्य चार मंत्रों का उल्लेख किया जा रहा है, जिनका विनियोग और ध्यान-स्तुति एक ही है। साधक अपनी आस्था के अनुसार किसी भी मंत्र का जप कर सकते हैं। विधिवत् साधना करने वालों को सिद्धि की प्राप्ति अवश्य होती है और देवी के साक्षात् दर्शनों का सौभाग्य भी प्राप्त होता है।

विनियोग—

ओम् अस्य श्री कालीं पंत्रस्त्र
धैरव ऋषिः उष्मिक छदः,

कालिका देवता, कीं बीजम्,
हूं शवितः, कीं कोत्तकम् महापीष्ट
सिद्धयेऽ जपे विनियोगः ।

व्याख्या-

ओम् शब्दरूपां महापीभां घोर दद्मां हसंमुखीम्
चतुर्भुजां लक्ष्मण्युडवरा भयकरां शिवाम्
मुङ्गमालाघरां देवीं लक्ष्मिष्ववां दिगंबराम्
एवं सर्विन्द्रियेतु कार्ती शमशानात्मय वासिनीम् ।

मंत्र-

धट्कालीमंत्र-

ओम् हौं कालि महाकालि किलि किलि फट् स्वाहा । 1

इमशानकालीमंत्र-

ऐं हीं थीं कलीं कालिके ऐं हीं थीं कलीं । 2

दक्षिणकालीमंत्र-

ओम् कीं कीं कीं हीं हीं हूं हूं

दक्षिणे कालिके कीं कीं हीं हीं हूं हूं स्वाहा । 3

पंचाक्षरकालीमंत्र-

ओम् हीं थीं हूं फट् । 4

श्रीसरस्वतीमंत्र सिद्धि

देवी सरस्वती संसार की वेतना शक्ति की स्थानिनी हैं। सरस्वती को कई नामों और स्वरूपों में जाना जाता है और उन्हीं स्वरूपों की सिद्धियाँ पाकर साधक लाभाधित होते हैं। हमने देवी सरस्वती के अतिरिक्त उनके कुछ मुख्य स्वरूपों का भी वर्णन किया है। देवी का प्रत्येक स्वरूप फलदायी है। देवी के मन्त्रों का उच्चारण भी एक्षत्रम् शुद्ध होना चाहिए, क्योंकि सभी मंत्र अत्यंत प्रभावी हैं।

विनियोग-

ओम् अस्य सरस्वती मन्त्रस्य कण्ठ नविष्ट,
विराट् छंदः, वामवाहिनी देवता,
महापीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः ।

ध्यान-स्तुति-

तरुण सकलमिंदो विप्रति शृणु कर्मेति,
कुचभर नपितांगी सन्निष्ठाना सितार्यै।
निजकरकमलोद्यत् लेखनी पुस्तक धी;
सकल विभव सिद्धये पातु वाग्ददत्ता नः ॥

उपर्युक्त विनियोग और ध्यान-स्तुति के याद देवी के इस भंत्र का जप करना
चाहिए।

मंत्र-

ब्रह्म ब्रह्म वाग्वादिनि स्वाहा ।



सरस्वतीएकाक्षरमंत्र साधना

इसका विनियोग और ध्यान-स्तुति उपरोक्त के समान है। मंत्र में भारी अंतर अवश्य है। मंत्र-जप पूरी निष्ठा, आस्था और शुचिता के साथ करना चाहिए। देवों के इस मंत्र के साथ ही अन्य सभी देवी-द्वयलों के मंत्रों का जप दीपावली के साथ में ही करना चाहिए। उस समय में सभी मंत्र बहुत प्रधारी होते हैं, तथा देवी-सिद्धि प्राप्त करने में सहायक होते हैं। जब तक सिद्धि प्राप्त न हो जाए, मंत्र-जप निःत्त ऊरते रहना चाहिए।

मंत्र-

ऐं।

वाणीदेवीमंत्र साधना

इसका विनियोग और ध्यान-स्तुति भी पूर्व वर्णित है। यहाँ केवल मंत्र ही दिला जा रहा है। इस मंत्र के जप से साधक में तम्पोहन की शक्ति उत्पन्न होती है।

मंत्र-

ओम् हीं ऐं हीं ओम् तरस्वती नमः।

विद्यादेवीमंत्र साधना

विनियोग एव ध्यान-स्तुति पूर्व वर्णित है।

मंत्र-

ओम् हीं शीं ऐं वाणीदिवि
भगवती अहम्नमुख निवासिनि
तारस्वति विमात्ये प्रकाशं
कुरु कुरु स्वाहा एं नमः।

नीलसरस्वती मंत्र साधना

विनियोग-

ओम् अस्य भवतिविदा मंत्रस्य,
द्वादा ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः,
तारस्वति देवता, विमाधीष्ट
सिद्धयर्थे जपे विनियोगः।

स्वादेशुति-

सरस्वतीं यथा दृष्ट्वा वीणा मुस्तक धारिणीं।
हंसवाहनसंयुक्ता विद्यादानम् करोतु वे ॥
तरणं शकलार्पिंदो विष्वतीं शुभ्रकर्त्ति,
कुचभरनमितांगी सनिष्यणीं सिताम्बो ।
निज कर कमलोद्यन्लोकनीं प्रसाकर्त्तीं
सकलविभवसिद्धये पालु वादेवता नः ॥
घटा शूल हलानि शंख मुसले चक्र थनुः सायकम्
हत्तान्गैर्धर्थतीं घनांत वित्तमध्यीतांशु तुल्य प्रणाप् ।
गौरी देह समुद्रभवां विजगतामाधार भूतापहा,
सर्वार्थं तरस्वतीमनुभवे शुभादि देत्यादिनीषु ।
शरस्पूर्णेन्दुशुभां सकललिपिमयीं लाल रक्तजिनेभां,
शुब्लालंकारभासां शशिमुकुट जटाभार हारपद्मीनाम् ॥
विद्याभ्रक् पूर्णकुंभान् वरमधिदधतीं शुद्ध पद्मांबगाढ्या,
वादेवीं पद्मभववतां कुचभरनमितां विंतयेत सापकंदः ॥

मंत्र-

ऐ ही श्री कर्त्ती सो कर्त्ती ही ऐ शूं श्री,
नीलतारे सरस्वती द्वां द्रीं कर्त्ती क्लूं तः।
ऐ ही श्री कर्त्ती सोः सोः ही स्वाहा ॥

विशेष— उपरोक्त मंत्र सब मंत्रों से अधिक प्रभावशाली है। इसे सिद्ध कर तोने बला साधक वाक्यावित में कभी असफल या निकला हित नहीं हो सकता। जिसने इन वाक्र से वो किसी को भी सम्मोहित कर सकता है।

दुर्गानिवार्णमंत्र सिद्धि

दुर्गाजी को शक्ति वा अवतार, केद्रीभूत-स्वरूप कहा गया है। कात्तलय से प्रसन्नानुसार उन्होंने अनेक स्वरूप धारण किये, जिन्हें अवतार की संज्ञा दी गई। दुर्गाजी की नामाख्यति निम्न है, वे सभी नाम शक्ति (दुर्गा) के पर्याय हैं। किसी भी रूप का

अथवा किसी भी नाम का स्वरण किया जाए, दुर्गा जी की ही कृपा प्राप्त हो जाती है।

दुर्गा के नौ अवतार विशेष रूप-यों पूजित हैं। नवरात्रों में इनकी उपासना क्षमिता स्वरूप से, प्रतिदिन एक नए अवतार की कि जाती है। दुर्गा के इन नव-अवतारों का वर्णन इस प्रकार है—

- | | | |
|---------------|-----------------|--------------|
| 1. शीतसुखी | 2. ब्रह्मवारिणी | 3. चंद्रघटा |
| 4. मूर्खगण्डा | 5. स्कंदमाता | 6. काल्याधनी |
| 7. कालरात्रि | 8. महागौरी | 9. सिंहिदाकी |

दुर्गा के इन नौ अवतारों के अलावा उनके बत्तीस स्वरूपों के नाम और भी हैं, चूंकि दुर्गा (काली) महाशक्ति का ही एक रूप है, अतः महाशक्ति की व्यापकता का बोध करने के लिए पर्वीषियों ने एक ऐसी तात्त्विक बनाई, जिसमें आदिशक्ति के तीनों रूपों- सरस्वती, लक्ष्मी और काली के सभी प्रमुख अवतारों, उनके नाम-रूपों का विवरण संयुक्त हो गया। आदिशक्ति के नामों की संख्या कुल 120 है। इस पर भी किसी भी नाम की माला जपी जाए, कृपा देशी ही की प्राप्त होती है।

नवार्थमंत्र दुर्गा देवी का सबसे प्रभावशाली मंत्र है, जो साधक की किसी भी समस्या का तथाधान करने में अक्षम है।



नवार्थमंत्र की एक माला नित्य धोने वाले साधक को आपदाओं-अभावों का संत्रास नहीं छेना पड़ता। इसकी विधि यह है कि किसी शुक्रवार या अट्टमी के दिन से यह साधना प्रारंभ की जा सकती है, किन्तु किर भी शुभ मुहूर्त का विचार

अवश्य कर लेना चाहिए।

ब्रह्मज्ञों की अवधि देवी-उपासना के लिए सर्वोत्तम होती है। दुर्गाजी का चित्र, गिर्जा अथवा यंत्र भी पास में अवश्य होना चाहिए। सामग्री के स्थान में लाल चंदन, ताज़ गुम्ब, धूप, लाल वस्त्र, अक्षत, नैवेद्य और शुद्ध धी का दीपक आदि की अवश्य पास से ही कर लेनी चाहिए। पवित्र व एकांत स्थान में देवी की पूजा करके लाल चंदन की भासा से मंत्र-जप करना शीघ्र फलदायी होता है।

विनियोग-

ओम् अस्य नवार्ण मंत्रस्य ब्रह्मा विष्णु-

महेश्वराय, ऋषयः, गायत्री उष्णकृ

अनुष्टुपः छन्दोंसि, महाकाली महालक्ष्मी,

महासरस्वत्यः देवताः, नदिना शाकंभरी

भीमा: शक्तयः रक्तदीतिका दुर्गा भ्रामयो

बीजानि, हौं कीलकम्, अग्नि वायु सूर्य-

स्तत्यानि, सकल कार्य निर्देश जपे विनियोगः।

प्रान-स्तुति-

उद्घतभानु सहस्रकांति भरुणक्षीमां शिरोमालिकाम् ।

रक्तालिप्न प्रयोधरां जपवर्णी विद्यामधीति वरम् ॥

हस्तामैदंपत्ती त्रिनेत्र विलसदक्षारविद्यश्रियं ।

देवी बद्ध हिमांशु रत्नमुकुटां वकेऽविन्दित्यताम् ॥

मंत्र-

ओम् एं हीं कर्लीं चामुण्डाये विच्वे

ओम् एहों हुं कर्लीं जूं सः ज्वालय

ज्वालय ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल

एं हीं कर्लीं चामुण्डाये विच्वे

ज्वल हं सं कं फट् स्वाहा ।

आवश्यकता और प्रयोग-मेद के आधार पर इस मंत्र के अनेक रूप निर्मित किए गए हैं। साधक लोग इनमें से किसी भी मंत्र का जप कर सकते हैं। विनियोग और प्रयोग-स्तुति सभी एक समान हैं, तथा सभी नवार्णमंत्र हैं। इनकी साधना-विधि एक ही है।

सर्वार्थसिद्धि का मंत्र

ओम् ए ही कर्ता चामुण्डायै विच्छे।
ओम् इहो हुं कर्ता नूं सः
ज्वालय ज्वालय ज्वल ज्वल
प्रज्वल प्रज्वल ए ही कर्ता चामुण्डायै विच्छे
ज्वल हं सं लं कं फट् स्वाहा।

स्तंभनमंत्र सिद्धि

ओम् ठं ठं ए ही कर्ता चामुण्डायै विच्छे
...नाम... हीं वाचं पुष्टं पदं स्तंभय
हीं जिस्वां कीलय हीं तुदि विनाशय
हीं ठं ठं ठं स्वाहा।

उच्चाटनमंत्र सिद्धि

ओम् ए ही कर्ता चामुण्डायै विच्छे
...नाम... फट् उच्चाटनं कुरु कुरु स्वाहा।

विद्वेषणमंत्र सिद्धि

ओम् ए ही कर्ता चामुण्डायै...नाम...
विद्वेषणं कुरु कुरु स्वाहा।

मारणमंत्र सिद्धि

ओम् ए ही चामुण्डायै विच्छे
...नाम....रं रं से से मारय मारय
भीष्मं भस्मी कुरु कुरु स्वाहा।

बशीकरणमंत्र सिद्धि

बषट् ए ही कर्ता चामुण्डायै विच्छे
...नाम...बषट् मे बस्त्रं कुरु कुरु स्वाहा।

मोहनमंत्र सिद्धि

ओम् कर्ता कर्ता ओम् ए मैं कर्ता
चामुण्डाये विच्छे ...नाम... कर्ता कर्ता
मोहनम् कुरु कुरु कर्ता कर्ता स्वामा।

नोट- उपर्युक्त शंत्रों में वाहित व्यक्ति का नामोच्चारण (...नाम...) प्रिया स्वाम
ए नाम के स्थान पर करें।

विवेच- मोहनमंत्र सिद्धि में तत्त्व कलश में जात कुओं का जल तेका उसमें
जल का पत्ताव रखना चाहिए। प्रतिदिन स्नान के समय में थोड़ा-सा यह जल अपने
झीर पर अवश्य ही छिड़कना चाहिए। साधनाकाल में पीता रंग ही अधिक प्रयुक्त
होता है। अर्थात् साधक को पीले ही बस्त्र पहनने चाहिए और पीले घटन का तितक
गाये पर लगाना चाहिए। आसन भी पीले रंग का ही हो। साधक का मुँह पश्चिम
की ओर रहना चाहिए।

मंत्र की सिद्धि सदा लाख मंत्र-जप से होती है, तथा बारह ताल मंत्र का जप
गुर्ज बाना जाता है। बझीकरण साधना (मंत्र-सिद्धि) के लिए किसी भी जलाशय के
नज़ीप, इवेतासन पर विराजमान होकर, दक्षिण की ओर मुँह करके, श्वेत बस्त्र धारण
कर, गोस दिनों में सदा लाल मंत्र का जप करने से सिद्धि सहज ही प्राप्त हो जाती
है। उच्चाटन, मारण, विद्वेषण और स्तंभन के प्रयोग अधिवार कर्म बाने गए हैं। ऐतिक
दृष्टि-से भी इनका प्रयोग करना अनुचित है। कोई भी सिद्धि आपने प्राप्त की हुई
हो, उनमें से केवल उन्हीं सिद्धियों का प्रयोग करना चाहिए, जो दूसरी और लाल के
हिए हों। किसी का दुरा करना तो दूर की बात है, दुरा सोचना तक भी सर्वदा यत्त
है। सदैव दूसरों का भला कीजिए।

बहां पाठकों (साधकों) को हम एक बार फिर-से बता देना चाहते हैं कि तत्र
या मंत्र की साधना करते समय उस पर पूर्ण श्रद्धा रखना नितांत आवश्यक है, अन्यथा
वाहित फल की प्राप्ति का फल कभी न मिल सकेगा। मंत्र और तंत्र साधना के समय
झीर का पूर्ण रूप-से स्वस्य एवं परिवर्तन रहना आवश्यक है।

चित्त शांत रहे और मन में भी किसी प्रकार की गलानि नहीं होनी चाहिए। पवित्र
और एकांत स्थान पर ही साधना करनी चाहिए। साधनाकाल में कोई रोकने-ठोकने
शात्रा भी नहीं होना चाहिए। जिस मंत्र की जैसी साधना विधि वर्णित है, उसी के अनुस्य
सभी कर्म करने चाहिए। परिवर्तन करने से विज्ञ-बाधाएं उत्पन्न हो सकती हैं तथा
सिद्धि-प्राप्ति में भी बाधा आ सकती है। उवित तो यही है कि शुभ-मुहूर्त का विवाह

करके, योग्य गुह से दीक्षा ले और उसी के कहे अनुसार कार्य का प्रारंभ करें। जिस मंत्र की जितनी संख्या वर्णित है, उतनी ही संख्या में जग-हृष्टम काम चाहिए, तथा दिशा का भी विशेष ध्यान रखना चाहिए। एक बार में एक ही गोप्या मंत्र की साधना करनी चाहिए और इसी प्रकार उसका प्रयोग करना चाहिए। जग-सी मूल से लेने के देने पड़ सकते हैं।

देवस्वरूपों की मंत्र सिद्धियाँ

विभिन्न देवी-देवता ईश्वर का ही स्वप्रतिरूप हैं, इसका कारण यह है कि तीनों लोकों का ईश्वर एक ही है। किसी भी देवता की साधना की जाए, उसका अर्थ एक ही है; ईश्वर का सामुज्य प्राप्त करना। प्रत्येक शक्ति का अपना ईश्वर देवता होता है; किसी का शिव, किसी का नृसिंह, तो किसी के राम या कृष्ण। किसी भी एक देवता को दूसरे से छोटा नहीं समझना नहीं चाहिए। सबमें अलौकिक-शक्तियाँ विद्यमान हैं। अपने साधकों को वो उन्हीं से लाभावित करते हैं। तब साधक भी अलौकिक शक्तियों से परिपूर्ण हो जाता है। ऐसी शक्तियाँ प्रस्तुत देवताओं की सिद्धियों में सहज ही प्राप्त हो जाती हैं।

पंचाक्षरीशिवमंत्र साधना

विनियोग—

ओम् अस्य श्री विवर्णवासी मंत्रस्य
वामदेव ग्राहिः, पंकितश्लोदः, ईशानो
देवता, ओम् बीजम् नमः शक्तिः
विवायेति कीलकम् चतुर्विंश्य पुरुषार्थ
सिद्धयर्थे न्यासे विनियोगः।

व्याख्या-

प्यायेन्नित्यं यहेऽम रजसमिरि निधं धार चंद्राकालसम्
रत्नाकल्पोऽवतांगं परशु मगवराभीतिहसं प्रसन्नम्
पद्मासीनं सम्मताल्लुतम् भरगाये व्याघ्र कृतिं वरसानम्
विश्ववायं विश्ववीर्यं निरित्तप्रद्वहरं पंचवक्त्रं त्रिनेत्रम्।

मंत्र—

ओम् नमः शिवाय।

ब्रह्माण्डशिवमंत्र साधना

विनियोग-

ओम् अस्य श्री शिवाण्डासाम र्पत्रम्
वामदेव ऋषिः, पवित्रशुलः, उपापतिः
देवता, सर्वोष्ट सिद्धये विनियोगः।

ज्ञान-स्तुति-

चंदूक सन्निभं देवं विनेत्रम् चंद्राशेषाम्
विशूल धारिणं वदे चारु हासं सुनिर्भलम्
कथालधारिणं देव वरदाप्य हस्तकम्
उमासहितं शंभु प्यायेल्लोमेश्वरं सदा।

पंतः-

हीं ओम् नमः शिवायः हीं ।

पंतशरी मंत्र की भाँति यह भी शिव का आठ अक्षरों से रवित मंत्र है। अनुष्ठान
और दैनिक पूजा के लिए इसका जप भी बहुत प्रभावकारी माना जाता है। निम्न
सूचियों के जप-मात्र से भी साधकों को शाँति और सुरक्षा मिलती है।

कर्म गौरं करुणा वतारं
सत्तार सारं भुजर्णेद हारम् ।
तदा ब्रह्मन्तं हृदयार विन्दे
भवं भवानि सहितं नमामि ॥ ।
कथांके च विभाति
भूपर मुला देवापणा भस्तके ।
भाले चाल विषुर्गले च गरलं
स्त्री गंगा व्यालराट् ॥
तोऽप्य भूति विभूषणः
हुम्हः सर्वा शिष्यः सर्वदा ।
सर्वे गवंगतः शिष्यः
शिवि निमः श्रीशंकर पातुभाम् ॥ ॥

नैतर्यनारायणमंत्र साधना

साधकों को यह बात अच्छी तरह जान लेनी चाहिए कि साधना के पश्चात् अध्यव-

साधना के पूर्ण हो जाने पर ही अलौकिक-सिद्धियों की प्राप्ति होती है।

धन-प्राप्ति तथा आर्थिक समृद्धि के लिए इस मंत्र का जप अवश्य करना चाहिए। दूसरों के लाभार्थी भी इसकी साधना हितकर है।

विनियोग-

ओम् अस्य श्री लक्ष्मीनारायणं मंत्रस्य
प्रजापतिं ऋषिः, गायत्री मुण्डः,
वासुदेवो देवता, वधार्थं कामं
मोक्षार्थं जपे विनियोगः।

आन-स्तुति-

विष्णुत् चंद्रनिष्ठं चपुः कमलाना वैकुंठयोरेततम्
प्राप्तं स्नेहवशेन रत्नं विलसत् भूषाभरातंकृतम्
विष्णा फंकज दर्पणांमणिषयं कुंभं सरोजं गदाम्
शालं चक्रमधूनि विद्युषितां दिभ्या श्रियंवः सदा।

मंत्र-

ओम् हीं हीं श्रीं श्रीं लक्ष्मीवासुदेवाय नमः।

यक्षपतिमंत्र साधना

यक्षपति कुबेर हीं हैं, जो अतुल धन-संपदा के स्वामी हैं। इनकी साधन रस से साधक को द्रव्य और धन की प्राप्ति होती है। धन की वाहना करने वाले हैं यह साधना अवश्य करनी चाहिए। नये साधकों को हम यह बता दे कि उप देवी-देवताओं की साधना करने का ढंग एक जैसा ही है। अर्द्धात् विष्णु या प्रतिष्ठा को प्रतिष्ठित करना, उनसे संबोधित चंदन और पुष्प अर्पित करना। धूप, दीप, उड़ी और नैवेद्य आदि को प्रयुक्त करना। फिर विनियोग, आन और मंत्र-जप इसी

ताल-साडा ताल संत्र जप के पश्चात् साधक अलौकिक-शक्तियों से परिपूर्ण अवश्य हो जाता है। यहीं सिद्धि है। यहाँ यह बताना इसलिए भी अवश्यक हो जाता है कि संघर्षतः नये साधकों को हमारी प्रस्तुति में कहीं भी अद्योपेन का अहसास न हो। कोई साधक यह भी न समझे कि हमारा विषय यहाँ मात्र मंत्र देना ही है। प्रत्येक साधना या सिद्धि में मंत्र ही महत्त्वपूर्ण हैं। विना मंत्रों के साधना का ग्राहन नहीं किया जा सकता और विना मंत्र-जप के सिद्धि-प्राप्ति के काल तक पहुंचना सहज असंभव ही होगा।

निम्न साधना निर्धनता निवारण के लिए अन्युत्तम है।

विनियोग-

ओम् अस्य कुबेर मंत्रस्य विश्वा कथि,
बुहतो छंदः, शिवपित्र पनेश्वरी देवता,
पशाभीष्ट सिद्धये जये विनियोगः।

व्याख्या-स्तुति-

मनुज बाह्य विमान वर स्थितं
गरुड रत्न निभं विषि नायकम्।
शिव सलं मुकुटादि विभूषितं
कर गदे दधतं भज तुन्दितम् ॥

मंत्र-

ओम् यज्ञाय कुबेराय वैश्वरणाय
घन-धन्या दिपतये धन-धान्य
तमृद्धि ये देहि दापय स्वादा । 1
ओम् श्री ओम् ही श्री ही
वर्ती श्री वर्ती वित्तेश्वराय नमः । 2
उपर्युक्त दोनों मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का जप किया जा सकता है।

नृसिंहमंत्र साधना

भूत-प्रेत वाधा, भय-संकट, दुर्घटना, शशुओं द्वारा किये गये आळमणों से रक्षा
हेतु यह मंत्र-साधना अद्वितीय है।

विनियोग-

ओम् अस्य श्री नृसिंह मंत्रस्य लक्षा कथि,
अनुष्टुप छंदः, सुरासुर नमस्कृत नृसिंहो—
देवता, सर्वेष्ट सिद्धयेव जये विनियोगः।

व्याख्या-स्तुति-

माणिक्यादि समप्रथं निजरुचा संत्रस्त रसोगणम्
जानुन्यस्य करांबुजं श्रिनयनं रत्नोल्लसस्तु भूषणम्
वाहूम्यां पृत शंख चक्रमनिभं देहाय वर्षोल्लसस्तु
ज्वाला जिव्यमुदग केश निचय वदे नृसिंह विषुम्।

मंत्र-

ओम् उडाकीरं महाविष्णु ज्वलंतं सर्वतोमुखम्
नृसिंहं भीषणं यदं मृत्युं मृत्युं नवास्यहम् ।

बहुणमंत्र साधना

बहुण जल-नल्त्य के अधिपति हैं। इनकी कृपा-टूटि से अकाल तक की तुला समाप्त हो जाती है। जल-नीचन इन्हीं के द्वारा संभव है। इसका साधक सिद्धि प्राप्त करने के पश्चात् चर्चा तक करने में सहम हो सकता है, ऐसी किंवदंती है।

विनियोग—

ओम् अस्य बहुणं बंजस्य, वशिष्ठं क्षमि,
विष्णुप्य छंदं, बहुणो देवता
संकेटं लिहये जपे विनियोगः ।

व्यान-स्तुति—

चन्द्रं प्रथं पंकजं सन्निष्ठम्य,
पाञ्चां कूचीं भीति वरं दधानम् ।
मुक्ता विभूषां वित लवं गामं,
प्यापेत् प्रसन्नं वरम् विभूषे ॥

मंत्र-

ओम् प्रुवातु त्वातु लिलिषु लिषं
तोषं अस्मत्याशं, बहुणो मुषोधत्
अवो वन्वानां अदिते रूपस्वाधूयं
पात् स्वातितिपिः सदा नः स्व ।

बदुकमंत्र साधना

बदुक साधना पौर्य है। इनकी कृपा से साधक के तभी बलेश, संकट और अभाव मिट जाते हैं। सिद्धि प्राप्ति के पश्चात् प्रयोग रूप में मंत्र का जप करना हो, तो उसे पानसिक रूप में स्परण कर लेना चाहिए।

किन्तु ब्रह्मार्थ, मुद्दाता, एकाहार और शूष्मि-शयन (जमीन पर सोना) का नियम-पालन अनिवार्य है। इसका विनियोग और व्यान-स्तुति पूर्ण यर्थात् है।

मंत्र—

ओम् ही बदुकवद आपदुदरण्डय
कुरु कुरु बदुकाय ही ।

उपरोक्त मंत्र का प्रयोग सामान्यतः शारीरिक, पारिवारिक, सुख-सूखि, अलान-लाभ, धन-वेषभव और विद्या आदि को पूर्ति करने का काम किया जाता है।

बाराहपंत्र साधना

विनियोग—

ओम् अस्य श्री बाराह पंत्रस्य
धार्गव ऋषिः अनुष्टुप् छंदः
आदि बाराह देवता सर्वेष
सिद्धये जपे विनियोगः ।

प्रान-सूति—

आपादं जानुदेशाद्वरं कनक—
निधं नाथिं देशाद्वस्तात्
मुक्ताभं कण्ठदेशात्तरण
तविनिभं मस्तकानीतभासम्
इति हस्तोर्दिष्यानं रथ चरण चौर
खड्ग खेटी गदा स्थापू
शक्तिं दानाभये च लिति—
धरण लसत् दंष्ट्रमायम् बराम् ।

मंत्र—

ओम् नमो भगवते बाराहरूपाय भूर्भुवः स्वः
स्पात्यते भूपतित्वं देष्यते ददापय स्वाहा ।
उपर्युक्त सिद्धि विष्णुजी की ही है। उन्होंने बाराह रूप में भी अवतार लिया
था। इसके प्रयोग से आपदा, भय, शत्रु का आतंक और मुख से रक्षा होती है।

□□

देवी भैरवी की सिद्धियाँ

किसी भी देवी-देवता की सिद्धि प्राप्त करना यदि अतंभव नहीं है, तो सरल थी नहीं है। प्रत्येक कार्य को पूर्ण विधि-विधान के साथ संपूर्ण करना होता है, तथा सिद्धि-मूल के एकेक अक्षर का उच्चारण शुद्ध करना पड़ता है। उच्चारण में जरा-सी गलती होने पर सारी साधना पूर्णित हो जाती है। भैरवी की सिद्धियाँ प्राप्त करने में तो नियमों का पालन बहुत अधिक करना पड़ता है, तथा अन्य सिद्धियों के मुकाबले में देवी भैरवी की सिद्धियों के नियमों में कुछ अंतर तो अवश्य है।

यहाँ हम कुछ विशेष नियमों का उल्लेख कर रहे हैं, जिन पर ध्यान देना प्रत्येक साधक के लिए अत्यंत आवश्यक है।

प्रथमावस्था में नित्य-क्रिया से निवृत्त होकर ग्रातः शुद्ध जल से स्नान करें और शुद्ध वस्त्र धारण करके पूरब या उत्तर दिशा की ओर मुख करके ऊन अथवा कुशासन पर बैठें। पद्मासन की स्थिति में बैठना सबसे उत्तम है।

फिर आचमन और प्राणायम करके अपने गुरु का स्मरण करें। कोई गुरु न बनाया हो, तो अपने इष्ट देवी या देवता का स्मरण करें।

ओम् गुरुभ्यो नमः ।

उपरोक्त मंत्र बोलकर, घस्तक छुकाकर प्रणाम करें, तथा निम्न मंत्रों से सूचित स्थानों पर तत्त्वमुद्ग (मध्यमा, अनामिका और अंगुष्ठ के अंग्रेम पर्व मिलाने से तत्त्वमुद्ग बनती है) द्वारा स्पर्श करते हुए यह बंदना करें—

बाएँ कंधे पर—

गुं गुरुभ्यो नमः ।

बाएँ कंधे पर—

गं गणपतये नमः ।

बायीं जाव पर—

दुं दुर्गाये नमः ।

बायीं जाव पर—

सं क्षेत्रपालाय नमः ।

हृदय पर—

पं परमात्मने नमः ।

इसके पश्चात यदि—

वैष्णव मंत्र हो, तो—

ओम् सहस्रार हुं कट् ।

श्रीव मंत्र हो, तो—

ओम् श्ली पशु हुं कट् ।

उपर्युक्त मंत्रों से इतर मंत्र हो, तो ब्रह्मास्व यज्—“ओम् तपः सत्यात्मने भूत्वाय कट्” से बायीं हथेली से दाहिने हाथ की कोहनी से हथेली तक तथा दाहिनी हथेली

में बारे हाथ की कोहनी तक स्पर्श करे और, "ओम् ततः सत्याहने असत्यम् पद्" बोलते हुए तीन बार ताली बजाने का उपक्रम करे और चारों दिशाओं में मूल धैर्य कूँक घुटकी बजाते हुए दिव्यधन करे। तत्पश्चात् शरीर की बहनी भूत-शुद्धि के लिए निम्न इलोक का उच्चारण करें—

अपसर्पन्तु ते भूता ये भूता भूषि सुस्थिता:
ये भूता विज्ञकर्तारस्ते नश्यन्तु शिवाज्ञाया
अपकामन्तु भूतानि पिशाचाः समैतो दिशम्
सर्वेषामविरोधेन पूजाकर्म समाप्ते।

उक्त इलोक का उच्चारण करके, सभी दिशाओं में प्रणाम करे और बारे धैर्य की छड़ी को तीन बार धरती पर हल्के-से पटकें।

तदनंतर पूजा के अधिकार की सिद्धि के लिए ऐरव की प्रार्थना निम्न रूप-से हो—

तीर्णदंष्ट्र महाकाय कल्पांतदहनोपम
ऐरवाय नमस्तुप्यमनुज्ञां दातुमहसि।

फिर मन में यह भावना करें कि मुझ पर कृपा करके ऐरव ने आजा प्रदान कर दी है। अब दीपक का स्थापन कर, उसकी प्रार्थना करें—

भो दीप ! देवस्तपस्तं कर्मसाक्षी स्यविज्ञकृत
यावत् कर्मसमाप्तिः स्यात् तावत् त्वं सुस्थिरो भव।

इसके बाद चंत्र, प्रतिमा या चित्र में अपने इष्टदेव (या देवी) का व्यान करके लूं करें। पूजन इस प्रकार से करें—

संकल्प—

विष्णुविष्णुविष्णुः श्रीमद्भगवतो महापुरुषस्य
विष्णोराज्ञाया प्रवर्तमानस्य अथ ब्रह्मणो दिवीये
परादें श्रीवेत्याराहकल्पे कैवस्वतमवंवतो अश्वा-
विंशतितमे कलियुगे कलिप्रथमधरणे भास्तव्ये...
अमुक....स्थाने श्रीशालिवाहनशके...संवत्सरे...
अवने... कृतो... यासे... पसे... तिथो... वासे
...गोश...मधात्मनः शुलिस्मृतिपुराणोवत्कल
प्राप्तवर्थ श्री...देवदीत्यर्थ पूजनवहं करिष्ये।
वहुत हाथ में जल, अक्षत और पुण्य लेकर संकल्प करें। संकल्प में रिक्त स्थानों

पर शक्त सवत्, पास, पक्ष और तिथि की संख्या बोलें तथा वार, गोत्र, अपना नाम
एवं जिस देवता की पूजा करनी हो, उसका नाम लेकर जल छोड़ें।

पूजन-विधि—

पूजन या पूजा के लिए धैदिक एवं पीराणिक मंत्र अनेक हैं, तथा पंचोपया,
बोड्योपचार, राजोपचार आदि अनेक विधानों से पूजा की जाती है। यहाँ हम केवल
बोड्योपचार-पूजा के प्रकार का उल्लेख कर रहे हैं। पूजा करने वाला साधक प्रत्येक
समर्पण वाक्य से पहले अपना इष्टपंत्र बोले और फिर पूजन-क्रिया करें। जैसे—

ओम् (अपना इष्ट मंत्र) 1

आवाहनं समर्पयामि । 2

आसनं समर्पयामि । 3

पादं समर्पयामि । 4

अध्यं समर्पयामि । 5

आचमनीयं समर्पयामि । 6

स्नानं (पंचमृतसहित) समर्पयामि । 7

बहुबोधवल्ये समर्पयामि । 8

यज्ञोपवीतं समर्पयामि । 9

गंधं समर्पयामि । 10

पुष्पाणि समर्पयामि । 11

शूपं समर्पयामि । 12

दीपं समर्पयामि । 13

मेवेदं समर्पयामि । 14

नीशजनं समर्पयामि । 15

पंत्रपुष्पांवसि समर्पयामि । 16

नमस्कारान् समर्पयामि । 17

प्रदक्षिणां समर्पयामि । 18

अब यदि कोई स्तोत्र अपने इष्टदेव का आता हो, तो यहाँ उसका पाठ को
अन्यथा अपने पुरोहित से जानकारी प्राप्त करें। फिर “अनया पूजया श्री...देव
प्रीयताम् मम” बोलकर जल छोड़ें।

भैरवी-सिद्धि के मंत्र से पहले की प्रक्रिया

मंत्र-जप के प्रमुख अंगों में भू-शुद्धि, भू-शुद्धि, प्राण-प्रतिष्ठा, अंतर्मातृकांशक

और द्विमातृकायास का बड़ा महत्व है। प्रतिदिन जप करने से पूर्व यह किया करने से भीर तथा बाहरी बातावरण में दिव्यता आ जाती है।
शास्त्रों में कहा गया है—

देवो भूत्वा देवं भवेत् ।

अर्थात् देवता बनकर, देवता की पूजा करें। इसलिए अपने आपको इन विभिन्न प्रक्रियाओं द्वारा शिवरूप बना लें। इसकी सामान्य विधि निम्न है—

मृशुदि- हाथ में जल लेकर अगली प्रक्रिया करें।

विनियोग—

भूरसीत्यस्य प्रजापतिर्विधिः पातृका देवताः

प्रस्तारपञ्चितश्छङ्दः भूतुदो विनियोगः ।

वह कहकर जल छोड़ दें। फिर पूछी के सामने दोनों हाथ फैलाकर प्रार्थना करें—

ओम् भूरसि भूमिरस्यदितिरसि विश्वसाया

विश्वस्य भुवनस्य षत्रीं पृथिवीं वच्छ

पृथिवीं दृहं पृथिवीम्मा दिसीः ।

भूत-शुद्धि- इवास की वायु को नासिका के बाएं भाग से अंदर खींचकर करें—

मूल धूंगाटज्जीवशिवं परमजिवे योजवामि स्वाहा ।

उपरोक्त मंत्र से जीवात्मा का परम शिव के साथ एकीभाव मानकर दाहिने भाग से इवास छोड़ें।

नासिका के दाहिने भाग से पूरक करते हुए, 'यं' शीज का सोतह बार तथा कुंभक में चौसठ बार बोलकर, 'संकोचशरीरं शोषय शोषय स्वाहा' बोलें और बाएं भाग से, 'षं' बोलते हुए इवास छोड़ें। तदोपरांत नासिका के बाएं भाग से उपरोक्त विधि से, 'ऐं' बोलकर (जपकर), 'संकोचशरीरं दह दह पच पच स्वाहा' बोलें और पुनः पूर्वतु, 'ऐं' जपकर दाहिने भाग से इवास छोड़ें। अब, 'टं' से पूर्ववत् दाएं भाग से पूरक और कुंभक करें और निम्न षत्र बोलकर अर्थात् जप करके हुए रेचक करें।

चंद्रमण्डलं विभावय विभावय स्वाहा ।

इसके पश्चात्, 'बं' से नासिका के बाएं भाग से पूरक और कुंभक करके, वह खींचकर रेचक करें—

परमजिवामूलं वर्षय वर्षय स्वाहा ।

अब, 'लं' से पूर्ववत् दाहिने भाग से पूरक-कुंभक कर, निम्न षत्र जपकर रेचक करें—

आम्भवशारीरमुत्पादयोत्पादय स्वाहा ।

पूर्वोक्त की भाँति, 'हीं' से बायीं और से पूरक-कुभक में निम्न मंत्र कहने,
दाहिने भाग से जप करते हुए रेचक करें—

कारणशारीरमुत्पादयोत्पादय स्वाहा ।

तत्पञ्चात् 'हंसः सोहं' मंत्र से पूर्ववत् दाहिनो और से पूरक करके कुभक को
और निम्न मंत्र लोलकर रेचक करें—

ओम् अवतार अवतर शिवपदाद् जीव

सुषुम्णपदेन प्रविभूतशंगाटकमुल्लसोल्लस

ज्वल ज्वल प्रज्वल प्रज्वल हंस सोहं स्वाहा ।

आत्मप्राण-प्रतिष्ठा—

जिस ओर का श्वास चल रहा हो (पूरक श्वास लेने को, कुभक श्वास अंदर
ही रोकने को और रेचक श्वास छोड़ने को कहते हैं। प्राणायाम में इन सभी बातों
का समावेश है), उसी ओर से पूरक कर बोलें—

ओम् एं हीं श्रीं ।

हृदय पर दाहिना हाथ रखें और, 'आं सोहं' मंत्र का तीन बार उच्चारण कर
रेचक करें। फिर इष्ट मंत्र द्वारा प्राणायाम करें।

अंतर्भूतकांयास (विनियोग)—

अस्यन्तर्भूतकामंत्रस्य ब्रह्मा ऋषिः गायत्रीछंदः,

मातृकासरस्कती देवताः, हलो बीजानि, स्वरः:

शक्तादः हां कीलकं मातृकांयासजपे विनियोगः ।

ऋग्यादिन्यास—

अं ब्रह्मण्ये नमः आं 'शिरसि' ।

ईं गायत्रीछंदसे नमः ईं 'मुखे' ।

उं मातृकासरस्कती देवताद्ये नमः ऊं 'हृदये' ।

एं हलभ्यो बीजेभ्य नमः एं 'मुट्ठ्ये' ।

ओं स्वरशक्तिभ्यो नमः ओं 'पादयो' ।

अं हां कीलकाद्य नमः अः 'नाभौ' ।

विनियोगात् नमः 'हृवर्गे' ।

कहिमातृकान्यास-

अं क लं गं गं चं आ
अं ई चं उं जं झं जं ई
अं उं हं ठं डं घं ऊ
अं ए तं वं दं धं नं ए
ओं ओं घं फं चं भं मं ओं
अं घं रं लं वं शं घं सं हं अः

(प्रथम वार)
अंगुष्ठाभ्याम् नमः
तज्जनीभ्यां०।
मध्यमाभ्यां०।
अनाभिकाभ्यां०।
कनिष्ठिकाभ्यां० नमः।
करतलकरस्तुष्टाभ्यां०।

(द्वितीय वार)
हृष्णाम् नमः
किंसेऽ०।
शिलाप्य०।
कवचाप्य०।
नेत्रप्रसाप्य०।
अस्वाप फट०।

यान-

पंचाश्चलिपिभिर्विभज्य मुखदोहत्यदृष्टवक्षः स्वलां,
पास्वन्मौलिनिवद्यन्दशकलामा पीनतुंगसतनीम् ।
मुद्रामक्षणुणं सुधादूयकलशं विदांच हस्ताम्बुने-
विष्णाणां विशदप्रभां त्रिनयनां वाग्देवतामाश्रये॥

तदनंतर निम्न क्रम से मातृकान्यास करें—

ओ॒म् अं आं इं अः, कठे ।
ओ॒म् कं लं गं हं, हृष्णे ।
ओ॒म् उं ठं ऊं फं, नाथो ।
ओ॒म् वं भं मं लं, तिर्गे ।
ओ॒म् वं शं घं सं, गुह्ये ।
ओ॒म् हं शं, भुवोर्मध्ये ।

यान-

आपारे लिंगनाभी हृदयरससिंगे तालुमूले ललाटे,
हु एवे षोडशारे दिदशदशदले दादशादें चतुष्के ।
आसाते वालमध्ये डफकठसहिते कंठदेशे स्वराणा,
१ ई तत्त्वार्थपुक्तं सकलदलगतं वर्षस्य नमामि ।.....
कर्णगी वर्णमालांगी भास्तीं भाललोचनाम्
स्त्रीमहामानां देवीं वदेऽहं सिद्धमातृकाम् ।.....²

कहिमातृकान्यास (विनियोग)—

अस्य श्री बहिमातृकान्यासस्य ब्रह्मा कथि-
देवी गायत्रीछुंदः बहिमातृकासारस्ती देवता

हतो वीजानि स्वरः अवतयः विदयः कीलक
बहिर्मातृकान्यास जये विनियोगः ।

ऋष्यादिन्यास-

ओम्	त्रिष्टुपे	नमः	शिरसि ।
ओम्	गायत्रीछंदसे	नमो	मुखे ।
ओम्	बहिर्मातृकासरस्वती देवतायै नमो (हृदये) ।		
ओम्	हत्यो वीजेभ्यो नमो (गुट्ये) ।		
ओम्	स्वरशक्तिभ्यो नमः (पादये) ।		
ओम्	विनुध्यः कीलकेभ्यो नमो (नाभी) ।		
विनियोगाय	नमः		(सर्वांगे) ।
ओम्	अं	नमः	(शिरसि) ।
ओम्	आं	नमः	(मुखे) ।
ओम्	इं	नमः	(दक्षिणनेत्रे) ।
ओम्	ईं	नमः	(वामनेत्रे) ।
ओम्	उं	नमः	(दक्षिणकर्णे) ।
ओम्	ऊं	नमः	(वामकर्णे) ।
ओम्	ऋं	नमः	(दक्षिण नासापुटे) ।
ऋं	तृं	नमः	(दक्षिणकठोले) ।
ओम्	त्रृं	नमः	(वामकठोले) ।
ओम्	एं	नमः	(ऊर्ध्वदंतपंक्ती) ।
ओम्	ऐं	नमः	(अपोदंतपंक्ती) ।
ओम्	ओं	नमः	(ऊर्ध्वोष्ठे) ।
ओम्	औं	नमः	(अपरोष्ठे) ।
ओम्	अं	नमः	(जिह्वामूले) ।
ओम्	अः	नमः	(प्रीत्वायाम्) ।

इसी प्रकार 'क' से 'ङ' तक 'ओम्' तथा 'नमः' लगाकर दाहिने हाथ के की फोहनी, मणिवंश, उंगलियों के मूल पर तथा उंगलियों के अग्र पाग पर न्यास की फिर बाएं हाथ के पांचों भागों पर 'ओम्' तथा 'नमः' लगाकर 'च' से 'ञ' तक फिर दाहिने पैर और बाएं पैर पर क्रम से 'हं' से 'ण' और 'तं' से 'नं' तक न्यास करो ।

ओम्	ं	नमः	(दक्षिण कुशी)।
ओम्	फं	नमः	(वाम कुशी)।
ओम्	वं	नमः	(पृष्ठे)।
ओम्	भं	नमः	(नाभी)।
ओम्	मं	नमः	(उदरे)।
ओम्	शं	नमः	(हृदये)।
ओम्	रं	नमः	(दक्षिणस्कंथे)।
ओम्	लं	नमः	(शक्रमृष्टे)।
ओम्	वं	नमः	(शमस्कंथे)।
ओम्	शं नमः	(हृदयादिदक्षिणामहस्तांत्रम्)।	
ओम्	वं नमः	(हृदयादिवामहस्तांत्रम्)।	
ओम्	सं नमः	(हृदयादिदक्षिणादांत्रम्)।	
ओम्	हं नमः	(हृदयादिवामपादांत्रम्)।	
ओम्	जं नमः	(उदरे)।	
ओम्	कं नमः	(मुखे)।	

नोट— यहाँ शिरसि से मुखे तक जो स्थान बताए गए हैं, उन पर तत्त्व मुद्रा
में स्थान करें।

प्राप्त-

पंचाशास्त्रार्थमेदेविहितवदनदोः पादयक्षुक्षिवशो-
देशां भास्वल्कपदाकलितशाश्विकशमिदुकुंदावदाताम् ।
अक्षस्ववकुंभविंतालिखितवरकरां वीक्षणामवस्था-
मध्याकल्पामनुष्टुस्तनधनभरां भारतीं तां नमः॥

माला-शुद्धि-

विस किसी पी माला को जप के लिए प्रयोग में लाना हो, पहले उसकी शुद्धि
सिंक अवधंत आवश्यक है। बिना शुद्ध की हुई माला का प्रयोग करना अर्थ है। ऐसी
माला के ढारा भंत्र-जप करने से कोई लाभ नहीं होता है। माला का शुद्धिकरण निम्न
स्तरमें करें—

सबसे पहले गाय का ताजा दूध, दही, धी, ताजा गोबर और प्रस्तः का गोमूत्र,
उन तीव्रको विद्युती के एक पात्र में डालकर और मिलाकर, उसमें धोड़ी-सी कुशा (उभ)

डाल दें। तत्पश्चात् गायत्री मंत्र से उसका प्रधानन करें। फिर पीछले के पत्तों पर भाला रखकर उसे गंगाजल से स्नान कराएं।

इसके बाद माला को हाथ में रखकर उसमें ओम् अं आं इं ई उं ऊं क्रं क्षं कृं तृं सं एं औं ओं अं आः कं खं गं घं ङं चं छं जं छं अं हं ठं डं ढं णं तं वं दं धं नं पं फं चं घं भं यं रं लं वं झं षं सं हं झं कं ओम्; इन मातृका वर्णों का न्यास करें, तदनन्तर निष्प भंगों का उच्चारण करते हुए माला की पूजा करें।

ओम सद्योजातं प्रपद्यामि सद्योजाताय वै नमो नमः ।

भवे भवे जातिभवे भवस्व मा॒ भवोदुभवाय नमः ॥

ओम् सर्व-शक्ति स्वरूपिण्ये शीघ्रालायै नमः, वंदनं समर्पयामि ।

ओम गात्रेद्याय नमो व्येष्याय नमः

रुद्राय नमः कालाय नमः कलविकराणाय

नमो बलविकरणाय नमो बलाय नमो

चलप्रभवनाय नमः सर्वभूतदप्तनाय नमो

पर्यावरण विभाग |

ओम् सर्व-शक्तिं स्वरूपिण्ये श्री मातायै नमः, अक्षतान् समर्पयामि ।

ओम् तत्युहाय विद्महे, महादेवाय

बीमहि तनो रुद्धः प्रचोदयात् ।

ओम् सर्व-शक्तिं स्वस्मिण्य शीमालायै नमः, पूज्याणि समर्पयापि ।

इसके बाद ऊपर लिखा हुआ 'कामदेवाय नमः' इत्यादि मंत्र शब्दकार मात्रा को

गृह लगाए और नीचे चाला मंत्र बोलकर, माला को अधिमन्त्रित करें।

आमृ इत्यानः सर्वविद्यानामीश्वरः सर्वभूतानाम्
उत्तमिः एव।

विश्वाप्य तत्र स्थानोऽधिप लिङ्गस्ता शिरो
मे

अस्तु सदा शिवोम् ।

फिर उपर्युक्त 'अद्योत्तमोऽस्य पौरीष्यो' मंत्र से माला के सुप्रेरु को अभिमानित करें। मंत्र यह है—

जोप् अपोरिप्तोऽव पीरिभां गोप्येष्व

सर्वेष्यः सर्ववार्त्येष्यो नमस्ते अत्र एव

अत मे हाटमंडे के जपारंभ से पहले भावना थी।

ओम महामात्रे भवत्त्वात् शंकै-

वार्षिक संस्कृत-स्वरूपिणि ।

ओम् अविनं कुरु माले त्वं गहणामि देखिणे करो।
जपकाले च सिद्धये प्रसीद यम् मिद्ये ॥

किंतु माला को गोमुखी में रखकर जग्या किसी शुद्ध वस्त्र से दंफका इच्छावृद्धि
द्वायाप्त करते हुए, यद्याशवित्त जप करें। प्रतिदिन जप-संख्या निश्चित छोड़ नाहिए।
ज्ञाप्त हो जाने के बाद माला को माथे से लगाकर करें—

ओम् त्वं माले। सबदिवानां प्रीतिदा मुभया भव।

शिवं कुरुष्व मे भद्रं यशो वीर्यं, देहि मे ॥

इह मंत्र-जप के पश्चात् ईश्वरापर्ण करने के लिए निम्न वाक्य बोलकर जल
होड़ दें—

अनेन यथासंख्यकजपास्त्रेन कर्मणा
श्री (अमुक) देवः प्रीयताम् न यम्।

मानसरोवरपूजा मंत्र

ओम् लं पृथिव्यात्मकं गंधं समर्पयामि।

ओम् हं आकाशात्मकं पुष्टं समर्पयामि।

ओम् यं बाय्वात्मकं धूपं समर्पयामि।

ओम् रं बह्न्यात्मकं दीपं समर्पयामि।

ओम् वं अपृत्यात्मकं नैवेद्यं समर्पयामि।

ओम् सं सर्वात्मकं तांबूकं समर्पयामि।

माला जपने से पूर्व और ध्यान के पश्चात् इस मानसरोवर पूजा का विधान है।

सुखल मंत्रों से भावना-पूर्वक पूजा करनी चाहिए।

अब हम साधकों को आगे देवी भैरवी की सिद्धियों के बारे में बताने जा रहे हैं। निम्नले पूजा-पद्धति पूर्ण वर्णित है। प्रत्येक भैरवी की सिद्धि प्राप्त करने के लिए
प्रयुक्त विधि का ही आश्रय लेना चाहिए। यदि किसी विधि में अन्तर रखना होगा,
तो उसका साथ-साथ वर्णन भी करते जाएंगे।

नित्या भैरवी

देवी नित्या भैरवी को सिद्ध करने का मंत्र निम्न है—

हृ स्वलद्दूरं हस्तकलद्दूरी हस्तकलद्दूरी ।

‘मानसरोवर’ में वर्णित है कि षट्कूटा भैरवी (इस देवी का वर्णन हम आगे करेंगे)
का विलोप से उच्चारण करने पर नित्या भैरवी का घन घन जाता है।

एकांतावस्था में पूर्ण वर्णित विधि द्वारा पूजा-अर्चना करने के बाद, देवी के लक्ष का एक लालू बार जप तथा दशांश हवन करने से देवी प्रसन्न होकर साधक के साथ हो जाती है।

सकलसिद्धा भैरवी

इस देवी का यह प्रभाव होता है कि यदि साधक उसे प्रसन्न करने में कामयाव हो जाए, तो वो साधक के लिए भविष्यवक्ता बन जाती है। साधना पूर्व वर्णित है और मंत्र यह है—

हूँ स्वर्गी सौं स्वर्णी रहौं।

कामेश्वरी भैरवी

हूँ स्वर्णी नित्य विलंबे वददवे रहौं।

देवी की पूजा इसी मंत्र से करनी चाहिए। सवा तासु उपर्युक्त मंत्र-जप के पश्चात् निम्न मंत्र से समापन करना चाहिए—

ओम् नित्यायै नमः।

ओम् विलंबायै नमः।

ओम् वद इषयै नमः।

नवकूटा भैरवी

ऐं कर्त्ता सौः हूँ सैं हूँ स्वर्णी

हूँ सौं हैं हूँ स्वर्णी हस्त्रौः।

पूर्व विधिनामुगार इस मंत्र का तीन लालू बार, किसी गुफा, खोह आदि में बैठकर जप करना चाहिए। जप पूर्ण हो जाने पर हवन करें। इस क्रिया से देवी सिंह हो जाती है।

कौलेशा भैरवी

विधि पूर्व वर्णित है और सिद्धि-मंत्र यह है—

हूँ स्वर्णी रहौं।

जप-संष्ठान कोई नहीं है। जब तक तिद्दि न मिले, जप करते रहना चाहिए। यह भाव्य की शर्त है कि किटनी जल्दी सफलता मिलती है। दस, बीस, पचास वर्ष भी लग सकते हैं और कुछ सप्ताह में भी देवी की कृपा प्राप्त हो सकती है।

भयविद्धसिनी भैरवी

ह स्त्री हस्तीं हसीं ।

किसी भी एकांत और पवित्र स्थान में, निर्विघ्न रूप-से, नियमानुसार शुद्धतापूर्वक रहते हुए, इस मंत्र का सवा लाख जप जारे । जप-समाप्ति के पश्चात् वहीं जप-स्थान में त्रिकोण हवनकुण्ड बनाकर दृध, थीं और शहद से दंशांश हवन करें, तो देवी सिद्ध हो जाएगी ।

सिद्धि मंत्र त्रिपुरबाला भैरवी के

देवी के प्रमुख दस स्वरूपों में एक बाला त्रिपुरा देवी हैं, जिनकी कृपा प्राप्त हो जाने पर साधक के लिए कुछ भी अलभ्य नहीं रह जाता । यह दहुर ^{मी} प्रभावशाली मंत्र है ।

विनियोग—

ओम् अस्य श्री बाला मंत्रस्य,
दशिणामृति ऋषि, पवित्र—
अहम्, त्रिपुरा बाला देवता,
सौः बीजं, बलीं शवितः, ममा—
भीष्म सिद्धयर्थं गच्छ विनियोगः ।

स्वान-स्तुति—

स्वतान्त्र्या चंद्र कला वत्साम्
शमुषदा दित्य निधा विनेत्रम्
विद्याला भाला भयदान हसीं
व्यायामि बाला यस्तांबुजस्प्याम् ।

पंक्ति—

ऐं बलीं सौः ।

देवी की पूजा इसी मंत्र से करनी चाहिए, तथा पूजा में करन्यास भी नियमानुसार करें ।

करन्यास—

ऐं अगुष्टाभ्यां चमः ।
बलीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ।

सौः पृथ्यमाभ्यां वैषद् ।
 एं अनामिकाभ्यां हुं ।
 वलीं कविष्टाभ्यां वौषद् ।
 सौः करतल कर पृष्ठाभ्यां फट् ।

इसी प्रकार हृदयादिन्यास करना चाहिए। इनके पुरश्वरण (पूर्वावरण) में लाख मंत्र जप करके, जप का दशांश होम तथा होम का दशांश तर्पण करना चाहिए। पुरश्वरण करने वाले को अत्यंत सांभाग्यशाली माना जाता है। देवी के कुछ मंत्र भी हैं, जिनका वर्णन निम्न है—

देवी त्रिपुरबाला का अवधार मंत्र—

एं वलीं सौः ।

देवी त्रिपुरबाला का पंचाशर मंत्र—

एं वलीं सौः सौः वलीं ।

निम्न दोनों मंत्रों के जप से देवी के सुप्तादि दोषों की शुद्धि होती है।

हंसः एं वलीं सौः ।

एं वलीं सौः हंसः ।

देवी त्रिपुरबाला का चतुर्थाक्षर मंत्र—

आं सहरैं हीं साह्कलरीं क्लीं सहरैं ।

देवी त्रिपुरबाला का षोडशाक्षर मंत्र—

आं सहरैं हीं साह्कलरीं कों सहरैं हंसः ।

उपर्युक्त मंत्रों के पुरश्वरण हेतु एक लाख जप करने का विधान है।

रुद्र भैरवी सिद्धि

देवी रुद्र भैरवी शत्रु-विनाशनी हैं। उनके पले को रघुत पीते हुए मुँड़ों की माला सुर्योऽग्निः करती है। लाल आवरण में उनका शरीर दमकता रहता है। उनके हाथों में उम्र खद्ग, विशुल, धनुष, गदा, दो पाश, दो अंकुश, पुस्तक तथा अक्षमाला है। ये सिद्धियाँ पर आकर्षक हैं। विभिन्न प्रकार के आभूषणों से युक्त वो तीन नेत्रों वाली साकारु भवति हैं।

सर्वप्रथम साधक को उनका यंत्र प्राप्त करना चाहिए, जो ताप्तपत्र का रूप है। किसी-न-किसी धार्मिक-स्थल पर अवश्य ही उपलब्ध हो जाता है।

यंत्र को प्रतिष्ठित कर, पूजा-पद्धति से न्यास जादि करें।

ओम् वामायै नमः । ओम् अवेष्टायै नमः ।
 ओम् रोदयै नमः । ओम् कालयै नमः ।
 ओम् कलविकलयै नमः । ओम् बलविकलयै नमः ।
 ओम् बल-प्रमयंयै नमः । ओम् सर्वभूतंदमयै नमः ।
 ओम् मनोमयै नमः ।

तत्पञ्चात् निम्न रूप-से पीठ-मंत्र का उच्चारण करें—

अघोरे ऐं घोरे हीं सर्वतः
 सर्वसर्वेभ्यो घोर-घोर ते
 श्रीनमोऽस्तु रुद्ररुपेभ्यः ऐं हीं श्रीं ।

इसके बाद कम-से ऋष्यादिन्यास, करन्यास करके, देवी का ध्यान करें और
 गूज़-मंत्रों से सुशोभित कर, उनके लिंगि-मंत्र का जप आरंभ करें ।

ऋष्यादिन्यास—

शिरसि दक्षिणामूर्तयै ऋषयः नमः ।
 मुखे पांचितश्छुदं से नमः । हृदि—
 रुद्रधैरभ्ये देवतायै नमः ।

करन्यास—

हस्तक्षें अंगुष्ठाभ्यां नमः ।
 हस्तलीं तर्जनीभ्यां स्वाहा ।
 हस्तोः मध्यमाभ्यां वषट् ।
 हस्तक्षें अनामिकाभ्यां हुं ।
 हस्तोः करतत्त्वकरपृष्ठाभ्यां फट् ।

प्रान-स्तुति—

उद्यदूभानु सहस्रामां चंद्रचूडां त्रिलोचनाम्
 नानालंकार सुभगां सर्वविरि निकृतनीम्
 वम द्विधरसुंडली कलितां रक्त वाससीम्
 शिशूलं डमरुस्त्रूग तथा खेटक मेव च
 पिनांक च शरान्दरेवीं पाशांकुशयुगं क्रमात्
 पुस्तकं शाशमालां विशिष्टिंहसन लिप्ताम् ।

पूर्ण-मंत्र—

हस्तक्षे हृदयाय नमः (अग्निकोण) ।

हस्तलीं विरसे स्वाहा (ईशानकर्त्री) ।
 हस्तोः जिज्ञायै कषट् (नैऋत्यकोणी) ।
 हस्तहें वज्रवाय हुं (वायुकोणी) ।
 हस्तलीं नैत्रवयाय शौष्ठृ (पञ्च) ।
 हस्तोः अस्त्राय कषट् (चतुर्दिक्षे) ।

मंत्र-

हस्तै हस्तलीं हस्तोः ।

उपर्युक्त श्रिधियों के साथ पुरश्वरण में एक लाख मंत्र-जप करके पताश-गुणों से जप का दशांश होम करने से देवी की सिद्धि प्राप्त हो जाती है।

त्रिपुर भैरवी सिद्धि

देवी त्रिपुर भैरवी का रूप-त्वरूप अवतार आकर्षक और सम्मोहन से भर देने वाला है। उनकी देह-कलिंग उदीयमान सहस्र सूर्यों की कांति की भाँति है। उनके गते में मुड़-माला है तथा दोनों स्तन रक्त में सने हैं।

देवी अपने चारों हाथों में जप-माला, पुस्तक, अभ्य-मुद्रा तथा दर-मुद्रा लिए हैं। उनके भाई पर चढ़ाया की कला शोभायमान है। रक्त-कमल जैसी शोभा वाले उनके नेत्रों की संलग्न तीन हैं। पस्तक पर स्व-अडित पुकुट तथा मुख पर पंद्र मुस्तान हैं। इनके साथक को देवी-कृपा से सम्प्रोहन की शक्ति प्राप्त हो जाती है, जिससे दारा वा सांसारिक समस्याओं का समाधान करने में सक्षम हो जाता है।

कीर्ति और इत्रिय-निघल के लिए देवी का सिद्धि-मंत्र यड़ा ही अचूक और प्रभावशाली है।

विनियोग-

ओम् अस्य त्रिपुरभैरवी यंत्रस्य,
 दक्षिणामूर्तिं ऋषिः पवित्र-
 शंदः, त्रिपुरभैरवी देवता, रे-
 तीजण, ती शक्तिः बली-
 बीलकम्, ममाधीष्टसिद्धयर्थे
 यजे विनियोगः ।

अध्यादिन्यात-

ओम्	दक्षिणामूर्ति	जपये	जपः
शिरोगः	पवित्रशंद	नपः	मुखे ।

श्रीचित्पुर पैतृये देवताये नमः
 हृषि एं चीजाय नमः गुण्ये ।
 ही शब्दताये नमः पादयोः ।
 कली कीलकाय नमः सर्वांनो ।

करन्यास—

हसरा अगुणाभ्यां नमः ।
 हसरी तर्जनीभ्यां नमः ।
 हसह मध्यमाभ्यां नमः ।
 हसरे अनामिकाभ्यां नमः ।
 हसरी कनिष्ठिकाभ्यां नमः ।
 हसरः करतस कर पृथग्यामां नमः ।

हठयादिन्यास—

हस रं हठयाय नमः ।
 हस री शिरसे स्वाहा ।
 हस रु शिखायै बृष्ट ।
 हस रै कवचाय हु ।
 हस री नेत्रशयाय बौषट् ।
 हस रः आस्त्राय फट् ।

व्यान-स्तुति—

उद्यतु भानु सहस्र काँति मरुन्न
 द्वौमां शिरो मालिकाम्
 रक्ता सिप्ति पर्योध्यां
 जपवटी विद्याम धीति वराम्
 हस्ताव्यैर्दपती विनेत्र विन्द-
 सत् वक्त्रा र विन्द विष्णुम्
 देवीं बद्ध हिमांशु रत्न-
 मुकुटां बन्दे सुभन्नदस्मिन्नाम् ।

इस प्रकार व्यान करके मानसोपचारों द्वारा पूजन करके धीठ पूजा करनी चाहिए।
 या धीठ आदि में रुचित सर्वतोभद्र में गंडूक आदि पर तत्त्वां धीठ देवताओं को
 चर्यने-गान में स्थापित करे—

ओम् मन्महामहादि परतत्वांत धीठ देवताभ्यौ नमः ।

उपर्युक्त मंत्र द्वारा पूजकर, किरि निष्ठा मंत्रों से पीठ-शक्तियों की दूरी के
 ओम् इच्छायै नमः । ओम् ज्ञानायै नमः ।
 ओम् क्रियायै नमः । ओम् कामदायिन्यै नमः ।
 ओम् रुद्रै नमः । ओम् रत्नप्रियायै नमः ।
 ओम् नंदायै नमः । ओम् ऐं परायै नमः ।
 ओम् अपरायै नमः ।

किसी स्वर्णकार से स्वर्ण मंत्र पर देवी का यंत्र बनवाकर, उस यंत्र को तड़े दू
 किसी पात्र में रखकर, भुज्ज पी हारा उसका अभ्यांग करें तथा उस पर गाय के दू
 और गंगाजल की धारा डालकर स्वच्छ कपड़े से पौष्टने के उपरांत, उसके ऊपर तेज
 के अष्टमंथ द्वारा नववीणि वाला यंत्र, तथा उसके ऊपर अष्टदल एवं उसके का
 खूपुर बनाएं और निष्ठा मंत्र का उच्चारण करें—

ह सौं भहात्तै षट्प्राप्तसनाय नमः ।

इस मंत्र से पृथ्वाधातन देहर, पीठ के मध्य उसे स्थापित करें, किरि निष्ठा
 से पुनः व्यान करें—

ऐं हीं स ह स य ह क्ले ह्यों ।

इस प्रकार बिदु-चक्र में मूर्ति की कल्पना करके, विशुद्ध मुद्रा द्वारा देवी का व्यव
 करके, आवाहन से लेकर पुष्पांजलि-दान पर्यन्त पूजा करके देवी की आङ्ग की शङ्ग
 लेकर आवरण पूजा करें। शिर, थैरवी के पूजन-यंत्र का स्वरूप निष्ठा है—

केसरों, आग्नेयादि कोणों में तथा मध्य दिशा में पूर्वोवतांग मंत्र से सुंग की दृढ़
 करें। फिर पुष्पांजलि लेकर, भूतमंत्र का उच्चारण करें—

ओम् अभोद्ध तिदि मे देहि भारणागत चत्सले ।

भवत्या समपये हुर्भ्यं प्रधमावरणावनम् ॥

अब पुष्पांजलि देहर करें—

पूजिता षट्प्रियास्तन्तु ।

तिद्धि-मंत्र—

ह सौं ह स क रीं ह सैं ।

उपर्युक्त मंत्र का पुरावरण चौकीस लाखु जप है। यारह हजार फूलों से होय
 करना अनियाय है। होय का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन तथा मार्जन के
 दशांश ब्राह्मण घोजन करना चाहिए।

उक्त विधि से देवी की तिद्धि प्राप्त हो जाती है।

सिद्धि विल जाने पर, सिद्धि के प्रयोगों को सिद्ध कर लेना भी आवश्यक होता है। प्रयोग-सिद्धि हेतु दीक्षा लेकर, तथा जितेदिय होकर पाच साल से ऊपर का जन करना चाहिए। बहांर से दस लाख चंच-जप का भी विद्यान है। ज्ञानोपरांत बाहुह हक्क वंडे के पूतों के साथ बहेड़े का होम करना चाहिए।

संपत्प्रदा भैरवी सिद्धि

इस प्रदृश्या भैरवी साधक को अपने संपत्ति-भंडार से लिप्त कर देती है। ये मिलते हुए सहित के पंख से मुक्त मुंडमाला धारण किये हैं। इनके तीन नेत्र हैं तथा मुष्ठ-पंडल और चंद्रमा की भाँति सुशोभित हैं। इनके घड़े के समान धीरोन्नत स्तनों के ऊपर शोभियों का हार है। ये लाल रंग के वस्त्र धारण किये, यौवनोन्मत्ता हैं। देवी तापुवर्ण हैं। इनके लताट पर चंद्रमा की कला तथा मस्तक पर जटाए हैं। शीशा पर रत्नों द्वारा वितरण धीरियों से जड़ित मुकुट है।

इनकी पूजा-विधि एवं विनियोग आदि भी पूर्व वर्णित है। ध्यान-स्तुति में अंतर होने के कारण हम उसे यहां प्रस्तुत कर रहे हैं।

ध्यान-स्तुति—

आताप्रार्थं सहस्राभां स्फुरच्छंदं कला जटाष
किरीट रत्न विलसित्यत्र विवित्र धीवितकाम्
स्वबद्धुधिर पंकादृय मुंडमाला विराजिताम्
नयनप्रव शोभाद्यां पूर्णेन्दु वदनाभिताम्
मुक्ताहार लता राजस्तीनोन्नतवटस्तनीम्
इक्षतांवर परीवानां यौवनोन्मत्तस्तपिणीम्
पुस्तकंचाभ्यं वाये दक्षिणे चाल मालिकाम्
वरदान प्रदां निल्यां महासंपत्प्रदा स्मरेत्।

प्रत्याप—

ह स्त्रैं अंगुष्ठाभ्यां नवः।
ह सकल ही तर्जनीभ्यां स्वाहा।
ह स्त्रैं मध्यमाभ्यां कवृ।
ह स्त्रैं अनाभिकाभ्यां हुं।
सकल री कनिछिलाभ्यां बोवृ।
ह स्त्रैं करतलवलपृष्ठाभ्यां फट्।

मंत्र—

ह स्तै ह सकल री ह स्तै ।

इस मंत्र के पुरश्वरण में तीन लाख जप तथा दशांश होन करना चाहिए। ये लिङ्गि-रायक मंत्र है।

षट्कुटा भैरवी सिद्धि

देवी षट्कुटा भैरवी सूर्य की भाँति आभायुक्त और प्रकाशमान हैं। उनके गले वे दूरी की मात्रा है। उनके शरीर को अरुणवर्ण के सुंदर वस्त्रों से ढांप रखा है। उनके स्वर्णकुंभ के समान स्थूल तथा उन्नत हैं। देवी की आमा देखते ही बनती है। चिनियोग पूर्व वर्णित है।

व्याख्या-सुनिः-

बाल सूर्य प्रभां देवीं जवाकुमुभसन्निभाम्
मुंडगाला वलीं रम्यां बालसूर्यनिभांशुकाम्
मुकर्ण कलशाकार पीनोन्नत पयोधराम्
पापांकुशो मुस्तकं च तथा च नयमालिकाम् ।

मंत्र—

उ र ल क स्तै उ र ल क स्तै उ र ल क स्तै ।

पूर्ण विधि-विधान के ताथ उपर्युक्त मंत्र का एक लाख जप करने से देवी प्रसन्न होकर, साधक को अपनी कृपा का पात्र बनाती है।

भुवनेश्वरी भैरवी सिद्धि

लाली, काली और सरस्वती, देवी दुर्गा के इन तीन विजिष्ट अवतारों के अलौकिक भी अन्य अवतार हैं, जिनमें भुवनेश्वरी का नाम प्रमुख है। ये जवा-कुरुम तथा दाढ़िम-पूर्ण के समान रवतवर्ण वाली हैं। इनके सलाट पर चंद्रकला और मलक पर जटाभार है। शिव की भाँति तीन नेत्रों वाली हैं, तथा बहुमूल्य आधूषणों और रक्तवर्ण के वस्त्रों से सुशोभित हैं। इनके सामन स्थूल और अत्यधिक उन्नत हैं। अपने सामन पर ये श्रीघ ही कृपालु हो जाती हैं, तथा अलौकिक-शक्तियां प्रदान करती हैं। इनके पूजन में निम्न मंत्र का प्रयोग किया जाता है—

त्वं स इ क ल त्वं त्वो ।

सामान्य पूजा-पद्धति के अनुसार प्रातः कृत्य से प्राणावाप तक करके पूर्व वर्णित

क्रिया के पश्चात् ऋष्यादिन्यास निष्प रूप-से करें—

ऋष्यादिन्यास—

शिरसि दक्षिणापूर्तये जगते नमः ।
मुखे षक्तिश्छंद से नमः ।
हृदि भुवनेश्वरी-धैरये देवताये नमः ।

किं—

ह स क ल हां अंगुष्ठाम्बां नमः,
ह स क ल हीं तर्जनीम्बां स्वाहा ।

उपरोक्त क्रम से करन्यास तथा इसी के अनुसार हृष्यादिन्यास करके ध्यान स्तुति
ज्ञान। किन्तु उसके पूर्व विनियोग करें।

विनियोग—

ओम् अरथ श्री भुवनेश्वरी वंत्रस्य,
शक्तिश्च, गायत्री छंदः, हकारो
बीजपू, इकार, शक्ति, रेषः,
कीलकम्, श्री भुवनेश्वरी देवता,
चतुर्वर्ग सिद्धयर्थे जपे विनियोगः

ज्ञान—

जयाकुमुम संकाशां दाङिषी कुमुमोपमाम्
चंद्रेश्वा जटानूटां श्रिनेत्रां रक्तज्याससीम्
नानालंकर सुभगा पीनोन्नत घनस्तनीम्
पाशां कुशवरा भीतीषारयंती शिवाश्वे ।

स्तुति—

बालरविद्युतिमिन्दु छिरीटां
तुंगकुचां नयनश्रय यवताम्
स्मरमुखीं वरदां कुम पाशां
भीतिकरा प्रभजे भुवनेश्वीम् ।

मंत्र—

त्री ।

इसके अतिरिक्त एक और मंत्र है, जिससे देवी भुवनेश्वरी की उपासना से जग
के लिए ग्राहण की जा सकती है। निष्प-विधान सब उपरोक्त है, तो उस मंत्र में

शोडा भूत है।

ऐसी श्रीं ।

उपर्युक्त दोनों मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का एक लाश जप कर देवी ही सिद्धि प्राप्त की जा सकती है।

पंचकुटा त्रिपुरभैरवी सिद्धि

यदि पूर्वोक्त हांग-से विधि और विधान के अनुसार देवी की साधना की जाता तो कोई क्षण नहीं कि साधक को सिद्धि की प्राप्ति न हो। देवी अपने साधक को अहितीय शक्तियों प्रदान करती हैं। यिनियोग, पीठ-मास के पञ्चात् काष्ठादिन्द्रिय निम्न रूप-से करना चाहिए—

शिगसि दक्षिणमूर्ते जपये नमः ।
मुखे षष्ठित्रिंदं से नमः ।
हृदि त्रिपुरभैरवी देवताये नमः ।
गुर्वे नाभे वाय बीजाय नमः ।
पादयोः तातीय शब्दतये नमः ।
सर्वान्वे काम्यवीक्षयकालकम् नमः ।

प्राप्त—

उपदभासु तहस्त्रकान्ति यस्म शिरे नालिकां ।
एकतालिक्ष्म यथोदया जपवर्णी विद्याभभीतिं परपु ॥
हस्तावैदेष्टीं किनेज विलसदवलासीविन्द शिवं ।
देवीं बढ हिमांशु रत्न मुकुटा वदेसमंद स्थितात् ॥
किर ग्रामान्व पूजा-पद्धति के अनुतार उच्चारण करें—
ओम् आपार शक्तये नमः ।

से—

तीं जानात्मने नमः ।

अब निम्न मंत्र से देवी की भूति की कल्पना कर, उस पूर्ति में देवता का आवाहन कर—

ऐं तीं हरखडे हस्ती ।

यदि उपर्युक्त हांग-से पूजा करने में किसी भी प्रकार की कोई असुविधा प्रतीत हो, तो निम्न शक्तियों से पूजन करें—

ओम्	गुरुभ्यो	नमः ।
ओम्	पुरु पादुकाभ्यो	नमः ।
ओम्	परमगुरुभ्यो	नमः ।
ओम्	परमगुरुपादुकाभ्यो	नमः ।
ओम्	परापरगुरुभ्यो	नमः ।
ओम्	ओम् परापरगुरुपादुकाभ्यो	नमः ।
ओम्	परमेष्ठि गुरुभ्यो	नमः ।
ओम्	परमेष्ठि गुरुपादुकाभ्यो	नमः ।
ओम्	आचार्येभ्यो	नमः ।
ओम्	आचार्यपादुकाभ्यो	नमः ।

सिद्धि मंत्र

हस्तीं हस्त वर्तीं हस्तीः ।

उद्युक्त भंड के पुरावरण में दस लाख जप करके, पताश गुणों डान वाले वस्त्र की संलग्न में होम करना चाहिए ।

चैतन्य भैरवी सिद्धि

ये कल्प देवी के बार हाथ हैं । इनके बाएं हाथों में पाश और अंकुश तथा दाएं हाथों में वा और अध्यय हैं । देवी के दोनों स्तन अत्यंत उन्नत और स्फूर्त हैं । इनके कीं ही कीं उदीयमान सहस्र आदित्यों जैसी हैं । इनके शलाट पर मुकुट तथा बग्ला है । देवी विविध आभूषणों से विभूषित तथा रक्त वर्ण के वस्त्र धारण किए ।

रथव्रद्धम सामान्य पूजा-पद्धति के अनुसार, पीठ-गूजा करके पूर्णादि क्रम से पीठ और निम्न सूर्य- से करें—

ओम् वायाये नमः ।	ओम् ज्येष्ठाये नमः ।
ओम् रौद्राये नमः ।	ओम् अविकाये नमः ।
ओम् इच्छाये नमः ।	ओम् ज्ञानाये नमः ।
ओम् क्रियाये नमः ।	ओम् कुञ्जिकाये नमः ।
ओम् विज्ञाये नमः ।	ओम् विवर्जिकाये नमः ।
ओम् भूख्ये नमः ।	ओम् आनंदाये नमः ।

च्यान-

तपत कांचन वर्णाभाँ बालेतु कृत शोभरम् ।
नवरत्न प्रधादीप्त मुकुरां कुंकुमारुणां ॥
घित्र वस्त्र परीषानां मकराक्षीं त्रिलोचनाम् ।
सुवर्ण कलाकाकार पीनोन्नत पदोधरा ॥
गोक्षीर याम-घबलं पंचवक्त्रं त्रिलोचनाम् ।
प्रसंनवदनं शंभु नीलवर्णं विशजितम् ॥
कपर्दिनं स्फुरत्तर्पयुषां कुंदसन्निभम् ।
नृत्यं गनिशं इष्टं द्रष्टवामनदमयीं परां ॥
सानंद मुख लोलाक्षी नेत्रात्ताहृष निलोचिनीम् ।
अन्वदनतसां नित्यां भूमि शीघ्रामलंकृताम् ॥

च्यान के पश्चात् देवी के चंत्र को स्थापित कर, उस पर मुख आदि चहाएँ तथा आवरण-पूजा आरंभ करे, जिसकी विधि निम्न है—

कर्तिका वे, अग्नि, ईशान, नैऋत्य, वायु दोजों में तथा मध्य एवं धारों दिशाओं में निम्न चंत्र से घड़ग-पूजा करें।

सं इदयाप तमः ।
फिर विक्षेप के अग्राम ये—

ओम् शो नमः विवाय नमः ।
उत्त चंत्र द्वारा पूजकर, काम्पुकोण में—

ओम् नमो वगळते वराह सप्तम चूपुरः
स्वः पत्तये भू-पत्तिलव में देहि इवाएव स्वाह्य ।

इस चंत्र ते वराहटीय की पूजा करे।
फिर दक्षिण कोण में वारायण की पूजा कर, दक्षिण तथा वाम भाग में निम्न

चंत्र से भूमि तथा शी की पूजा कर।

ओम् शो शी अन्न वे देष्यन्नविषत्ये
वक्त्रं प्रदापय स्वाहा शी गतो ।

ओम् पर विश्वाये नमः (पूर्व) ।

शी कमलाये नमः (वर्षिष्यम) ।

नली सुभग्नाये नमः (उत्तर) ।

हीं भुवनेश्वर्यं नमः (दक्षिण) ।

इस से पूजा करें। तत्पश्चात् अष्टदल पद्म के आठों दलों में पश्चिम दिशा के द्वारा 'ब्रह्म है नम ।' आदि मंत्र द्वारा मातृकाओं की पूजा करें। इसके बाद निम्न दों का उच्चारण कर पूजा की समापन स्थिति को पहुंचें।

नं अमृतायै अन्नपूर्णायै नमः ।
मौ मानदायै अन्नपूर्णायै नमः ।
भं तुष्ट्यै अन्नपूर्णायै नमः ।
गं पुष्ट्यै अन्नपूर्णायै नमः ।
वं ग्रीत्यै अन्नपूर्णायै नमः ।
तिं रत्यै अन्नपूर्णायै नमः ।
मां क्रियायै अन्नपूर्णायै नमः ।
हं ध्रियै अन्नपूर्णायै नमः ।
श्वं सुधायै अन्नपूर्णायै नमः ।
रि रात्र्यै अन्नपूर्णायै नमः ।
नं ज्योत्स्नायै अन्नपूर्णायै नमः ।
लं हेमवत्यै अन्नपूर्णायै नमः ।
पूं छायायै अन्नपूर्णायै नमः ।
र्गं पूर्णिमायै अन्नपूर्णायै नमः ।
स्वां नित्यायै अन्नपूर्णायै नमः ।
हां अमायस्यायै अन्नपूर्णायै नमः ।

मंत्र-

ओम् हीं बलीं नमो भगवति
माहेश्वरि अन्नपूर्णायै स्वाहा ।

उबल मंत्र के पुरश्चरण में एक लाख जप तथा पृताकृत अन्न से जप का दशांश लोक करने का विधान है। भगवती अन्नपूर्णा मेरवी की स्तुति भी अवश्य की जानी चाहिए। स्तुति इस प्रकार है—

स्तुति-

खलां विशिष्टवसनां खव चंद्र चूडां ।
अन्नप्रयानां निरतां सतनभार नभाय ।
नृत्यन्तमिन्दु सतता भरवं विहोक्य ।
हृष्टां खजे भगवतिं खव तुःसहस्रीम् ॥

सिंदूराऽहम् विश्वहां त्रिनयनां पाणिकम्य मौलिस्फुरत् ।
 तारानायक शेषरां स्मितमुखीं पीन बदोरुहाम् ॥
 पाणिभ्यामलितूर्ण रत्नचष्ठकं रवत्तोपलं विभृती ।
 सौम्यां रत्नघटस्थ रक्तवरणां व्यापेत् पराविकाम् ॥
 नित्यानन्दकरी वराभयकारी सौन्दर्य रत्नाकरी ।
 निर्धूताखिल घोर पावनकरी प्रत्यक्ष माहेश्वरी ॥
 प्रातेयाचल वंश पावनकारी काशी पुराधीश्वरी ।
 भिक्षादेहि कृपा वलंबनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥
 नाना रत्न विचित्रभूषणकरी हेमाम्बराऽम्बरी ।
 मुक्ताहार विलंबमान विलसद्विज कुंभांतरी ॥
 काशीरात्यगुरुवासिता रुचिकरी काशी पुराधीश्वरी ।
 भिक्षादेहि कृपा वलंबनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥
 योगा नन्दकरी रिषु क्षयकरी धर्मार्थनिष्ठाकरी ।
 चंद्रकानल भासमान लहरी त्रेतोक्ष्य रक्षाकरी ॥
 सर्वेश्वर्य समस्त वाञ्छितकरी काशी पुराधीश्वरी ।
 कैलासाचल कंदरा लय करी गौरी उमा शंकरी ।
 कौमारी निगमार्य गोवरकरी ओँकार बीजाक्षरी ।
 योशदार कपाट पाटनकरी काशी पुराधीश्वरी ।
 भिक्षादेहि कृपा वलंबनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥
 दृश्यादृश्य प्रभूत वाहनकरी ब्रह्मांडभाण्डोदरी ।
 लीला नाटक सूत्रभेदनकरी विज्ञान दीपांकुरी ॥
 श्रीविश्वेश मनः प्रसीदनकरी काशी पुराधीश्वरी ।
 भिक्षादेहि कृपा वलंबनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥
 उच्ची सर्वजनेश्वरी भगवती माताऽन्नपूर्णेश्वरी ।
 वेणीनील समान कुतलहरी नित्यान्न दानेश्वरी ॥
 सर्वानन्दकरी दृशां शुभकरी काशी पुराधीश्वरी ।
 भिक्षादेहि कृपा वलंबनकरी माताऽपूर्णेश्वरी ॥
 आदिलांत ममस्त वर्णनकरी शंभोस्त्रिभावाकरी ।
 काशीरा त्रिजलेश्वरी त्रिलहरी नित्यांकुराशार्वरी ॥
 कामाक्षांककरी जनोदयकरी काशी पुराधीश्वरी ।

भिक्षादेहि कृपा वलंबनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥
 देवीसर्व विचित्र रत्न रथिता दासायणी सुंदरी ।
 बामास्वादुपयोधर प्रियकरी सीमान्य माहेश्वरी ॥
 भीष्माभीष्मकरी दशा शुभकरी सीमान्य माहेश्वरी ।
 भिक्षादेहि कृपा वलंबनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥
 चंद्राकार्नल कोटि कोटि सदृशा चंद्राश विंचायती ।
 चंद्राकार्मिन समान कुंतलहरी चंद्राक वर्णेश्वरी ॥
 माला पुस्तक प्रशंसांकुशायती काशी पुराधीश्वरी ।
 भिक्षादेहि कृपा वलंबनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥
 क्षत्रज्ञाणकरी महाऽभयकरी माता कृपासामरी ।
 साक्षांमोक्षकरी सदाशिवकरी विश्वेश्वरी श्रीयती ॥
 दक्षाकंदकरी निरामयकरी काशी पुराधीश्वरी ।
 भिक्षादेहि कृपा वलंबनकरी माताऽन्नपूर्णेश्वरी ॥
 अन्नपूर्णे सदापूर्णे, शंकर प्राण बलहाथे,
 ज्ञान वैराग्य सिद्धयर्थे भिक्षादेहि च पार्वती ।
 माता च पार्वती देवी पिता देवो महेश्वरः;
 चांधवाः शिव भक्ताश्च स्वदेशो भुवन त्रयम् ॥

विभिन्न देवी अवतारों की सिद्धियाँ

सिंसार भर में जितने भी देवी अवतार विख्यात हैं, वो सभी देवी दुर्गा के प्रतिस्थित हैं। किन्तु सबके नाम अलग-अलग होने के कारण उनकी साधना और सिद्धियों के विधानों में भी भारी अंतर है; इसका प्रमुख कारण यह है कि कोई देवी घन और अन्न को प्रदान करने वाली है, तो कोई अलौकिक सिद्धियाँ प्रदान करती है। यहां हम दुर्गाजी के कुछ विशिष्ट अवतारों की सिद्धियों के बारे में बताने जा रहे हैं, जिनकी प्राप्ति करने पर साधक में अद्भुत-शक्तियों का समावेश हो जाता है।

मातंगी देवी की सिद्धि

इस देवी की सिद्धि प्राप्त कर लेने पर साधक को स्वयं इह बात का पता चलता है कि उसमें किस प्रकार की शक्ति का विकास हुआ है, तथा इस शक्ति का

प्रयोग यो किस प्रकार से कर सकता है।

विनियोग—

ओम् अस्यं श्री मातंगी मंत्रस्य,
मतंग ऋषिः, अनुष्टुप् छंदः,
मातंगी देवता, मामार्भीष्ट
सिद्धये जपे विनियोगः।

व्याख्यान-लक्षण-

ध्यायेयं रत्नं पीठे शुक्लं पठितं
शृण्वतीं श्यामं लांगी।
न्यस्तैङ्कांषि सरोजे शशि
शक्लं परां वल्लकीं वादयन्तीम् ॥
कहलारा चढ़ माला नियमित
चिलसत् चोलिकां रक्तवस्त्राम् ।
मातंगी शंखं पात्रा मधुमदां
चित्रं को दृश्यासि भालाम् ॥

पंच-

ओम् हीं एं श्रीं नमो भगवति
उच्छिष्ट चाण्डालि श्री मातं—
गेश्वरि सर्वजन दर्शन कार स्वाहा ।

शोडशी देवी का सिद्धि

देवी की साधना करने वाले साधक को भोहक व्यक्तित्व और शोभन स्वत्वा
व सौंदर्य की प्राप्ति होती है।

विनियोग—

ओम् अस्य श्री त्रिपुर सुंदरी मंत्रस्य,
दत्तिणामृति ऋषिः, पञ्चित छंदः,
श्री त्रिपुर सुंदरी देवता, लैं बीजम्,
सौं शक्तिः, कलीं फीलकण्,
मामार्भीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

ध्यान-स्तुति-

बालकं मंडलाभासां चतुर्बाहु विलोचनाम् ।
पाभांकुशा शरां चापं वारयन्ती विवाम् भजे ॥

मंत्र-

थी ही कर्ती एं सौः ओम् ही क एं ई ल ही ।
ह स क ल ही स क ल ही सौः एं कर्ती ही थी ॥

पृथ्वी देवी की सिद्धि

विनियोग-

ओम् अस्य श्री पृथ्वी मंत्रस्य,
वाराह ऋषिः, निवृच्छुदः,
वसुधा देवता, सर्वेष्ट-
सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

मंत्र-

ओम् नमो भगवत्पै धरण्यै
धरणी धरे धरे स्वाहा ।

विशेष- भगवती दुर्गा के किसी भी स्वरूप की ध्यान-स्तुति के पश्चात् ही उक्त मंत्र का जप करना चाहिए। पुराण के लिए मंत्र का दस लाख जप करना आवश्यक है।

स्वप्नेश्वरी देवी की सिद्धि

विनियोग-

ओम् अस्य श्री स्वप्नेश्वरी मंत्रस्य,
उषमन्युः ऋषिः वृहती उंदः,
स्वप्नेश्वरी देवता विमाभीष्ट
सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ध्यान-स्तुति-

वशमये पदुम युगं दण्डनां
करैश्वतुभिः कनकासनं स्वाम् ।
सिमतां वरां शारद चंद्रकाति ।

स्वप्नेश्वरी नौमि विष्णुवाद्याम् ॥

मंत्र-

ओम् नमः मांतगिनि सत्यभाषिणी स्वन्नं दर्शय दर्शय स्वाहा । 1

ओम् श्री स्वप्नेश्वरि कार्यं मे वदु स्वाहा । 2

ओम् ही नपो बाराहि अघोरे स्वन्नं दर्शय ठः ठः स्वाहा । 3

ओम् चक्रिणी_आकर्षिणि पष्टाकर्णे—

पष्टाकर्णे विशाले पम् स्वन्नं दर्शय दर्शय स्वाहा । 4

ओम् नमः स्वप्न चक्रेश्वरि स्वाने

अवतर अवतर गतं वर्तमानं कथय कथय स्वाहा । 5

ओम् ही मानसे स्वप्नेश्वरि विधायं विधे वदु वदु स्वाहा । 6

उपर्युक्त मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र का एक लाख जप करने से देवी की सिद्धि अवश्य ही प्राप्त होती है ।

इककीस दिन तक निम्न मंत्र का प्रतिदिन 108 बार सौते समय जप करने से स्वप्न-सिद्धि होती है । मंत्र यह है—

ओम् हाँ कली रक्तचामुडे स्वप्ने कथय

कथय शुभाशुभं ओम् फटु स्वाहा ।

रेणुकाशब्दरी देवी की सिद्धि

विनियोग-

ओम् अर्थ श्री रेणुका मंत्रस्य

पैरवे क्लिः, पौवित्र उंदः,

रेणुकाशब्दरी देवता पमाधीष्ट

सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

प्राप्त-स्तुति-

गुजाकल कलिपत्र हार स्प्यां

मुल्यो विलाङ्गं विगिनो वहंसीम्

कौदंडवाणी दपती कराम्याम्

करित्स्य वस्कां शब्दीं स्परणि ।

मंत्र-

ओम् श्री ही छों गे ।

छिन्नमस्ता देवी की सिद्धि

देवी की सिद्धि प्राप्त कर लेने से साधक की वाणी में सम्पूर्ण की शक्ति आ जाती है, तथा देवी-कृपा से शत्रु-परापर, भौतिक-सूख की प्रतित तथा विवाद आदि में जय च सफलता मिलती है। प्रयोग हेतु साधक को देवी की कृपा से अनेक असौक्षिक उपहार मिलते हैं, जिस कारण साधक लोगों में सिद्ध पुरुष की भाँति पुजने लगता है। दश महाविद्याओं में देवी का स्थान उच्चतम है।

विनियोग—

ओम् अस्य श्री शिरछिन्ना षष्ठ्यस्य,
भैरव ऋषिः, सप्ताद् छांदः, छिन्नमस्ता-
देवता, हीकार द्वय बीजम्, स्वाहा-
शक्तिः, अधीष्ट सिद्धये जपे विनियोगः।

प्राप्त-स्तुति—

भास्त्रम्बांडल मध्यगां निज शिरछिन्नं विकीर्णांशकम् ।
स्फारास्यं ग्रन्थिवृग्लास्त्वरुपिरं बामे करे विष्वमीम् ॥
यामासवत्त रतिस्मरा परिगतां सख्यो निजे डाकिनी ।
वर्णिन्यो परिदृश्य मोद कहितां श्री छिन्नमस्तां भजे ॥

पंच-

ओम् श्री हीं बली रे बज
बैरोघनीये हीं हीं फट् स्वाहा ।

यदि दीपावली की सात्रि से प्रारंभ करके उक्त मंत्र का घार लाख जप कर लिया जाए, तो यह सिद्ध होकर देवी की कृपा प्रदान करता है।

मणिकर्णिका देवी की सिद्धि

विनियोग—

ओम् अस्य श्री मणिकर्णिका षष्ठ्यस्य
बेदव्यास ऋषिः, शक्ती छांदः,
श्री मणिकर्णिका देवता, ममा-
भीष्ट सिद्धयर्ये जपे विनियोगः।

पंच-

ओम् रे हीं श्रीं बली
ओम् मणिकर्णिके नमः ।

बाताली देवी की सिंहि

इस देवी की शक्ति का कोई पार नहीं है। इसकी सिंहि से साधक छिपा हो व्यक्ति का भूत और भविष्य शण मात्र में ही जान सकता है। उसके ऊपर अब बाली विपत्तियों का पता गड़ने से चला सकता है। उसे हाँक छातरे से बचा गज़ा है। देवी का मंत्र निम्न है—

ओम् ही श्री कली नृं ठं हं नमो
देवमुत्रि स्वर्ग निवासिनि सर्व नर
नारीं मुख्य कलाति बातां कथय
सप्त समुदान् दशय ओम् ही श्री
कली नृं ठं हं फट् स्वाहा।

साधना के समय पूजा-स्थल पर ही देवी प्रतिमा के पास किसी जगती दृढ़ है दो अटूट (समूहे) काटि और सुअर का एक ढांत अच्छी तरह से धो-साफ करके स्थापित करना चाहिए। इस व्यवस्था के पश्चात् एक लाख वर्षीय हजार मंत्र जप करने का विधान है।

मंत्र-जप पूरा हो जाने पर हृष्ण करके कन्याओं को भोजन करना चाहिए। इस प्रकार यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

जपकाल में साधक को सिंहूर का तिलक लगाए रहना चाहिए। मंत्र सिद्ध हो जाने के बाद भी प्रतिदिन स्नानादि से नियूत होकर, माथे पर सिंहूर का तिलक लगाकर साधक को 108 बार मंत्र का जप अवश्य करना चाहिए, इससे मंत्र सदृश बना रहता है।

इस सिंहि को प्राप्त करने का एक और विधान भी है, जब तक सिंहि की प्राप्ति न हो जाए, साधक प्रतिदिन दिन भर का उपवास (द्रवत) रखे और रात्रि में मंत्र-जप का कर्त्त्व करे। मंत्र-जप की संख्या 1008 अवश्य होनी चाहिए, जब की समाप्ति पर नैवेद्य के रूप में तली हुई भजलों देवी को अर्पित करे। इस समय में निम्न मंत्र का उच्चारण करते रहना चाहिए—

ओम् कर्णधिमात्मनी दद्यवीन वति गृहण—

शुभाण्य घण सिंहि कुरु कुरु स्वाहा।

सिंहि पिल जाने पर भी प्रत्येक दिन देवी की पूजा किया जाने, तथा पूजा करते समय निम्न मंत्र का जप लगातार करते रहें—

ओम् अमृतं कुरु कुरु स्वाहा ।

धूमावती देवी की सिद्धि

देवी धूमावती दश महाविद्याओं में से सातवीं है। इस देवी की सिद्धि प्राप्त कर तेजे बला साधक साधारणजनों में बहुत शक्तिशाली हो जाता है और शत्रुओं का वासा करने में भी सक्षम होता है, तथा यो कभी अपने शत्रु से पराजित नहीं होता। देवी अतिशीघ्र शत्रुओं का सर्वनाश कर देती है। धूमावती सिद्धि एक दारण विद्या है। इस देवी की साधना मुख्यतः चातुर्मास्य में प्रारंभ की जाती है।

विनियोग—

ओम् अस्य श्री धूमावती मंत्रस्य,
पिप्पलाद क्रष्णः, निवृष्ट्युदादः,
ज्येष्ठा देवता, पूं बीजम्, स्वाहा
शक्तिः, धूमावती कीलकम्, ममा-
भीष्ट सिद्धयर्थे जपे विनियोगः ।

ऋग्यादिन्यास—

ओम् पिप्पलाद क्रष्णे नमः शिरसि ।
निवृष्ट्युदाद से नमः मुखे ।
ज्येष्ठादेवतायै नमः हृदि ।
पूं बीजाय नमः गुरुे ।
स्वाहा शक्तये नमः पादयोः ।
धूमावती कीलकाय नमः नाभी ।
विनियोगाय नमः सर्वाङ्गे ।

करन्यास—

ओम् धूं पूं अंगुष्ठायां नमः ।
ओम् पूं तर्जनीयां नमः ।
ओम् पां मायमायां नमः ।
ओम् तिं कनिष्ठिकायां नमः ।
ओम् स्वाहा करतसकरपृष्ठायां नमः ।

हृदयादिन्यास—

ओम् धूं पूं हृदयाय नमः ।

ओम् पूं शिरसे स्वाहा ।
 ओम् मां शिखायै उष्टु ।
 ओम् वं कवचाय हुं ।
 ओम् लिं नेत्रत्रयाय बीष्टु ।
 ओम् स्वाहा अस्त्राय फट् ।

ध्यान-स्तुति-

अत्युच्चा महिनांबरा वित्तजनोद्देशावहा दुर्मना ।
 लक्षाधितितया विशाल्लदशना सूर्योदीरी चंचला ॥
 प्रस्वेदांतु विताशुषाकुलतनुः कृष्णातिरुद्धा प्रभा ।
 प्रेयामुक्तकचा सदाप्रिय कलिर्घूर्मावती मंत्रिणा ॥

मंत्र-

पूं पूं धूपावती स्वाहा ।

पूर्वोक्त प्रकार से निधानानुसार पूजा-अर्चनाकर, किसी सुरक्षित और एकत्र शमशान में जन्मजात नग्न होकर उपर्युक्त मंत्र-जप करें। इसका पुरश्चारण एक तत्त्व जप है। जप का दशांश तर्पण, तर्पण का दशांश मार्जन और मार्जन का दशांश ब्रह्म भोजन करना चाहिए। इस विधि से यह मंत्र सिद्ध हो जाता है।

मंत्र के सिद्ध हो जाने के पश्चात् उसका प्रयोग कर देखना चाहिए। इसके लिए देवी-ध्यान के बाद शपशान में पहुंच एकदम नग्न हो जाए; डिङ्गकरे या शमाने की आवश्यकता नहीं है। इसकी तो कल्पना तक भी न करें, वर्णा अनर्थ हो जाएगा।

केवल रात्रि के समय भोजन करने याले साधक को जप के दशांश संख्यानुसार नित से ठोक करना चाहिए। इस प्रकार ज्योष्टा की पूजनोपरात जब मंत्र लिह से जाए, तब निधानानुसार प्रयोग कर देखने चाहिए।

कृष्ण चतुर्दशी के दिन उपवास करके, सिर के बाल छुले रखकर (विना बड़े) तथा पूर्णतया नग्न होकर किसी शमशान में, जंगल में, गुफा या छोटी-मोटी छोड़ में अथवा किसी पहाड़ी पर (आपके आसपास कोई भी जीव-जंतु नहीं होना चाहिए), किसी भी स्त्री या पुरुष के शथ के ऊपर बैठकर, देवी का स्मरण करते हुए एक लाख बी संख्या में इस मंत्र का जप करें, 'पूं पूं धूपावती स्वाहा ।' जप पूर्ण कर तेरे के पश्चात् राई में नमक मिलाकर होम करें, और अपने जिस शत्रु को नष्ट करना है, उस का नाम लें। यदि उपरोक्त क्रिया से शत्रु नष्ट हो जाता है, तो विसदैह आपने देवी धूपावती की लिङ्कु प्राप्त कर ली है।

किसी मुर्दे की हड्डी को उपरोक्त मंत्र से पढ़कर और उस पर शत्रु का नाम लिखकर चिता में फेंकने से शत्रु का विनाश हो जाता है।

'गूं गूं शूभावती स्वाहा' मंत्र को पांच सौ की संख्या में जपकर, शत्रु का नाम लेने से शत्रु गम्भीर रूप से ज्वर पीड़ित हो जाता है, जो किसी भी औषध से दूर नहीं होता। ज्वर की शाति पंचगव्य अथवा जल के द्वारा की जाती है। इसके लिए देवी से विनती करनी होती है।

मंत्र-जप के बीच शत्रु का नाम लेते हुए, किसी जंगल में रात को बारह बजे, एक ताढ़ की संख्या में जप करें। फिर शमशान पैं, जलसी चिता में किसी कोवे को उत्तोकर अभिषक्ति करें। उसकी भस्म शत्रु के सिर पर उड़ा देने से ही उसका उच्छाटन हो जाता है।

शमशान भूमि में, कृष्णपक्ष में ताजी चिता की राख द्वारा शिवलिंग निर्मित कर उसके ऊपर शत्रु के नाम से युक्त न्यास करके, उसकी पूजा करें। शत्रु का विनाश हो जाएगा। यदि शमशान की भस्म को मंत्र से अभिषक्ति करके शत्रु के घर में फेंक दिया जाए या द्वार के समीप भूमि में गाड़ दिया जाए, तो शत्रु का उच्छाटन हो जाता है।

कोवे के इक्कीस पंसु और नीम की इक्कीस ताजी पत्तियां एकत्र कर एक सौ आठ की संख्या में उपरोक्त मंत्र-जप करें और देवी शूभावती के नाम से धूप दें। यदि शत्रु होंगे, तो दोनों में विदेष उत्पन्न हो जाएगा। इसकी शाति चिता की लकड़ी की अग्नि में गाय के दूध का हवन करने से होती है।

देवी-मंत्र का उच्चारण करके, शत्रु का नाम लेकर, स्त्री के रज को धूप प्रदान करें। शत्रु शायद ही जीवित रह पाए। वाराहकर्ण जड़ी की धूप देकर एक हजार आठ बार उपरोक्त मंत्र का जप करने से शत्रु जीवित नहीं रहता।

यदि आप उपर्युक्त प्रयोगों में सफल हो चुके हैं, तो निःसंदेह देवी धूम वती की सिद्धि प्राप्त कर चुके हैं। यहां हम देवी का एक दूसरा मंत्र दे रहे हैं, जिसकी साथना पहले मंत्र के समान ही होती है। इसके विनियोग से भी शोड़ अंतर है, वो भी केवल कुछ जट्ठों का। अतः विनियोग भी करना चाहिए। शेष क्रियाएं पूर्ववत् हैं।

विनियोग—

ओन् अस्य शूभावती मंत्रस्य
विष्वलाद ऋषिः निवृत्तं
शूभावती देवता चूं शीघ्रम् स्वाहा

शक्ति धूमावती कीलकम्
शत्रु हन नेपि जये विनियोगः ।

मंत्र-

धूं धूं धूमावती ठः ठः ।

किसी भी कृष्णपक्ष की चतुर्दशी से उपवास करके तथा किसी शुन्य गृह, जगत् अथवा शमशान में रात्रि-दिन घोन रहकर, एक लाखु की संख्या में उपरोक्त मंत्र का जप करें। जपकाल में उल्लीच तथा आई-वस्त्र धारण करने वाहिए, तथा मंत्र-प्रयोग के समय देवी का ध्यान करना वाहिए।

व्याख्या-

विश्वा चंचला रुद्धा दीर्घा च मस्तिनांवरा
विवर्ण कुंडला रुद्धा विश्वा विरत द्विजा
काकव्यज रवारुद्धा विलोबित पयोधरा
सूर्यं हस्तातिरसामी धूतहस्ता वर्णविता
प्रकृद योगानु नृश कुटिला कुटिलेक्षणा
शुत्रं पिपासादिता नित्यं भवदा कलहप्रिया ।

व्याख्या के बाद आप प्रयोगों को विष्णु रूप से करें—

शमशान की अग्नि में कौवे को जलाकर, उसकी भस्म को उपरोक्त मंत्र से 108 बार अधिवक्षित कर, शत्रु का नाम लेते हुए आठों दिशाओं में फेंकने से शत्रु का लक्षण उत्पादन हो जाता है। अथवा हल्दी के पते पर शत्रु का नाम लिखकर उसे किसी घने अंगल में डालकर (पथ्य से), उसके ऊपर पूर्व मंत्र का दस हजार की संख्या में जप करने से भी शत्रु का उत्पादन हो जाएगा।

शमशान की भस्म से शिखलिङ्ग बनाकर, पूर्णादि से उसका पूजन करें। पिर नीप के पते और कौवे के पत्ते इकट्ठे करके उनके ऊपर 108 बार मंत्र का जप करें। फिर, 'अमुकं द्वेषय द्वेषय', कहाना, मूर्त्य-भंग का उच्चारण करते हुए धूप प्रदान करें। इस प्रयोग से शत्रुवर्ण में द्वेष उत्पन्न हो जाएगा; अमुक के स्थान पर शत्रु अथवा शत्रुओं का नाम लेना चाहिए। अथवा—कृष्णपक्ष में शमशान की भस्म से शिखलिङ्ग बनाकर, उस पर शत्रु के नाम सहित उपरोक्त मंत्र लिखकर पूजा करें तथा ऐसे के दूष हाता धूप देकर, जो पदार्थ शत्रु के लिए अभंगलकरी है, उसे प्रदान करते हुए पूजन करने से देवी धूमावती एक महिली का रूप धारण करके, साथक के शत्रु का शीघ्र ही विनाश कर देती है। इसी प्रकार साधक द्वारा वाराहमर्ण मारा धूप देने

हे देवी तत मैं बारह चंडी के बाद शुकर का रूप धारण कर और स्वयं आकर अमुकुल
का विनाश कर देती है।

कर्णपिशाचनी देवी की सिद्धि

यह भी देवी दुर्गा का ही एक रूप है। यह देवी अपने साधक को भूत और अश्रव्य
की बटना की प्रतिक्षण सूचना देती है, जो साधक को कानों में सुनाइं पड़ती है, तथा
ऐसे दृश्यों से परिवित करती है, जिनके विषय में कोई व्यक्ति कल्पना तक भी
नहीं कर सकता। इस देवी की सिद्धि पाकर साधक विकासदर्शी हो जाता है।

किन्तु जो साधक इस सिद्धि का दुरुपयोग करता है, वो देवी की कृपा से बचत
भी अतिशीघ्र हो जाता है। अडिंग आस्था, अदृष्ट विभवास, पूर्ण तन्मयता और निश्चल
स्थित के द्वारा देवी की कृपा सहज ही प्राप्त की जा सकती है।

मंत्र सिद्ध हो जाने पर जब कभी आवश्यकता पढ़े या कोई समस्या सामने आए,
तो देवी कर्ण-पिशाचनी का स्परण करके तथा देवी का सिद्ध मंत्र नीं बार पढ़कर,
दाहिने कान पर दाहिना हाथ रखते हुए, यह कल्पना करनी चाहिए कि देवी भेरे कान
में भेरे प्रश्न का उत्तर दे रही है।

साधना आरंभ करने से पूर्व पूजा-स्थान को लीप-पोतकर शुद्ध और साफ कर
लेना चाहिए। फिर स्नानादि से निरूत होकर साफ वस्त्र धारण करके आसन पर बैठना
चाहिए। मुह पूरब की ओर रहना चाहिए।

अपने सम्पुर्ण फिल्सी पटोर आदि पर श्वेत कोरा कल्पदा विश्वास, उस पर देवी
का कोई चिन्ह स्थापित करना चाहिए। यदि समय पर देवी का नित्र उपलब्ध न हो
पाए, तो काली या दुर्गाजी का चित्र या प्रतिमा स्थापित करनी चाहिए।

चित्र या प्रतिमा के स्थान पर चंडी का भी प्रयोग किया जा सकता है। यदि
मंत्र भी उपलब्ध न हो, तो भोजपत्र पर लाल चंदन से 'ओम् कर्णपिशाचनी नमः'
लिखकर और उसे प्रतिष्ठित करके साधना आरंभ करनी चाहिए।

तत्प्रवात! लाल चंदन, मूष्य और धूप-दीप से देवी की पूजा करके विनियोग
और ध्यान करना चाहिए।

ध्यानोपरान्त कम-से-कम माला जप अवश्य करना चाहिए। माला 108 दाढ़ी
की होनी चाहिए। माला लाल चंदन, मूष्य या रुद्राश की होनी चाहिए। साधनों के
पहले दिन उपवास रखने वाले विधान हैं। यदि पूरे साधनों कान में ही उपवास रखा
जाए, तो सफलता भी भीष्म मिल जाती है। देवी की साधना कम-से-कम इक्कीस

दिनों तक जी जाती है। सापक को ठीक दृष्टिसंबोध दिन हवन करना चाहिए। हवन सामग्री में गुणगति, शब्दकार और मदिरा का प्रयोग प्रयुक्त होता है। वैसे हवन की आहुतियों का मंत्र-जप की संख्या का दसवां होना चाहिए। यदि ऐसा संभव न हो सके, तो एक हजार आठ आहुतियां देकर हवन करना चाहिए। हवन के पश्चात् किसी कुआरी कन्या को भोजन कराने का भी विद्यम है। इस प्रकार उसे तीन दिनों तक (शुरू से) रेटी और छींग से भोजन कराकर, तीन दिन भोजन के बाद उसे नये वस्त्र और दक्षिणा देनी चाहिए। इससे देवी प्रतान्त्र दृष्टि शीघ्र कृपालु हो जाती है।

विनियोग—

ओम् अस्य श्री कर्णपिशाचिनि पंत्रस्य,
पिष्ठलाद कथिः निष्ठुद् गायत्री छन्दः,
कर्णपिशाचिनि देवता, ममाधीष्ट
सिद्ध यर्थं जपे विनियोगः।

व्यान-सुन्ति—

ओम् वित्तासनस्यां नर मुङ्डपालां,
विष्णुषितामाश्चिय मर्णीन् कराच्छैः।
प्रेतान्नराज्ञैर्दद्यतीं कुव स्त्रां,
भजामहे कर्ण पिशाचिनि ताम् ॥

मंत्र—

ओम् नमः कर्णपिशाचिन्यमोष सत्यंवादिनि
मम कर्णे अवतर अवतर अतीतागत वर्तमानानि
दर्शय मम पवित्रं कथय कथय हीं कर्णपिशाचि स्वाहा । 1
ओम् नमः कर्णपिशाचिनि मत कीर्ण प्रविश
अतीतानागत वर्तमानं सत्यं सत्यं कथय मे स्वाहा । 2
ओम् कह कह कालिके मृद्ग मृद्ग पिंड पिशाचिके स्वाहा । 3
ओम् विश्वस्तपे पिशाचि वद् वद् हीं स्वाहा । 4
ओम् कर्णपिशाचिनि बदीतीत नामतं हीं स्वाहा । 5
ओम् कर्णपिशाचिनि पिंगल लोचने स्वाहा । 6
ओम् हीं चः चः कर्णपिशाचि मे कर्णे कथय हुं फट् स्वाहा । 7

ओम् कर्णपिताचिनि महादेवी रतिष्ठिये स्वर्जन
कामोश्वरी पदमावति ब्रिलोक्यवाता कथय कथय स्वाहा ।

ओम् नमो देव भगवते ब्रिलोचनं विषुरं

महादेवी कर्णपिताचिनि मे वशं कुरु कुरु स्वाहा ।

विशेष— उपरोक्त मंत्रों में से किसी भी एक मंत्र को जप कर सिद्ध किया जा

सकता है।

हमारे बहुत-से पाठकों ने देखा होगा कि कोई-कोई व्यक्ति किसी भी व्यज्ञ
को देखकर उसके परिवार की स्थिति, मन में उठे सवालों का खोचे हुए बल्कि या
उड़े का पता ठीक-ठीक बता देते हैं। ऐसे व्यक्तियों के पास आत्माएं होती हैं और
आत्माओं के लिए किसी भी प्रश्न का उत्तर देना असंभव नहीं होता। आत्माएं यायवीष
स्वरूप में विचरण करती रहती हैं, जिस कारण इनके लिए स्थान-भेद का कोई महत्व
नहीं रहता।

क्षणमात्र में दूर प्रदेश से कोई वस्तु ला देना या विज्ञ के किसी भी प्रान्त में
हमें वाले व्यज्ञ के बारे में सही जानकारी देना, इनके लिए मामूली बात होती है।
जो तोम इस प्रकार की सिद्धियां प्राप्त कर लेते हैं, वो अपने को भविष्यवक्ता कहते
हैं, किन्तु स्वयं का भविष्य इनकी पकड़ से सर्वथा दूर रहता है।

इस प्रकार की सिद्धियों को प्राप्त कर लेने वाले साधकों का अंत बहुत ही बुरा
होता है। साधक की मृत्यु बड़ी कष्ट साध्य होती है। जिन्हें लोक-सिद्धि प्राप्त करनी
हो या जिन्हें अपना नाम उज्ज्वल करना हो, उन्हें कर्णपिताचिनी की सिद्धि प्राप्त करनी
शाहिए। यहां एक अन्य मंत्र दिया जा रहा है, जिसको सिद्ध कर देने से कर्णपिताचिनी
की कृपा सुलभ हो जाती है।

मंत्र—

ओम् हीं श्री वल्ली नृं ठं ठं नमो देव पुनि
स्वर्ग निवासिनि लब्ध नरनारि मुख वातालि
वात्ता कथय कथय सप्त समुद्रान दर्शय दर्शय
ओं हीं श्री वल्ली नीं ठं ठं हुं कद् स्वाहा ।

इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए आप के पते पर रोली या गुलाल विताकर
रथि के समय (शारह या उसके बाद कल कोई समय, प्रातः तीव्र बजे से पूर्व) एक
मीठ बार उक्त मंत्र को लिखो, और लिखने के बाद मिटा दें। किर लिखें और
मिटा दें। ऐसा एक सी आठ बार करें। अंत में लिखे मंत्र का घोट्योपचार या
पर्याप्तार से पूजन करें और उपरोक्त मंत्र की न्यारह मात्रा जप करें तभ्या उस बजे

लिखे थते को सिरहाने रखा कर सी जाएं। यह किया इक्कोस दिनों तक फर्मे गे
मंत्र लिठु हो जाता है और देवी कर्णपिशाचनी साधक के प्रक्षणों के उत्तर कान मे
देने लगती है। देवी कर्णपिशाचनी की यह सबसे सरल आवश्यन है।

बगलामुखी देवी की सिद्धि

बगलामुखी का नाम 'बलामुखी' है। यह अर्थवसूज-झानतंतुओं की अधिकारी
देवी है, तथा दश महाविद्याओं की उपासना में बगलामुखी का बड़ा महत्व है। देवी
बगलामुखी का प्रभाव विशेष रूप से शत्रु-दमन के कार्य में दृष्टिगत होता है।

वाद-विवाद, प्रतिरोध, मामला-मुकदमा, शत्रुकृत उपद्रव, तात्रिक पटकं
अभिवाहन-कृत्य (उच्छाटन, स्तंभन और मारण आदि) जैसी समस्याओं के नियन्त्रण
में बगलामुखी देवी की सिद्धि असदिग्ध रहती है।

देवी के मंत्र-जप के समय सर्वध्रव्यम बगलामुखी देवी का विनियोग करना चाहिए।
इसके लिए दाएं हाथ में जल लेकर निम्नलिखित मंत्र पढ़ते हुए, उसे चित्र या मंत्र
के समुद्भु छोड़ने का विधान है।

विनियोग— (1)

ओम् अस्य श्री बगलामुखि महाविद्या
मंत्रस्य नारद ऋषिः, विष्णुपाठ्यादः,
बगलामुखि पाशविद्या देवता, हस्ती
बीजम्, स्वाहा शक्तिः, ओम् कीलकं
ममाभीष्ट शिद्वर्षे जपे विनियोगः।

विनियोग— (2)

ओम् अस्य श्री बगलामुखी मंत्रस्य,
नारद ऋषिः, वृहती उद्दः, बगला—
मुखी देवता हीं बीजम्, स्वाहा शक्तिः,
मम अखिल वाप्तये जपे विनियोगः।

ऋषादिव्यास-

नारदकथये नमः शिरसि । विष्णुपाठ्यस्मै
नमो भुवे । बगलामुखीदेवेततये नमो हृषि ।
हीं बीजाय नमो गुह्ये । स्वाहा शक्तये
नमः पात्रोः । हस्तीं कीलकाय नमो

नाभोः । विनियोगाय नमः सर्वाभ्यः ।

कर एव हृदयादित्यास-

ओम् ही अंगुष्ठाम्बां (हृदयाय) ।
बगलामुखी तजंनीप्यां० (जिरसो०) ।
सर्वदुष्टानां प्रद्यमाम्बां० (जिल्लाप०) ।
वाचं मुखं पदं स्तम्भय अनापिकाम्बां० (कवचाय) ।
बुद्धि नाशय हीं ओम् स्वाहा । (करतलकरपृष्ठाम्बां०)
(अस्त्राय) ।

प्राण-

मध्ये सुधाकिष्यविजिमण्डपरत्वेदां,
सिंहासनोपरिगतां परिपीतकर्णाम् ।
पीताम्बराभरणमाल्य विभूषितांगी॒;
देवी स्परशमि भूतमुद्गर्वैरिविस्वाम ॥
जिल्ला प्रमा दाय करेण देवी॑,
दामेन शत्रु न परिपीड यन्तीम् ।
गदा भिवातेन च दक्षिणेन;
पीताम्बराद्यां द्विभुजा नमामि ॥

सुति-

सौधण्ठासन संस्थितां विनयनां पीतांशुकोल्लासिनी॑ ।
हेमामांगलीविं शशांकमुकुटां सव्यपक स्त्रग्रुताम् ॥
हस्तैर्पूर्वदूर पाशबद्धरशनाः संविज्ञती भूषणैः ।
व्याप्तांगी बगलामुखी लक्षणगतां संलाभिनी॑ वित्तयेत् ॥

पंथ-

ओम् हीं बगलामुखि सर्व दुष्टानां वाचं
मुखं पदं स्तम्भय जिल्ला कीलय बुद्धि
विनाशय हीं ओम् स्वाहा ।

रवि वा गुरु पुरा योग में बगलामुखी देवी का चित्र अद्वा वंच (बगलामुखी के यंत्र प्राप्ति बाजार में उपलब्ध हो जाते हैं) प्राप्त कर किसी पुरोहित से यहां उसकी प्राप्त-प्रतिष्ठा कर सेनी बाहिए । गूजर सामग्री, आसन, माला, चंदन, पुस्त्र, साधक वंच और प्रसाद आदि सब कुछ पीतवर्ण (पीतला) होना चाहिए । माला हल्दी

की गाठों से भी तैयार की जा सकती है। तैयारी के बाद शिव या शत्रु की पूजा करें।

पूजनोपरांत न्यास आदि करके परम श्राति चित से आस्थापूर्वक उपरोक्त जप का जप करना चाहिए। इक्षावन हजार की संख्या में पंत्र-जप करें। जप के बाद हवन-क्रिया करें, तथा किसी कुआरी कन्या को पीला धीजन कराकर, पीले पंत्र और दक्षिणा दें। इस प्रकार यिधिवत् की गयी साधना से सिद्धि की प्राप्ति होती है।

शत्रु-परापत्र, बंधन-मुक्ति, स्तंभन और वशीकरण आदि में यह सिद्धि कामना साधित होती है। अत्यधिक शत्रु का संकट आने पर अथवा दरिद्रता दूर करने के लिए या इच्छित कार्य के लिए बगलामुखी देवी का ब्रह्मास्त्र का प्रयोग भी ज्ञाय सिद्धि देने वाला है।

विनियोग—

ओम् अस्य श्री बगलामुखि ब्रह्मास्त्रं मंत्रस्य
धैरव ऋषिर्विराट् उद्दः श्री बगलामुखि
देवता कली बीजम्, ऐं शवितः श्री कीलकं
मध्यार्थिष्ट तिद्वये (अथवा अमुक कार्य-
सिद्धये) जपे विनियोगः।

इद्यादिन्यास—

भैरवकाषये नमः शिरसि ।
विराट् उद्दसे नमो मुखे ।
बगलामुखिदेवताये नमो हृदि ।
कली बीजाय नमो गुरुये ।
ऐं शवितये नमः पादयोः ।
श्री कीलकाय नमो नाभौ ।
विनियोगाय नमः सर्वान्मे ।

कर एवं इद्यादिन्यास—

ओम् हाँ अंगुष्ठाप्यां० (इद्याय०) ।
ओम् नजंनीष्यां० (विरास०) ।
ओम् हूं मध्यमाप्यां० (जिलाय०) ।
ओम् है अनापिकाप्यां० (कवचाय०) ।
ओम् हीं कनिष्ठिकाप्यां० (नेत्रवाय०) ।

ओम् हः करतलकरपृष्ठाभ्यां (अस्त्राय)।

वाच-

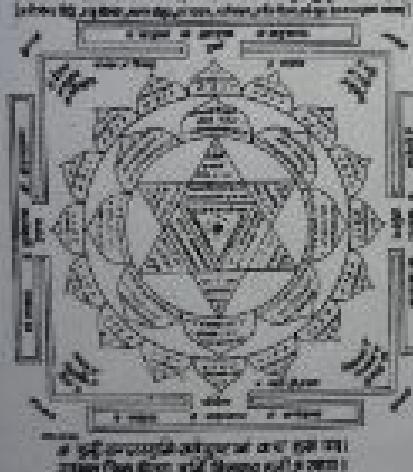
सौकर्गसिनसास्थितां विनयनां पीतांशुकोल्लासिनीं,
हेषाभांगलयिं शशांकमुकुटा सच्चम्पकस्वम्पयुताम् ।
हस्तमुद्दिगर पाशबद्धरसनां सौविश्वर्तीं भूषणे;
व्याप्तांगी बगलामुखित्रिजगतांसंस्तम्भिनीं वितये।

मंत्र-

ओम् ही ले कर्त्ता श्रीवशलानने
मध्य रिपुन् नाशय नाशय ममेश्व—
यांशि देहि देहि शीघ्रं मनोवाचितं
साधय साधय ही स्वाहा।

॥ श्री शैवालयमुखी चतुर्मान् ॥

श्री शैवालयमुखी चतुर्मान् श्री शैवालयमुखी चतुर्मान्
श्री शैवालयमुखी चतुर्मान् श्री शैवालयमुखी चतुर्मान्
श्री शैवालयमुखी चतुर्मान् श्री शैवालयमुखी चतुर्मान्



दीपावली या चैत्रग्रहण के समय से इस मंत्र का जप ग्राह्य करें। इकलौते दिनों
में सब लाल मंत्र का जप करें। शीघ्र ही यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। इसी मंत्र के
तह पर आपके अनेक कार्य संपन्न होते रहेंगे।

□□

सिद्धियों का मायाजाल

करोड़ों में हेतु-देवताओं की गिनती है और संभवतया करोड़ों की तादाद में ही आसुरी शक्तियां विद्यमान हैं और उन सभी की सिद्धि प्राप्त की जा सकती है। कुछ की सिद्धि प्राप्त करना बड़ा ही प्राण-घातक है और कुछ की सिद्धि सहज ही प्राप्त की जा सकती है। बहुत-सी सिद्धियाँ जान लेने के लिए (मारण-प्रयोग के लिए) होती हैं और बहुत-सी सिद्धियाँ जीवन-दान देने के लिए। यहाँ हम कुछ ऐसी सिद्धियों के हैं और बहुत-सी सिद्धियाँ जीवन-दान देने के लिए। यहाँ हम कुछ ऐसी सिद्धियों के बारे में बतलाने जा रहे हैं, जिनकी साधना प्राप्त करना कोई दुष्कर कार्य नहीं है और कोई भी साधक श्रम और धैर्य के बल पर इन्हें प्राप्त करने में सफल हो सकता है, तथा अपनी पंसद की सिद्धि का चुनाव कर सकता है। सिद्धियों के मायाजाल में न फँसकर, सहज ही सुलभ हो जाने वाली सिद्धियों को प्राप्त कर, जनालाभ के लिए सिद्धि प्राप्त करने का प्रण पहले कर लेना चाहिए।

प्रेत सिद्धि

आज के आधुनिक और वैज्ञानिक युग में ऐसे बहुत-से लोग मिल जाएंगे, जो इस बात पर यकीन ही नहीं करते कि भूत-प्रेतों अथवा आसुरी आत्माओं का कोई अस्तित्व होता है। वो इसे मन-घड़ी और काल्पनिक बात समझते हैं। उनके मत से यह केवल छोटे बालकों को डराने वाली झूठ-मूठ की घड़ी हुई कहानियां मात्र हैं। इस विषय में हम तो केवल इतना ही कहना चाहेंगे कि इस प्रकार की बातें, उनका भ्रम मात्र हैं। भूत-प्रेतों का अस्तित्व है। यदि ऐसा न होता हो, तो हनुमान् चालीसा में प्रेत शब्द का शिक क्यों आता? हमारे अनेक पौराणिक ग्रंथों से यह पता चल सकता है कि बास्तव में प्रेतों का अस्तित्व है।

प्रेतों की शक्ति भी अतुलनीय होती है। यदि किसी प्रेत को सिद्ध कर लिया जाए, तो साधक उसके बल पर सहज ही सब-कुछ प्राप्त कर सकता है। यहाँ हम प्रेत की सिद्धि प्राप्त करने की एक सरल विधि दे रहे हैं।

किन्तु डरपोक किसम के साधकों को प्रेत सिद्ध करने का विचार तक भी मन में न लाना चाहिए।

इसकी साधना का आरंभ मूल नक्षत्र में किया जाता है। जब मूल नक्षत्र हो तो उस दिन से निष्ठ किया का आरंभ करें।

सबसे पहले तो आप बहुल का वृक्ष तलाश करें। यदि वो वृक्ष आपके नाम

आसपास हो, तो बहुत ही अच्छा है। अन्यथा आप साधना का प्रारंभ बबूल वृक्ष के आसपास के स्थान पर करें। आप इस सिद्धि को करने जा रहे हैं, इस बात का जिक्र दूर या बाहर के किसी भी व्यक्ति से नहीं करना चाहिए। सब कार्य चुपचाप करने चाहिए।

जब आप प्रातःकाल शीघ्र जाएं, तो शीघ्र का पानी थोड़ा बचा अवश्य हो। इसके लिए पहले से ही बरतन बड़ा रखा जा सकता है। जो पानी शीघ्र का बचा है, उसे बबूल वृक्ष के नीचे डाल आएं। प्रतिदिन यह किया करें।

फिर जहाँ आपने जड़ के पास पानी डाला है, उसी के समीप बैठकर निम्न मंत्र का 108 बार जप करें। जपकाल में इधर-उधर का कोई विचार अपने मन में न आने दें। इस कार्य में एक दिन की भी नागा नहीं होनी चाहिए।

आपको पूरे अद्वैतीस दिनों तक यह प्रक्रिया करनी है। आपका समय भी निश्चित होना चाहिए। अब उन्नालिसवें दिन आप फिर से शीघ्र का पानी लेकर बबूल वृक्ष के पास जाएं, किन्तु पेड़ के नीचे पानी कटापि न डालें। यदि आपने कहीं भूले-से भी पानी डाल दिया, तो आपकी सारी मेहनत पर पानी फिर जाएगा और ही सकता है कि जान के भी लेने के देने पड़ जाएं।

अतः 39वें दिन आप मंत्र का जप करके पानी न डालें (प्रारंभ से ही मंत्र-जप के पश्चात् पानी डालने की क्रिया करें, जिससे कि सफलता भी शीघ्र ही मिल जाए)। इस दिन जैसे ही आप मंत्र-जप की समाप्ति करेंगे और पानी न डालेंगे, तो प्रेत तत्काल हाजिर होकर आपसे पानी मांगेगा। इस समय में आपको अपने दिल को मजबूत रखना होगा, कभी वो मारे खय के घड़कना बंद हो जाए।

प्रेत के पानी मांगने पर भी आप पानी न दें और उससे कहें, “पहले तुम मुझे तीन बचन दो, तब मैं तुम्हें पानी दूँगा।” आपकी बात पर प्रेत बचन देने की तैयारी हो जाएगा। आप उससे विन्न तीन बचन लें—

1. जब भी मैं तुम्हें बुलाऊंगा, तुमको आना होगा?
2. मैं जो भी काम तुम्हें बताऊंगा, उसे तुम्हें करना ही होगा।
3. येरी बिना इजाजत के तुम कभी भी कुछ भी नहीं करेंगे। जो काम करेंगे, उसमें पैरा हुक्म ही पहला होगा।

इस प्रकार के तीन बचन लेने के बाद आप पेड़ में पानी डाल दें। इसी के साथ आप यह जान लें कि आपने प्रेत-सिद्धि प्राप्त कर ली है। मंत्र यह है—

ओम् श्रीं वं वं भुं भूलश्वरी
मम् वशं कुरु कुरु ल्पाम्।

पिशाच सिद्धि

इस सिद्धि की साधना भी सरल है, किन्तु साधनाकाल वे भयभीत हों जाने का व्यक्ति कभी-कभी अपनी जान से भी हाथ धो बैठता है। इस प्रकार की किसी भी सिद्धि को प्राप्त करने वाले साधक को भयभीत नहीं होना चाहिए, बल्कि भयभीत हो जाने वालों को तो सिद्धि प्राप्त करने का प्रयास भी न करना चाहिए।

इस सिद्धि हेतु सर्वप्रथम किसी इमशान से उस व्यक्ति की कोई अस्थि (हड्डी) लाएं, जिसकी मृत्यु किसी दुर्घटना के कारण हुई हो। अब किसी शिव भैंदिर वे जाकर उस हड्डी को अपने आसन के नीचे रख कर साधनारात हो जाएं।

साधना के रूप में आप अर्दुरात्रि में (आसन के नीचे हड्डी रखकर) शिव प्रतिष्ठा अथवा शिवलिंग के सामने बैठकर निम्न मंत्र का पांच हजार जप प्रति गति करें।
मंत्र यह है—

सूनसान सोखता भसान जागे भूत नाचे बैतान।

इस प्रकार की साधना आपको चालीस दिनों तक करनी है। टीक चालीसवें दिन मंत्र-जप के पूरा होने ही पिशाच आपके सम्मुख आ छड़ा होगा, तब्दा आपसे अपना भोग माँगेगा; किन्तु आप उसे भोग न दें और उपरोक्त तीन वचन पहले ले लें। पिशाच आपको तीनों वचन दे दें, तो आप तत्काल उससे उत्सक्षी चोटी मांग लें। चोटी लेकर उसे मांस और मंदिर का भोग दें।

विशेष— जब तक पिशाच की चोटी आपके पास रहेगी, वो आपका गुलाम नहीं रहेगा। जिस दिन चोटी गई, उसी दिन से पिशाच भी आजाद हो जाएगा।

इमशान सिद्धि

यदि आप इमशान में जाकर यह किया कर सकते हैं, जो हम यहाँ पर बताने भी रहे हैं; तो यह विधि भी पहली विधियों की भाँति सरल है। इमशान में जित दिन किसी भी स्त्री-पुरुष का दाह-संस्कार हुआ हो, उस दिन आधी रात्रि में इमशान पर जाकर उक्त वित्ता के गिनकर पूरे सात चक्कर लगाएं। तत्पश्चात् वित्ता के फैरों से तरफ खड़े होकर, इस बात की प्रार्थना करें—

“तुम मेरे बधन में आ चुके हो और तुम्हें मेरे साथ चलना होगा।”

तीन बार यह कहने के पश्चात् वित्ता के सिर की ओर से एक बलिष्ठ की (जिसी) एक लकड़ी उठाएं और उसे इमशान के दक्षिण दिशा में गाह दें। यिन दूसरी तीन

लकड़ी को चिकालकर उसे साफ जल से स्नान कराएं और फिर से उक्त स्थान पर गाइ दें।

यह क्रिया पूरे तीन दिन तक करें।

चौथे दिन लकड़ी लाकर, घर के बाहर किसी सुरक्षित स्थान पर खुपाकर रखें, ताकि कोई उसे उठाकर न ले जाए। घर में कदम्पि न रखें।

अब आप जब भी उससे कोई काम लेना चाहें, तो लकड़ी को अपने आसन के नीचे रखकर मृतक का आवान करें। मृतक की आत्मा तल्काल आपके सामने हाजिर हो जाएगी।

बेताल सिद्धि

जिस साधक को बेताल सिद्ध हो जाए, वो बड़े-बड़े कामों को अंजाम दे सकता है। बड़े-से बड़ा काम भी बेताल खुटकियों में कर देता है। बेताल पिशाचों से भी अधिक शक्तिशाली होता है। बेताल सिद्धि का मंत्र निम्न है—

ओम् शां क्लां हीं हीं फट्।

इस मंत्र की साधना भी इमशान में जाकर करनी पड़ती है, तथा आधी रात औ इमशान में बैठकर उक्त मंत्र का जप करना होता है।

बालीस दिनों के पूरे एक लाख मंत्र का जप किया जाता है।

ठीक बालीसवें दिन बेताल साधक के साथने हाजिर होकर, उससे अपना भोग पांगता है। उस तथ्य साधक को भवभीत नहीं होना चाहिए, तथा उसको भोग देने से पूर्व उपर्युक्त तीन वयन लेकर ही उसे मांस-मदिरा का भोग अप्रिंत करना चाहिए। एक बार बेताल सिद्धि प्राप्त हुई, फिर आप उससे हर तरह के काम ले सकते हैं।

विरहाना पीर की सिद्धि

पीर भी बड़े काम के होते हैं। यह भी साधक के हर कहे को पूरा करने में लक्ष्य होते हैं, तथा आपने सिद्धकर्ता के प्रत्येक आदेश को मानते हैं। उपरी हवाओं का निपटान करने में दुन्हे महारथ हासिल होती है।

पीर विरहाना की साधना करने से साधक सिद्ध-पूरण बन जाता है।

किन्तु इसकी साधना करने वाले में अद्यता साहस होना चाहिए। डारपौक किसी के साधक को इस पीर की साधना का प्रयास लेने करना चाहिए। डर जाने वाले साधक को अपनी जान तक से हाथ धोना पड़ सकता है।

यदि साधक निःरहोकर विरहाना पीर की साधना कर ले और उसकी सिद्धि प्राप्त कर लें, तो वो एक चमत्कारी पुरुष बन सकता है और ख्याति अर्जित कर सकता है। ध्यान रहे, मंत्र-जप की अशुद्धि सिद्धि-प्राप्ति में वाधक बन जाती है, अतः मंत्र-जप का उच्चारण एकदम शुद्ध रूप-से करना चाहिए।

सिद्धि-प्राप्ति का मंत्र यह है—

पीर विरहाना फूल विरहाना
धुंधुकारै सवा सेर का तोसा खाय
आसी कोस का धावा करे सात
से कुतक आगे चलै सात से कुतक
पीछे चलै उप्पन से सुरी चलै
बाबन से पीर चलै जिसमें गढ़
गजनी की पीर चलै और की
खजा उखाड़ता चलै अपनी खजा
टेकता चलै सोने को जगावत चलै
बैठे को उठावत चलै हाथों में
हथकड़ी और गेरे पेरों में पैर
की कड़ी गेरे हताल माही ढीठ
करे मुरदार माही पीठ करे
कलवान् वीकू याद करे ओम् ओम्
ओम् नमः उः उः स्वाम।

इस मंत्र का जप ग्रहण के दिन से प्रारंभ करना चाहिए। इस साधना में 108 मंत्र का जप नित्य किया जाता है। तथा प्रतिदिन पूजा में चमेली के फूलों का उपयोग किया जाता है, साथ ही सवा सेर हलवे का भोग भी प्रतिदिन लगाया जाता है। इन प्रकार चालीस दिनों में ही विरहाना पीर साधक के सम्पुर्ण हो जाएगा। यही वो सफल है, जब साधक को भयभीत नहीं होना चाहिए। अब साधक जो भी पीर बना से कहेगा, पीर तत्काल उसको पूरा करेगा। भोग स्वप्न में पीर विरहाना को पुर (गुलशुले) और बताशों या छील की सिन्नी भेट की जाती है।

मुहम्मदा पीर की सिद्धि

यह पीर यदि साधक पर मेहमान हो जाएं, तो उसे वो सब कुछ प्रदान करते हैं जिसकी कामना साधक करता है। ये चमत्कारी पीर अपने साधक को अपनी ओजाद

की भाँति चाहने लगते हैं। किन्तु ये साधक के अच्छे कर्म के साथी हैं। साधक के गलत और धिनौने कामों में यह कभी मदद नहीं देते।

पीर बाबा का सिद्धि मंत्र यह है—

विश्विल्ला रहमानउर्लीम पांय घूंखरा
कोट जंजीर जिस पर खेले मुहम्मदा पीर
सबा मन का तीर जिस पर खेलता
आवे मुहम्मदा पीर मार मार करता
आवे बांध-बांध करता आवे डाकिनी
को बांधे पलीत को बांधे नौ नरसिंह
को बांध बामन धेरों बांध जात का
मसान बांध गूगिया पीतिया पोतिया
कालिया मसान बांध बांध कुआं कबाड़ी
लावो सोती को लावो पीसती को
लावो पकाती को लावो जल्द जाओ
हजरत इमाम हुसैन की जांघ से
निकालकर लावो थीवी कातिमा के
दामनसु खोलकर लावो तो माता का
शूखा दूध कहे लावो शब्द सांचा
फुरो मंत्र ईश्वरो बाचा।

उपरोक्त मंत्र को नौचंदी जुमेरात की सांध्या से जपना चाहिए। प्रतिदिन 10 जप करने से मंत्र पढ़कर (आसन पर बैठने के पश्चात्, जिस प्रकार मुस्लिम लोग बैठकर ध्यान-मग्न होते हैं), लोबान की धूप देनी चाहिए।

इस प्रकार इकीस जुमेरातों (नौचंदी जुमेरात) तक उक्त मंत्र का नियमपूर्वक जप करने से मुहम्मदा पीर, जिन्हें 'मुहम्मद पीर' भी कहते हैं; उपस्थित हो जाते हैं। सभस्त प्रकार के रोग-निवारण और अशारीरी बलाओं का निपटारा मुहम्मदा पीर फौरन कर देते हैं।

वशीकरण मंत्र सिद्धि

बहुत-से नौकर, चोर या नुजरिय ऐसे होते हैं, जो किसी भी तरह से अपना अपराध कर्तृत नहीं करते। निष्प मंत्रों की सिद्धि द्वारा आप उनसे सब-कुछ उगलवा सकते

हैं। आपके द्वारा समीक्षित होकर वो सच बोलने को विवश हो जाएगे।

काला कतुआ काली रात
में जगावां आधी रात
सुन्ती को जगाके, डेठी को
उठाके, मेरे पास ले आणा
घले मंत्र फुरे देखां कतुआ
तेरे मंत्र का तमाशा।

उक्त मंत्र को एक सी बार नित्य प्रति इकहीस दिनों तक अर्द्ध रात्रि के सबव
जपना चाहिए। नहा-धोकर और साफ कपड़े पहनकर मंत्र-जप का कार्य करना चाहिए।
सिद्ध हो जाने पर इसका प्रयोग करना चाहिए।

इसी प्रकार का एक दूसरा मंत्र भी है, जिसको सिद्ध कर के प्रयोग करने पर
भी कोई भी व्यक्ति न कोई झूठ बोल सकता है और न ही कोई बात उिपाए रख
सकता है। मंत्र यह है—

विस्मिल्लाह रहमानर्दर्दीम रहीमा
रहम कर करीमा करम कर आली
को नरम कर दुश्मनों को जेर कर
मुश्किल बेरी आसान कर दिल
हमारा कबूतर हो रहा है बेरा
पड़ा यातीन का हमरा मतलब
हमको बिले सदका वजूदीन का।

यह मंत्र भी उपरोक्त मंत्र की भाँति सिद्ध किया जा सकता है।

प्रेत-निवारण मंत्र सिद्धि

यहां हम कितने ही प्रकार के मंत्र हैं रहे हैं, वो सभी भूत-प्रेत वाधाओं को सूर करने
में बेछ हैं। मंत्रों को सिद्ध करने की विधि भी सारल है। यह गिन है—

ओम् श्री अस्थापन ता में करु
जा में राम भलाई, गुनिया के
जो गुन कालों इसमें कोई नहीं
मनाही। दुहाई करवरु करवा
नवाना घोगिनी की।

इस मंत्र को सिद्ध करने के लिए, इसका जप दशहरे के दिन से प्रारंभ करना चाहिए। नित्य एक भाला जप करके इस दिन तक यह क्रिया करनी चाहिए। जपकाल में थी, गुणल और कपूर मिलाकर देते रहना चाहिए, तभी ये मंत्र सिद्ध हो पाता है।

जिस किसी को किसी ने जादू-टोना कर दिया हो, उसे अपने पास बिछाकर, शोर-यज्ञ से मंत्र को पढ़ते हुए, आड़ते रहना चाहिए। किसी भी ओझा या मौलवी द्वारा किये गए प्रयोग को यह क्रिया तुरंत समाप्त कर देती है।

हाड़ के दिया बाम की बाती
यरी पठाड़ों भूत की छाती
चम्पा फूले फूले कथनार
तेहि पर भूत करे सिंगार
तर के उखरी उसरी बान
येरे कुन बान, हमसे
सरबर के करे सेयान, खियां
पोखर तीन अस्थान, दुहाई
बाबा मसान की, गुन बान
बधकर बान, भेरा घरती उठे
बान, भेरा बान ले के भेरा
गुर के बान, लांडो, लांडो
दोनों जन, लोहे का सिक्कड़
बन्धर के किवाड़, तहाँ राखी
पिंडप्राणदुहाई कामरुकमता बरी।

जिस किसी को भूत-बाधा ने जकड़ रखा हो, उसे इस मंत्र से आड़ दिया जाए, तो तत्काल रोगी को आराम मिल जाता है।

चिसिम्लाह हररहमानररहीम
लाइल्लाह की कोठरी इलिल्लाह
की खाई, हगरत अली की चौकी
मौहम्मद रसुल्लाह की दुसई।

प्रतिदिन एक तो एक मंत्र का जप सुखोदय के पश्चात करें। सका मरींगे ये यह मंत्र सिद्ध हो जाता है। एक लोटा पानी को उक्त सिद्ध मंत्र से अधिभृत करके

जिस रोगी को पिलाया जाएगा, वो अशरीरी हवाओं के द्वारा तो दूट जाएगा।

ओम् नमो दीपमोहे दीप जागे
पवन चले पानी चले शाकिनी चले
डाकिनी चले भूत चले प्रेत चले
नौ सौ नियामदेव नदी चले
हनुमान वीर की शक्ति ये ही
भक्ति फुरो मंत्र ईश्वरो काढा।

किसी भी हनुमान मंदिर में शुद्ध सारसों के लेस का दीपक जलाकर उक्त मंत्र
का सवा लाख जप करें। इससे यह मंत्र सिद्ध हो जाएगा। मंत्र-जप के साथ मोर-ण्डु
के सात बार झाड़े से ही जो भी प्रेतग्रहन होंगा, मुक्त हो जाएगा।

काला	धैर्य	पीली	बटा
दिन	रात	खेते	घोषटा
काला	भस्म	मुताज	जेहि
मांगु	तेहि	पकड़ी	आन
डाकिनी	शाकिनी	पट्ट	सिद्धरी
जरस	चढ़ती	गोरख	पारी
छोड़ि	छोड़ि	पापिन	बालक
गुह	गोरखनाथ	परवाना	आदा।

पूर्व वर्णित विधि के अनुसार इस मंत्र को सिद्ध कर लें। भूत-प्रेत से पीड़ित
बालक को तीर या पतले नोंकीले चाकू से इक्कीस बार झाड़ दें तथा इक्कीस बार
जल को अभिमत्रित करके एकेक घृण्ट बालक को पिलाते रहें। वो सभी बायाओं,
बलाओं से मुक्त होकर, स्वस्थ हो जाएगा।

मंत्र संग्रह

कार्य-सिद्धि मंत्र

ओम् नमो यहाशावरी शक्ति गम
अरिष्ट निवाराय निवाराय गम
अमुक कार्य सिद्ध कुह कुरु स्वाहा।
यह एक प्रभावशाली मंत्र है। इस मंत्र से अमुक के स्थान पर अपने किन्तु ही

कार्य का उद्देश्य का उच्चारण करके मंत्र को पूर्ण कर लेना चाहिए।

प्रतिदिन एक माला (एक सौ आठ मनके की) जप इककीस दिनों तक प्राप्तःकाल इड मुहूर्त में या रात्रि में बारह दण्ड के आसपास करना चाहिए। यह सर्व सिद्धिदायक मंत्र है।

सर्व-संकट निवारक मंत्र

ओम् नमो आदेश गुरुन् को
ईश्वर वाचा, अजरी बजरी
बाड़ा बजरी में बजरी वाचा
दशी दुवार उचा, और के वालों
तो पलट हनुमंत दीर उसी को
मारे। पहली चौकी गनपती,
दूजी चौकी हनुमंत, तीजी चौकी
में भैरों चौधी चौकी देन रक्षा
करन को आव श्री नरसिंह देव जी
शब्द रांचा पिण्ड कांचा
फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

अथवा—

आगे दो लिङ्गभिली, धीछे दो नंद
रक्षा सीताराम की, रथवारे हनुमंत
हनुमान् हनुमंता, आवत मृढ़ करो,
बोगदण्ड। रांकर कीले बजर कीले,
ऐसे रोग हाथ से ढीले। येरी भवित
गुरु की जयित फुरो मंत्र ईश्वरो वाचा।

उपरोक्त दोनों मंत्रों को सिद्ध करने की विधि एक समान ही है। यह मंत्र साधक की होक प्रकार से रक्षा करते हैं, जाहे वो शारीरिक हो या मानसिक अथवा आर्थिक हो या आसुरी। इसके उच्चारण मात्र से ही ताप हो जाता है। इसी प्रकार यदि निम्न मंत्र भी सिद्ध कर लिया जाए, तो फिर इसका सात बार जप करते ही समस्त संकट, नीते—उपद्रव, वानु या हिंसक पशुओं का भय तक भी दूर हो जाते हैं। मात्र यह है—

अय अनुमान् बारह बरस को ज्वान
 हाथ में लड्डू मुख में पान
 हाँक भारत आप बाचा हनुमान्
 मेरी शक्ति गुरु की शक्ति
 फुरो मंत्र ईश्वरो बाचा ।

उपरोक्त मंत्रों को होली, दीपावली, अमावस्या, रविवार या मंगलवार की रात में, किसी एकांत स्थान में (घर के बाहर) शुद्ध लिपि-पुती जगह पर लोबान या गुणल की धूनी देकर और वही बेठकर मंत्र का जप करें। उन का आसन इसके लिए शैष है। मंत्र-जप की संख्या एक हजार एक सौ एक है। जप के समय धूपबली भी अवश्य ही सुलगती रहनी चाहिए। मंत्र-जप के पश्चात् इक्कीस बार हवन करने का भी विधान है। हवन-सामग्री में लोबान और गुणल का भी विधान है। साथ ही निम्न मंत्र को सिद्ध किये बिना, चाहे जो भी साधना की जाए, अचूरी रहती है और सफलता पौर देर से भिलती है। साधनाकाल में यदि निम्न मंत्र को इक्कीस बार पढ़ लिया जाए, तो सफलता अतिशीघ्र भिलती है। मंत्र यह है—

गुरु सठ गुरु सठ चीर, साहब
 सुधिरों चढ़ी भांत, खिंगी लोरों
 बन कहों, नन जाऊँ करतार।
 सकल गुरुन की हर मने, बद्दा पकर
 उठ जाना, चेत संभार ओपरम हंस ॥

तामसिक शमशान सिद्धि

तामसिक कृत्यों के लिए विशेष रूप-से यह साधना की जाती है। यह एक भवनक साधना है। मजबूत दिल वाले भी यदि साहस बटोर सकें, तो इस साधना की ओर अग्रसर होना चाहिए। इस साधना में शमशान को जगाया जाता है। भयानक होने वाला साधक तो शायद ही जीवित रह पाए। इस साधना के बारे में हमने भी नहीं कुछ सुना और पढ़ा है। इस पर भी साधना में सफल हो जाने वाला साधक, निर्दि की प्राप्ति पर, किसी भी तामसिक कार्य में निश्चित रूप-से सफलता अर्जित कर सकत है। फिर भी यह साधना घर-परिवार वाले लोगों और बाल-बच्चोदारों को कभी नहीं करनी चाहिए।

किसी भी माह की कृष्णपक्ष की त्रयोदशी से जपावस्था तक अर्द्ध-गति में शमशान

के बध्य में, पश्चिम दिशा की ओर घुंह करके बैठ जाएं। भगवान् शिव का स्मरण कर, तोहे के चिमटे से अपने चारों ओर एक धेरा-सा खींचकर, सुरक्षा-चक्र अवश्य बना सें, ताकि इमशान की आसुरी-शक्तियाँ सुरक्षा-चक्र के अंदर प्रवेश करके आपका अद्वित न कर पाएं। तत्पश्चात् निम्न मंत्र का उच्चारण करें। इस मंत्र के उच्चारण मात्र से इमशान जागृत हो जाएगा।

क्रीं क्रीं कालिके भूतनाथाय
रोद्ध रूपाये भूत प्रेत पित्राय
जाग्रय श्वशान उत्पापय
क्रीं क्रीं कालिके फट्।

अब किसी भी शुक्रवार के दिन आधी रात में स्नान कर, दक्षिण दिशा की ओर घुंह करके बैठें। शरीर पर कोरे सफेद ऊपड़े पहनें, तथा अपने घारों ओर दीपक जलाकर रखें और निम्न रूप-से ध्यान करें—

नमः श्री कर्त्तर्वीर्याय कीर्तिर्तोषं
शिखामनु हैवाधिपतिर्हन्तः करवयस्य
मनुमतः सहस्र बाह्ये तु स्यादेवम्
पंचाय भीरितम् उद्द बाणांश्चा—
पानि दधतम् सूर्य सन्निभम् प्रपूर—
यन्तं ब्रह्मणां धनुज्यानिः स्वनैस्तथा
कार्त्तर्वीर्यनृपं ध्यायेद्दशोभितकुंडम्

ध्यान के पश्चात् निम्न मंत्र का जप शारंभ करें। किसी भी माला से इसका एक मंत्र-जप किया जा सकता है।

प्रों क्रीं ओम् एं है
स्व भूं हीं लिं फट्।

इसे इमशान जागरण सिखित कहा जाता है। जब भी कोई प्रयोग करना हो, तो यहाँ से इमशान में जाकर इमशान को जागृत कर लेना चाहिए। फिर आसुरी शक्तियों से ज्ञान लेकर, उन्हें मास और यदिरा का भोग देना चाहिए। भोग का सामान पहले ने उपलब्ध रहना चाहिए, वरना जैसी ही आसुरी शक्तियाँ आपका वज्र करके लौटेंगी, उस बजाए आपने उन्हें भोग देने में देरी की, तो फिर उनके हमले से आपको छोट नहीं बचा सकता।

नेत्र ज्योति की पाठ सिद्धि

किसी भी रोग के कारण दृष्टि चली गई हो अथवा पैदाइश के बाद जिसकी दृष्टि किसी भी आयु में क्षीण हो गई हो, तो इस पाठ की सिद्धि प्राप्त कर, प्रयोग करने से भगवान् सूर्यदेव की कृपा से फिर से दृष्टि प्राप्त हो जाती है।

प्राप्तः शौचादि से निवृत्त होकर स्नान-संध्या वंदन के पश्चात् पूजा स्थल पर बैठे और आचमन, प्राणायाम करने के बाद नेत्र ज्योति प्राप्त करने के लिए पाठ की सिद्धि के जप का संकल्प करें। फिर गंध-पुष्पादि से भगवान् सूर्यदेव का पूजन करें। पूजा द्वच के अभाव में मानसरोवर से पूजन करें। इस प्रक्रिया के बाद एक कांस्य घातु की याली या अन्य किसी चौड़े मुख याले कांस्य-पात्र में शुद्ध जल परकर उसे ऐसे स्थान पर रहे, जिससे उस पत्र के जल में सूर्य भगवान् का प्रतिबिंब दीखता रहे।

नेत्ररोगी साधक को उस पात्र के समने पूर्वाभिमुख बैठकर भावनायुक्त अर्थानुसंधान के साथ 108 बार पाठ करना चाहिए।

यदि नित्य इतने पाठ के लिए समय न मिले, तो प्रतिदिन भले ही दस बार पाठ किया जाए, किन्तु रविवार के दिन 28 या 128 बार पाठ करने का प्रयत्न अवश्य करना चाहिए, बल्कि करना ही चाहिए।

यदि प्रारंभ में साधक सूर्य-प्रतिबिंब की ओर देखना सहन न कर सके, तो शुद्ध यी के दीपक पर दृष्टि जपाकर पाठ कर सकते हैं। नेत्रों के सक्षम होने पर जह में गायत्री चतुर्दशी, श्रीसूर्यनारायणों देवता। पाठ पूर्ण होने पर प्रतिबिंधित सूर्य-बिंब की ओर देखते हुए ही पाठ करना चाहिए। पाठ पूर्ण होने पर श्रीसूर्यदेव को नमस्कार करें। फिर उस कांस्य पात्र स्थित शुद्ध जल से अधसूते नेत्र में धीरे-धीरे डिडकाव करें। इसके बाद दोनों आंखें पांच मिनट तक बंद रखें और सर्व विधियां पूर्ण कर लेने पर अपने दैनिक दिनचर्या के कार्यों में लग जाएं।

विनियोग—

अस्याशच्छुभती विद्याया ब्रह्मा ऋषिः ।

गायत्रीचतुर्दशी, श्रीसूर्यनारायणो देवता ।

ओम् बीजम् । नमः शक्तिः स्वाहा—

कीलकम् । चक्षुरोगनिवृत्ये जपे विनियोगः ।

पाठ—

ओम् चक्षुरोगनिवृत्ये तेजः शिवरो भव ।
मां पाहि पाहि । ल्वरितं चक्षुरोगान्
प्रशापय प्रशापय । मम जातस्य तेजो दर्शय,
यशाहमन्यो न स्यां तस्या कल्पय कल्पय,
कृपया कल्पयाम कुरु कुरु । मम यानि चानि
पूर्वजन्मोपार्जितानि चक्षुः प्रतिरोधक-

दुष्कृतानि तानि सर्वाणि निर्मूलय
 निर्मूलय । ओम् नपश्चक्षुस्तेजोदात्रे
 द्वियभास्कराय । ओम् नमः करुणा
 करायामृताय । ओम् नमो भगवते श्री
 सूर्यायादिक्षितेजसे नमः । ओम् खेचराय
 नमः ओम् महासेनाय नमः । ओम् तमसे
 नमः । ओम् रजसे नमः । ओम् सत्त्वाय
 नमः । ओम् असतो पा सद्गमय । ओम्
 तमसो मा ज्ञात्वा नमः । ओम् मृत्योर्मा
 अमृतं गमय । उच्छ्रो भगवांडिविरूपः । हंसो
 भगवांषुचिरप्रतिरूपः ।

ओम् विश्वरूपं धृणिनं जातवेदसं
 हिएव्यं ज्योतिरपन्ता पन्तम् ।
 सहस्रं रश्मि शतधा वर्तमानः
 पुरः प्रजानामुदपत्येष सूर्य ॥

ओम् नमो भगवते श्रीसूर्यायादित्यायाऽक्षितेजसेऽहो बाहेनि-
 वाहिनि स्वाहा ।

ओम् वयः सुषर्णा उपसेदुरिन्द्रं
 श्रियमेधा ऋथयो नाधमानाः ।
 अप व्यांतमृजुहि पूर्णि-
 चक्षुमुमुक्ष्मान्निपयेष चदान् ॥
 ओम् पुण्डरीकाक्षाय नमः
 ओम् पुष्ट्रेक्षणाय नमः ।
 ओम् कमलेक्षणाय नमः ।
 ओम् विश्वरूपाय नमः ।
 ओम् महाविष्णवे नमः ।
 ओम् सूर्यनारायणाय नमः ।
 ओम् शाति: शाति: शाति :

पाठ के उपरांत नित्य, 'ओम् वर्षोदा असि वर्षो मे देहि स्वाहा !' इस मंत्र का जप
 करते हुए गोधूल की दस आहुतियाँ अग्नि में देनी चाहिए । रविदार के दिन बीस आहुतियाँ
 अनिश्चाय हैं । यदि आहुति न दे सकें, तो कोई आपत्ति नहीं; किन्तु यदि पाठ के साथ नित्य
 आहुतियाँ भी दी जा सकें, तो सिद्धि का फल शीघ्र प्राप्त होता है ।

निधिदर्शन सिद्धि

निधिदर्शन का अर्थ है, छिपे या गढ़े हुए धन को देखना। कौतुक चितामणि में वर्णित है कि जहाँ की मिट्टी में गंध आती है, वहाँ निधि (धन, सजाना) होती है। इसी प्रकार जहाँ बाज़, कब्ज़ा, बगुला आदि पक्षी सदैव बैठते हैं, वहाँ भी निधि अवश्य होती है। जिस पेड़ पर बगुले मुख्यतः बैठे ही रहें, उसके नीचे या आसपास भी धन गड़ा हुआ मानना चाहिए।

जिस स्थान पर अक्सर कब्जे आकर मैथुन-किया करे, वहाँ भी निधि होती है, तथा जो पेड़ कभी सिंहों से लाली (जिस पर कोई-न-कोई शेर आकर अवश्य ही बैठे) न रहे, वहाँ की भूमि में निधि होनी चाहिए।

जिस जंगल, बग्ग-बगीचे में अनगिनत वृक्ष हों, उन वृक्षों में जिस पर सदसे अधिक पक्षी आकर बैठते हों, उसके नीचे भी निधि होती है। एक शिखा वाले वृक्ष में यदि दो शिखा दिखाई दें, तो उसके नीचे भी निश्चित रूप से धन होता है। इसु के बिपरीत फल वाले वृक्ष जहाँ दिखलाई पड़ें, उस के नीचे भी धन है, ऐसा मानना चाहिए।

जिस बरगद के वृक्ष में हाथी के सूट के समान चतोह-सा दिखाई पड़े, तथा उस पर आधात करने पर लाल रंग साव-सा निकले, वहाँ भी धन गड़ा हुआ है, ऐसा समझना चाहिए; तथा जिस बरगद में बांडों तथा मल्य के आकार की ताढ़ी दिखाई दें, वहाँ भी धन होता है। जिन वृक्षों पर घड़ना संभव न हो, किन्तु घड़ने समय उस पर मार्ग बनता जाए, उसके नीचे या पास में ही धन होता है।

जो भूमि जल-संपर्क से रखी हो और दिन भर तपती धूप के बाद भी उसमें नमी दिखाई दें, तथा उसके आसपास ही सर्प-स्थान होने का पता चल जाए, तो वहाँ भी सजाना गड़ा होना चाहिए। ऐसी भूमि में एक पड़े को गोमूत्र से घरकर गाइ दें। एक सद्वाह बाद उसे खोदकर निकालें। यदि बड़ा जीर्ण-अवस्था में निकले, तो वह धन अवश्य ही होगा। बहरहात भूमि के अंदर के धन को सदैव पूजा और अर्चना के साथ ही प्राप्त करने का प्रयास करना चाहिए। ऐसा धन स्वयं अपनी आँखों ते देखने के लिए सिद्धि और साधना का विधान भी है। इस साधना के द्वारा भूमि के अंदर गड़े धन को साफ देखा जा सकता है।

सबसे पहले चिन्म मंड को सबा लाड की संख्या में जफकर लिह बाले लेना चाहिए।

ओम् नमो भगवते रुद्राय कल्पते
 पांजन दर्शन दर्शन उः उः ।
 उपरोक्त मंत्र के पश्चात् प्रायंत्रा करने का विधान है।
 ओम् विश्वस्य विश्वपात् विश्वामीर
 महेश्वरम् जपामह महावेद
 सर्व सिद्धि प्रदापकम् ।

उपरोक्त मंत्र से भगवान् शिव की पूजा करनी चाहिए। फिर अधोर मंत्र का
 आठ हजार की संख्या में जप करना चाहिए। अधोर मंत्र यह है—

ओम् रुद्राय नमो रुद्ररुपाय नमो
 बहुरुपाय नमो विश्वाम् नमो
 विश्वरुपाय नमो नमस्तत्पुरुषाय
 नमो वशाय नमः एक नायाय
 नमः एक रोमाय नमः एक सायाय
 नमः नमो वरलाय नमस्तकाय
 नमो तुइ तुइ स्वाहा ।

जब एक विशेष प्रकार का अंजन लैयार करना होता है, जिसे आँखों में लगाने
 से ही भूमि में गड़ा हुआ धन दिखाई दे जाता है। इस अंजन को पारने के लिए मानव
 कल्प का प्रयोग किया जाता है। दीपक भी बच्चे के कपाल का बनाया जाता है,
 तथा उसमें शुद्ध सरसों का तेल जलाया जाता है। दीपक को जलाने के लिए चिता
 की अग्नि का प्रयोग किया जाता है। चिता की अग्नि लेते समय निम्न मंत्र का जप
 करना पड़ता है—

ओम् ज्वलित विशुति देहाय स्वाहा ।

अग्नि लेने के बाद दीपक जलाया जाता है और दीपक बुझे नहीं, इसके लिए
 भी निम्न मंत्र का जप करना चाहिए—

ओम् नमो भगवते वासुदेवाय पर घर
 चंद्र चंद्र भी पते कुल पर्वते वसुपते स्वाहा ।
 लौट की बत्ती बमाने के लिए भी इस मंत्र का जप करना चाहिए—

ओम् नमो भगवते सिद्ध शाश्रय
 ज्वल ज्वल चतुर्य पात्र चंद्र चंद्र
 संहर संहर दर्शन दर्शन निष्ठि नमः स्वाहा ।

अंजन (काजल) प्राप्त करने (पारने) के लिए निम्न मंत्र का जप करना चाहें

है—

ओम् सर्वं तिदिभ्यो नमः विच्छे स्वाहा ।

अंजन प्राप्त करने के पश्चात्, उसको प्रयोग करने से पूर्ण निम्न मंत्र से अभिमन्त्रित भी अवश्य ही कर लेना चाहिए। मंत्र यह है—

ओम् कालि कालि महाकालि रक्ष-

रक्ष अंजन नमो विच्छे स्वाहा ।

इस मंत्र से अंजन को अभिमन्त्रित करने के बाद सोने की बारीक सलाई से अंजन को दोनों आँखों में लगाएं। ध्यान रहे, अंजन का प्रयोग करने वाले को पूर्ण रूप-से खस्य, तबल और नीरोग होना चाहिए। उस समय उसे अल्पहारी भी होना चाहिए। अंजन लगाने के बाद, पीपल-बृक्ष के सात पत्तों को अदोमुखी कर, आँखों पर रखकर रेशम के कपड़े से बांधने चाहिए। इसके बाद जहां भी धन गड़ा होने की संभावना है, वहां जाकर उस तरफ को देखने पर धन स्पष्ट रूप-से दिखाई देने लगेगा।

□□

नोट— किसी भी साधना के समय होने वाली किसी भी दुर्घटना अथवा तिद्धि-ग्राहण में सफलता या असफलता के लिए हम (लेखक, प्रकाशक और मुद्रक) जिम्मेदार नहीं होंगे। प्रत्येक तिद्धि व साधना को गंभीरता पूर्वक व सोध-समझकर, अद्यता इस विषय के किसी प्रकांड विद्वान् से परामर्श करके ही आरंभ करें। पुस्तक से संबंधित किसी भी बात के लिए हमसे पत्र-व्यवहार कदाचित् न करें।

धन्यवाद ।



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server



COLLECTION OF VARIOUS

- > HINDUISM SCRIPTURES
- > HINDU COMICS
- > AYURVEDA
- > MAGZINES

FIND ALL AT [HTTPS://DSC.GG/DHARMA](https://dsc.gg/dharma)

Made with
By

Avinash/Shashi

Icreator of
hinduism
server

इच्छा पूरक सिद्धियाँ

कुछ सिद्धियाँ ऐसी हैं, जिनके बल पर मिलजन हवा में उठ सकते हैं, जल की सतह पर खड़े होकर चल सकते हैं, अंगारे पर लेट सकते हैं, आग खा सकते हैं तथा महीनों बिना कुछ खाए-पिए जीवित रह सकते हैं।

प्रस्तुत पुस्तक में हमने प्रारंभ से अंत तक सिद्धियों का ही वर्णन किया है। अपनी इच्छानुसार सिद्धि का चुनाव करके आप भी साधनारत हो जाओ।

